अनुपम व्यक्तित्व

मुहम्मद रसूलुल्लाह

(सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

उस्मान नूरी ताबपाश

इस्तांबुल-2020

अनुपम व्यक्तित्व
मुहम्मद रसूलुल्लाह

(सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

उस्मान नूरी ताबपाश

मूल शीर्षक: Emsalsiz Örnek Şahsiyet
Hz. Muhammed Mustafa (s.a.v.)

लेखक: Osman Nûri Topbaş

अनुवादक: मुफ़्ती नेक मुहम्मद जोधपुरी

संयोजक: मुफ़्ती मुहम्मद अनवार खान क़ासमी

संपादक: आदिल हमीद

डिज़ाइन: रासिम शाकिर ओगलू

ISBN: 978-9944-83-469-8

पता: Ikitelli Organize Sanayi Bölgesi Mah.
Atatürk Bulvarı, Haseyad
1. Kısım No: 60/3-C
Başakşehir, Istanbul, Turquie

टेलीफोन: (+90-212) 671-0700 pbx

फैक्स: (+90-212) 671-0748

ईमेल: info@islamicpublishing.org

वेबसाइट: www.islamicpublishing.org

प्रिंट स्थान: Erkam Printhouse

Language: Hindi

अनुपम व्यक्तित्व
मुहम्मद रसूलुल्लाह

(सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

लेखक

उस्मान नूरी ताबपाश

وَمَا اَرْسَلْنَاكَ اِلَّا رَحْمَةً لِلْعَالَمِينَ

"निःसंदेह हमने आप को समूचे संसार के लिए दया बना कर भेजा है।" (अल-अंबिया- 107)

يَا اَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّا اَرْسَلْنَاكَ شَاهِداً وَمُبَشِّراً وَنَذِيراً
وَدَاعِياً اِلَى اللهِ بِاِذْنِهِ وَسِرَاجاً مُنِيراً

"ऐ नबी, हमने आप को गवाही देने वाला, डराने वाला, खुशखबरी सुनाने वाला बना कर और धर्म उपदेशक बना कर भेजा है।" (अल अहज़ाब, 45-46)

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِمَنْ كَانَ
يَرْجُوا اللهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَذَكَرَ اللهَ كَثِيراً

"तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह में बेहतरीन नमूना है, जो अल्लाह और आख़िरत में विश्वास रखे और अल्लाह को खूब याद रखे।" (अल अहज़ाब, 21)

وَاِنَّ لَكَ لَاَجْراً غَيْرَ مَمْنُونٍ وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيمٍ

"निःसंदेह आप के अपने रब के पास बड़ा बदला है। आप नैतिकता के बहुत ऊंचे स्तर पर है।"
(अल क़लम,3-4)

يَا اَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوا اَطِيعُوا اللّٰهَ
وَاَطِيعُوا الرَّسُولَ وَلَا تُبْطِلُوا اَعْمَالَكُمْ

"ऐ ईमान वालो, अल्लाह और उसके रसूल की बात मानो। और अपने कर्मों की व्यर्थ मत करो।"

(मुहम्मद, 33)

وَمَنْ يُطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُولَ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِينَ
اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّنَ وَالصِّدِّيقِينَ وَالشُّهَدَٓاءِ
وَالصَّالِحِينَ وَحَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيقاً

"जो अल्लाह और उसके रसूल की बात मानेगा, तो यही वे लोग हैं, जिन पर अल्लाह उपकार करेगा। नबियों, शहीदों और नेक बंदों में से। और यह बेहतरीन साथी हैं।"

(अन निसा – 69)

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا
اَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيماً

"अल्लाह और उसके फरिश्ते रसूलुल्लाह पर दुरूद भेजते हैं। ऐ ईमान वालो, तुम भी रसूलुल्लाह पर खूब दुरूद और सलाम भेजे।" (अल-अहज़ाब - 56)

महानतम अल्लाह ने सच कहा।

लेखक के बारे में

उस्मान नूरी ताबपाश का जन्म 1942 ई. में इस्तांबुल में हुआ । इमाम ए खतीब के स्कूल की पढ़ाई समाप्त करने के बाद अपने समय के प्रसिद्ध विद्वानों के यहां धार्मिक शिक्षा प्राप्त की। लेकिन उन के व्यक्तित्व के बनने में प्रमुख भूमिका मूसा तापबाश की है जिन्हें उनके उच्च नैतिक गुण और धर्म के गहरे ज्ञान के कारण हज़ारों मुसलमानों के बीच आध्यात्मिक गुरू का दर्जा प्राप्त था। उस्मान नूरी तापबाश इसी प्रसिद्ध व्यक्ति की सरपरस्ती में बड़े हुए और अपने पिता के देहांत के बाद उन के रास्ते को जारी रखा। उस्मान नूरी तापबाश ने पहली पुस्तक के प्रकाशित होने के बाद अपनी गतिविधियों को गंभीरता से आगे बढ़ाने का काम किया।

उन की किताबों का विश्व की विभिन्न भाषाओं में अनुवाद किया गया है. उन की हर एक किताब जानकारी का बेहतरीन स्रोत है। उन की रचनाएँ बहुत प्रसिद्ध और मान्यता प्राप्त हैं, जैसे इस्लाम विश्वास आराधना, इमाम से इसखान तक - तसव्वुफ, ,वाकूफ सेवाई परोपकारिता, ,अंतिम साँस, ,खुशी के आंसू, ,पैगंबर मुहम्मद मुस्तफा, जलघड़ा, प्यार का रहस्य, भविष्यद्वक्ताओं के इतिहास की पाँच मात्राएँ और आदि। इन असाधारण किताबें ,असार-सादात, के भावना और वातावरण (समरृद्धि के युग में) से भरी होती है,

जहाँ समय और स्थान छोड़ने के साथ लेखक ले जाता और वहाँ से अपनी कथा वर्णन करता है वह स्वयं ही अल्लाह के पैगंबर (सल्ल), उन के साथियों को देखते (रज़िअल्लाहू अनहुम) और इसी युग के घटनाओं का प्रस्तुत करते हैं।

प्रस्तावना

सारी प्रशंसाएं अल्लाह ही के लिये हैं, जिसने हमारे साथ अच्छा व्यवहार किया, उपकार किया तथा हमें यह गौरव प्रदान किया कि हम को अपने नबी की उम्मत बनाया और हमारी ओर सब नबियों और रसूलों के सिरमौर और अपने चहेते को नबी बनाकर भेजा।

दुरूद और सलाम हो आदरणीय पैगंबर पर जो मानवता (इंसानियत) की खुशी की राह पर का सूर्यों का सूर्य, वास्तविकता एंव हिदायत का प्रकाश हैं।

जिस ने आकाश से पैगम्बर को उस समय उतारा , जब मानवता गहरे संकट में थी। एक ऐसे युग में, जब दुनिया उत्पीड़न और अन्याय के अंधेरे में लिप्त हो गयी थी, तब पैगंबर को प्रकाश के एक किरण के रूप में भेज कर उपकार किया।

अल्लाह तआला ने मुहम्मद (स. अ. व.) को सर्वोच्च सितारों के रूप में भेजा, जो उच्च आसमानों पर चमकते हैं। और उसको ऐसी रोशनी बनाया है, तो सितारों, सूर्यों आदि पर पड़ती है। जिन्होंने दुनिया पर अंधेरे की चादर डाल रखी थी। और जहां का समाज वीराने, गुनाहों और अचेतना में भटक रही किसी ऊंटनी की तरह था। अल्लाह ताला ने इस पूरी दुनिया और समाज की एक एक चीज पर असीम कृपा और अटूट उपकार फरमाए। सजीवों, निर्जीवों, पत्थरों, पेड़ों, नदी और समुद्रों, ज़मीन आसमानों, काल और पाताल हर वस्तु

पर, विशेषकर मनुष्य पर। अतः वो कृपा, वृद्धि, दया और छुटकारे का स्रोत है।

आप कृपा है, क्योंकि पूरे संसार और उसकी एक एक चीज आपके सम्मान और आदर में पैदा की गई है। जितनी रसूल से मोहब्बत होगी अल्लाह की नजर में उसका स्थान उतना ही ऊंचा होगा।

आप स्नेह है, क्योंकि आपका प्यार और दया पूरी मानवता और पूरी कायनात को शामिल है।

आप दया है क्योंकि अल्लाह तआला ने आपको बुद्धि और हृदयों के लिए जीवन और जागृति बनाकर तथा भाग्य और समृद्धि का मूलस्रोत बनाकर दुनिया में भेजा।

आप रहमत है क्योंकि अल्लाह तआला ने आपको हर भलाई के मूल स्रोत पवित्र कुरान के साथ विशेष किया।

आप रहमत हैं क्योंकि आप सब रसूलों में अल्लाह के सबसे प्यारे और पूरी कायनात में सबसे प्रिय हैं। आपको ही अल्लाह ने मेराज की यात्रा से सम्मान प्रदान किया।

आप दया है क्योंकि यदि आप ना होते तो हर प्रकार के साधन और स्रोत बंजर और शुष्क रेगिस्तान में परिवर्तित हो जाते।

आप रहमत हैं क्योंकि पूरी कायनात को आपके नूर से बनाया गया है।

आप रहमत है क्योंकि हर प्रकार की सुंदरता आपका प्रभाव और परछाई है तथा हर प्रकार की सुंदरता आपके जीवन के लिए ही बनाई गई है।

हर फूल जो आपके प्रकाश से वंचित कर दिया गया वह खिला ही नहीं। तथा यदि आप ना होते तो इस पूरे संसार का वजूद ना होता। अतः आप संपूर्ण रोशनी का एक ऐसा खुदाई चराग है जो मधम नहीं होता, बल्कि दिन दिन उसके प्रकाश में वृद्धि ही होती रहती है।

आप रहमत हैं क्योंकि अल्लाह तआला ने स्वयं आप पर दुरुद भेज कर आपके जिक्र को सदाबहार कर दिया है।

इसी प्रकार सभी संसार जो आपकी नबवी दया की छत के अधीन है, सब ने अपने हृदय का संतोष, शांति और सुकून प्राप्त किया है। तथा मानवता जिसका अज्ञानता की दहलीज पर गुनाहों के धुएं से दम घुट रहा था, पुनः शिक्षा, ज्ञान और बुद्धिमता के उन दरवाजों से जीवन के संकेत और इशारे देने लगी है, जिनको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने खोला था। और वह एक बार फिर लंबे चौड़े आसमान की ओर बाहें फैलाने लगी है।

लोगों के दिल सख्त पत्थर बन चुके थे। आपके पवित्र हाथों में वह एक नरम मिट्टी बन गये। और दिल कुफ्र और अंधेरे की गंदगी से मेले हो चुके थे, आपने अपने साफ-सुथरे पानी के चश्मे से उनको साफ किया और धो दिया फिर उनमें अंधेरे की जगह रोशनी ने ले ली।

वहशी हब्शी इस्लाम लाने से पहले बहुत क्रूर और सख्त स्वभाव के आदमी थे, जो लोगों को कत्ल करते थे। परंतु जब उन्होंने अपनी बागडोर रसूलुल्लाह के हवाले कर दी और आपकी देखरेख में आ गये तो सहाबी बन गए जो खूब रोने वाले और शर्मिंदा होने वाले थे और आप जैसे कितने ही हैं।

उनकी आत्माएं शैतान के खूनी पंजे के अंदर जकड़ी हुई थीं। किंतु जब उन्होंने रसूलुल्लाह के चश्मे से पानी पीने के बाद निरंतर और स्थिर जीवन का स्वाद चखा, तो उनको प्रतिष्ठा, सम्मान और

अभिमान मिला और अब उनके नाम सदैव रसूलुल्लाह द्वारा दी गयी उपाधि के साथ अमर हो गए।

इससे स्पष्ट है कि क्या आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला का सबसे बड़ा करिश्मा हैं। उस से अल्लाह ने हमें गौरवान्वित किया। आप भीतर और बाहर हर क्षेत्र के लिए करिश्मा है। आप संपन्न भी हैं और संपन्न करने वाले भी हैं, इज्जत वाले भी हैं और सम्मान देने वाले भी हैं, आप मोहब्बत भी करते हैं और आपसे भी मोहब्बत की जाती है।

और चूंकि आप अल्लाह तआला की तरफ से दया स्नेह रहमत और प्रेम का एक नमूना है यही कारण है कि समस्त बुजुर्ग सहाबी वली, क़ुतुब, योद्धा, शिक्षाविद और पूर्वज आप ही की परछाई का प्रभाव हैं। जैसे चांद जिसकी रोशनी सूरज से ली गई है।

अतः साबित हुआ कि अल्लाह तआला की आज्ञा और उसकी फरमा बरदारी का रास्ता आप की मोहब्बत और आप के प्रति श्रद्धा से ही होकर गुजरता है। और इस बात की हक़ीक़त का निम्नलिखित आयात में स्वयं अल्लाह तआला उल्लेख करते हैः

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُونِى يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ
وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَاللّٰهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ

आप कहिए [ऐ मुहम्मद], **"यदि आप अल्लाह से प्यार करते हो, तो मेरी पैरवी करो, अल्लाह आपसे प्यार करेगा और आपके पापों को माफ़ करेगा। और अल्लाह क्षमा करने वाला और दयालु है।"** (आलि इमरान – 31)

مَنْ يُطِعِ الرَّسُولَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ وَمَنْ تَوَلّٰى
فَمَآ اَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا

"जिस ने रसूल की बात मानी उसने वास्तव में अल्लाह के आदेश का पालन किया। और जो मुँह मोड़ गया, तो बहरहाल हम ने तुम्हे उन पर चौकीदार बनाकर नहीं भेजा है।" (अन निसा-80)

जैसा ऊपर की आयतें बयान करती हैं, अल्लाह से प्यार करने का मापदंड केवल रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वा सल्लम) का अनुसरण करना है, पतंगे की तरह उस की सुन्नत की शमा के इरद-गिर्द चक्कर लगाना है। इसके विपरीत करने वाला ऐसे ईमान वाला नहीं समझा जाएगा। अतः अल्लाह से प्यार करने का मापदंड केवल रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वा सल्लम) का अनुसरण करना है। यह ऐसी हकीकत है जिस से ईमान वाला कभी गफलत नहीं बरत सकता। इसीलिए जीवन की सभी परस्थितियों में हमारा अनुसरण अल्लाह के पैगंबर से महसुस होना चाहिए और हमारे व्यक्तित्व की प्रगति पर केवल आप का व्यक्तित्व बुनियाद का मुख्य नमूना होना चाहिए। इस के लिए ज़रूरी है कि हमारी सब से बड़ी आवश्यकता यही होनी चाहिए कि हम आप के व्यक्तित्व को जानें, उसको निकटता से समझें। आप की सांसें हमारी सांस और आप की धड़कन हमारे दिल बन जाएं। फिर हम सहाबा की तरह हो जायें, जिन्होंने नबी से इश्क़ किया और आप की मुहब्बत में अपने कलेजे को जलाए रखा।

यह अलग बात है कि हम निःशक्त लोग आप के उच्च मापदंड और स्तर तक नहीं पहुंच सकते। किंतु आप का केवल अनुसरण करना ही क्या कम है। कितना भाग्यशाली अनुभव होगा, यदि हम

अपने आप के बेमिसाल व्यक्तित्व को थोड़ा बहुत भी अपना लें, जो मंजिल तक कामयाबी से पहुंचने की कुंजी है।

यही विचार, था जिस ने हम को इस किताब की रचना करने के लिए तैयार किया। जो आलेख आप के सामने प्रस्तुत करते है, इसका उद्देशय आप को पैगंबर - सल्लल्लाहु अलैहि वा सल्लम के व्यक्तित्व का परिचय करवाना है। अतः पैगंबर के व्यक्तित्व के बारे में जो कुछ पहली किताबों में हम ने लिखा, यहां हम ने उसका खुलासा प्रस्तुत किया है। इस विषय में हम जितना भी कहें, कम है कि हम अपने परवरदिगार का धन्यवाद करें उस के उपकार (रसूलुल्लाह की नेअमत) पर, चाहे उस की बात करके करें या उसके पैगाम एवं सुन्नत के अनुसरण करके हो।

मुख्य जिम्मेदारी यह है कि अपनी हिम्मत भर अल्लाह की कुदरत से सब को परिचित करवाया जाए और एक मज़बुत पुल उसकी जिंदगी और आज के शर्मनाक दौर के बीच हो और उस के शानदार व्यक्तित्व के बारे में सब को पूरी तरह जानकारी दें। सब इन्सानियत (मानवता) आप को बेहतरीन रूप में और बेहतरीन तरीके से जान ले।

ऐ अल्लाह, हमें इस बेहतरीन व्यक्ति का साथ नसीब फरमा और हमारे सीनों में अपने नबी का इश्क और मुहब्बत को हमेशा के लिए जारी फरमा।

ऐ अल्लाह हमें तौफीक अता फरमा और हम को उन लोगों के साथ रख जिन्होंने ने तेरा आशिर्वाद और मुहब्बत प्राप्त की है।आमीन।[1]

1. हम अल्लाह तआला की कृपा मांगते हैं, अपने शिष्यों के लिए और उन लोगों के लिए जिन्होंने इस किताब की रचना में कुछ न कुछ सहयोग किया है। अल्लाह तआला उन्हें इसका बेहतरीन बदला दे।

पहला भाग

- अद्भुत व्यक्तित्व
- आदर्श जीवनशैली - उत्तम व्यक्तित्व

अद्भुत व्यक्तित्व

अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह के रूप में इंसानों को एक अत्यंत महंगा तोहफा और भेंट प्रदान किया है। क्योंकि आप का दर्जा और श्रेणी अल्लाह के नजदीक बहुत ऊंची है। अल्लाह से मोहब्बत तभी मानी जाएगी जब इंसान अल्लाह के रसूल की पैरवी करें। इसी ओर निम्न आयतें इशारा करती है:

"हम ने आप को पूरी संसार के लिए रहमत बना कर भेजा है।" (अल-अंबिया, 107)

पैगम्बर अपने साथियों को इसी अर्थ के साथ पुकारते थे:

"ऐ लोगो, मैं सही रास्ता बताया गया दया का प्रतीक हूँ।" (दारमी, मुक़द्दमा - 3)

"जो रसूल की बात मानेगा, वह अल्लाह को मानने वाला है।" (निसा- 80)

"जो आप से बैअत कर रहे हैं, वे वास्तव में अल्लाह से बैअत कर रहे हैं।" (अल-फतह- 10)

"ए नबी आप इनको कह दो कि यदि आप अल्लाह से मुहब्बत करते हो तो मेरी पैरवी करो अल्लाह तुम से मुहब्बत करेगा। और तुम्हारे गुनाह माफ़ करेगा। अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला मेहरबान है।" (आलि इमरान - 30)

अल्लाह और रसूल ने अपने से किसी भी मामले में आगे बढ़ने से मना किया। फ़रमाया कि:

"ऐ ईमान वालों अल्लाह और उसके रसूल से आगे मत बढ़ो । और अल्लाह से डरो। अल्लाह बहुत सुनने वाला जानने वाला है।" (हुजुरात - 1)

क़ुरान की यह आयत क़ुरान और सुन्नत के दायरे में ज़िन्दगी गुज़ारने का ऐसा ढंग बताती हैं, जिसमें न सीमा का उलंघन है, न कर्तव्य में कमी। और उसके लिए आवश्यक है कि हम अल्लाह और उसके रसूल के बताए हुवे आदेशों और निर्देशों का पालन करें और उनसे न निकलें। आप ने सहाबा की क़ुरान और हदीस के अनुरूप बेहतरीन तरबियत की। अतः सहाबा बात मालूम होते हुवे भी कहते कि **अल्लाह और उसके रसूल ही अधिक जानते हैं।** यही कारण है कि वे चरित्र और नैतिकता के शिखर पर पहुंचे।

अल्लाह तआला ने मोमिनों को फरमाया था कि रसूल से किसी भी मामले में आगे मत बढ़ना और और उनकी मौजूदगी में आवाज़ बि बुलंद न करना। अगर ऐसा हुवा था तो तुम्हारे आमाल व्यर्थ हो जाएंगे। अल्लाह तआला फरमाते हैं:

"ऐ ईमान वालो! नबी की आवाज़ से अपनी आवाज़ बुलंद मत करो। और उन से किसी भी वक़्त बुलंद आवाज़ से बात मत करो। जैसे तुम आपस में करते हो। आशंका है कि तुम्हारे आमाल बेकार हो जाएं और तुम्हें इसका पता न चले।" (हुजुरात – 2)

साथ ही अल्लाह तआला ने बंदों को ओर से आप का आदर और सम्मान करने को दिलों की सफाई तक पहुंचने के लिए इम्तिहान बनाया। और अल्लाह तआला ने बन्दगी के सब से ऊंचे दर्जे तक

पहुंचने को आप के आदर और सम्मान बताया। और आप के अनादर और दुर्भावना को जहालत और नासमझी क़रार दिया:

"जो लोग पैगम्बर से अपनी आवाज़ नीची रखते हैं, यही वे लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने तक़वे के लिए आज़मा लिया है। उनके लिए क्षमा और बड़ा बदला है। जो लोग आप को कमरों के पीछे से आवाज़ देते हैं, वे ना समझ हैं।" (हुजुरात 3 - 4)

इस जगह हम इस आयत से भी काम ले सकते हैं:

"तुम रसूल को ऐसे न पुकारो जैसे आपस में एक दूसरे को पुकारते हो।" (नूर: 63)

हजरत इब्ने अब्बास इस आयत की व्याख्या करते हुए कहते हैं कि: सहाबा आपको अबुल क़ासिम या ए मुहम्मद कहते थे, तो अल्लाह ने उनको इससे मना किया और कहा कि **सम्मान में ए रसूलुल्लाह, ए अल्लाह के नबी कहा करो।** (इब्ने कसीर, तफ़सीर नूर 63)

स्वयं अल्लाह ने कभी रसूलुल्लाह को अन्य नबियों की तरह नाम लेकर नहीं पुकारा। बल्कि आप के सम्मान में सदैव अल्लाह के रसूल अल्लाह के नबी फरमाया। इसमें उम्मत के लिए बहुत बड़ा सबक है। कि पैगम्बर की किस तरह इज्जत की जाए।

साथ ही जो लोग पैगंबर की इज्जत करना नहीं जानते, उनके बारे में इस आयत में कठोर शब्द आए हैं:

"आप की क़सम यह लोग नशे और जुनून में भटक रहे हैं।" (हिज्र 72)

अल्लाह ने पूरे क़ुरान में कहीं ऐसी क़सम नहीं खाई जैसी रसूलुल्लाह के लियेखाई है।

जो अल्लाह के नज़दीक आप की बड़ाई और उच्च स्थान को दर्शाता है। इसी वजह से अल्लाह ने खुद आप पर दुरूद और सलाम भेजे हैं और फरिश्तों और सब लोगों को भेजने का आदेश दिया है:

"बेशक अल्लाह और उसके फरिश्ते रसूलुल्लाह पर दुरूद भेजते हैं। ए मुसलमानों तुम भी आप पर दुरूद व सलाम भेजो।" (अहज़ाब 56)

आप पर अल्लाह की ओर से यह बख्शिश और भेंट केवल यहीं तक सीमित नहीं है ,बल्कि क़यामत तक यह जारी रहने वाली है। अल्लाह तआला ने फरमाया:

"आप का रब आप जल्द ही इतना अधिक प्रदान करेगा कि आप खुश हो जाएंगे।" (धुहा, 5)

इस के अलावा अल्लाह ने आप को सब नबियों और रसूलों का सरदार और सब से श्रेष्ठ बनाया। अतः आप ने फरमाया:

"इन रसूलों में हमने किसी को किसी पर बरतरी दी है। किसी से अल्लाह ने बात की और किसी का मर्तबा सब से बढ़ा दिया।" (बक़रा: 253)

"उनमें से कुछ किसी को" अर्थात उनमें से एक को। "बअज़" शब्द अरबी भाषा में एक के मायने में है। और इस आयत में इस शब्द से प्रायः रसूलुल्लाह की जात है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास से रिवायात है कि एक बार सहाबा बैठे आप की प्रतीक्षा कर रहे थे। फिर वे उनके पास आये और उनको यह कहते हुवे सुना: एक कहता है: कितनी अजीब बात है कि अल्लाह ने अपनी मख़लूक़ में से इब्राहीम को चुना और खलील और दोस्त बना दिया। दूसरे ने कहा कि अल्लाह के मूसा से बात करने से अधिक आश्चर्यजनक नहीं है। तो तीसरे ने कहा: ईसा अल्लाह का

कलिमा और उसकी रूह हैं। तो एक और ने कहा कि आदम को अल्लाह ने चुना। इतने में अल्लाह के रसूल तशरीफ़ ले आये और आप ने फरमाया:

"मैंने आप की बात और आश्चर्य को सुन लिया कि इब्राहीम अल्लाह के खलील और दोस्त हैं। और यह बिल्कुल सही है। मूसा अल्लाह के बचाये हुवे हैं और सही है। ईसा अल्लाह का कलिमा और उसकी रूह हैं। सही है। आदम को अल्लाह ने चुना। यह भी सही है। और मैं अल्लाह का हबीब और महबूब हूँ। लेकिन इस पर कोई फख्र अभिमान नहीं। और मैं क़यामत के दिन ध्वज वाहक हूंगा, जिसके नीचे आदम और उनके नीचे के सब लोग होंगे। लेकिन इस पर कोई फख्र अभिमान नहीं। मुझे सब से पहले सिफारिश करने का अवसर मिलेगा। और सब से पहले मेरी बात सुनी और मानी जायेगी। लेकिन इस पर कोई फख्र अभिमान नहीं। मैं जन्नत के द्वार को सर्वप्रथम हिलाऊंगा। अल्लाह सब से पहले मुझे और मेरे साथ मुसलमानों के गरीबों को प्रवेश देंगे। लेकिन इस पर कोई फख्र अभिमान नहीं। मैं अल्लाह के नज़दीक अगलों और पिछलों में सब से उच्च और सम्मान वाला हूँ। लेकिन इस पर कोई फख्र अभिमान नहीं।" (तिर्मिज़ी, मनाकिब, 1/3616, दारमी, मुक़द्दमा 8)

और अल्लाह के रसूल ने फरमाया:

"मैं आदम की औलाद का क़यामत के दिन सरदार हूंगा। मेरे हाथ में उस दिन एक झंडा होगा। जिसके नीचे आदम समेत हर नबी होगा। सर्वप्रथम मेरी क़ब्र से ज़मीन फटेगी। और मुझे उठाया जाएगा। किन्तु इस पर कोई अभिमान नहीं है।" (तिर्मिज़ी, तफसीरुल कुरान, 17/3148)

रसूलुल्लाह के इन्हीं सब कमाल और गौरवशाली गुणों को देख कर अल्लाह ने सब मुसलमानों को आदेश दिया कि रसूलुल्लाह की राह में फना हो जाएं और समर्पित हो जाएं। और इस अवस्था में रहें, जैसे अपने सब काम आप के सामने ही पेश कर रहे हैं। इस का सब से बड़ा प्रमाण यह है कि अल्लाह ने सब मुसलमानों को सभी नमाज़ों में बैठने की अवस्था में नबी पर ऐसे सलाम और दुरूद भेजने का आदेश दिया है, जैसे वह उनके सामने खड़े हों: "ऐ नबी, आप पर सलाम हो और अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें।" हालांकि किसी अन्य इंसान को नमाज में सलाम करने से नमाज़ टूट जाती है।

इमाम **अबु हामिद ग़ज़ाली** इसकी वजह बताते हुवे लिखते हैं:

"जहां तक तशह्हुद की बात है तो जब आप उसमें बेठें तो बहुत अदब और शिष्टाचार से बैठें। और यह स्पष्ट करें कि हर प्रकार की शारीरिक और माली इबादतें अर्थात अच्छे अखलाक आदि केवल अल्लाह के लिए हैं। और इसी प्रकार बादशाहत अल्लाह ही के लिए है। और अपने दिल में अल्लाह के रसूल को लाएं और फिर आप पर सलाम भेजें। अल्लाह आप को इस से अच्छा बदला देगा।" (अबू हामिद ग़ज़ाली, इहयाउ उलूमिददीन, 1/224)

और **शैख़ खालिद बग़दादी** (र.अ.) अपनी किताब मकतूबात के चौथे भाग में शेख शिहाब इब्ने हजर मक्की के हवाले से तशह्हुद के शब्दों के अर्थ के बयान करते हुवे निम्न बात लिखते हैं:

"और आप को संबोधित किया गया ताकि यह आप के उम्मतियों को यह बताया जा सके कि आप मानो उनके साथ है। ताकि उनके आमाल पर गवाह रहें। ताकि उनके ध्यान और उपस्थिति का कारण बने।"[2]

---

2. अल हाकिम अल मुस्तदरक अलस्सहीहैन, बैरूत 1990, जि. 2, 672/4228

हासिल यह है कि पैगंबर मुहम्मद मुस्तफा - सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सब से अफ़ज़ल और बरतर हैं। दुनिया और सारा संसार आप के लिए ही पैदा किया गया। ज़मीन भी पैगंबर स. के नूर से बनाई गयी। उनके नूर और मुस्कुराहट की मिट्टी में मिला गयी। आदम (अलैहिसल्लाम) की तौबा को कबूल किया गया । जैसे कि हदीस ए कुदसी में कहा:

"जब आदम (अलैहिस्सलाम) ने एक ग़लती की और यह उन के जन्नत से निष्कासित हो जाने का कारण बन गया तो उन्होंने प्रार्थना की: "खुदा। मुहम्मद स. के सदक़े में मैं तुझ से प्रार्थना करता हूँ कि मुझे माफ कर। अल्लाह तआला ने उन से पूछा: "आदम! आप को अभी तक नहीं बनाये हुए मुहम्मद के बारे में कैसे पता है? आदम (अलैहिसल्लाम) ने जवाब दिया: ,"अल्लाह। जब आप ने मुझको बनाया और अपनी रूह से मुझ में जान फूंक दी, तो मैं ने अपना सिर उठाया और देखा कि अर्श के स्तंभ पर लिखा हुआ है: ,,ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर-रसूलल्लाह। और मैं समझ गया कि आप अपने नाम के निकट केवल अपने सब से महबूब बंदे का नाम ही रखते हैं। और आल्लाह तआला ने कहा:, "तुम ने सच कहा। "आदम। दरअसल यह मेरा सब से महबूब बंदा है। उस के माध्यम से मुझ से माँगो (और तूम ने माँगा), और मैं ने तुम को माफ कर दिया। अगर मुहम्मद नहीं होते, तो मैं तुम को भी ना बनाता।,,[3]

इसी तरह हजरत आदम (अलैहिसल्लाम) ने पैगंबर मुहम्मद का नाम लिया और अल्लाह ने उन के गुनाह माफ़ कर दिया। इस महान पैगंबर से इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को आत्मविश्वास मिला और आग से कोई नुकसान उन को नहीं हुआ। जब इस महान मोती

3. अल हाकिम अल मुस्तदरक अलस्सहीहैन, बैरूत 1990, जि. 2, 672/4228

का ईस्माइल (अलैहिसल्लाम) की सीपी में होना तय हुआ तो उन के स्थान पर आस्मान से कुरबानी करने के लिए एक मेमना उतारा गया।

जैसे हम ने देखा, सब पैगंबरों को पैगंबरी मुहम्मद (सल्ल°) की वजह से मिली। यहाँ तक कि मूसा (अल°) ने चाहा कि मुहम्मद (सल्ल°) की उम्मत में हों और जो फज़ाईल और बरकत अल्लाह ने मोहम्मद स. के उम्मती को दी है, उससे वे भी लाभ उठायें। अतः हज़रत कतादा से रिवायात है कि हज़रत मूसा ने फरमाया:

खुदा। मैं ने तख्ती पर जिन उम्मतों का नाम देखा, वे भले कामों का हुक्म देती हैं और बुराइयों से रोकती हैं उन्हें मेरी उम्मत बना दे। अल्लाह ने कहा: "वे मुहम्मद की उम्मत हैं।"

"खुदा। मैं ने तख्ती पर जिन उम्मतों का नाम देखा, वे सब से अंत में आएंगी और दूसरी उम्मतों से पहले जन्नत में दाखिल हो जाएँगे। उन्हें मेरी उम्मत बना दे। अल्लाह ने कहा: "वे मुहम्मद की उम्मत हैं।"

खुदा। मैं ने तख्ती पर जिन उम्मतों का नाम देखा, वे अपनी पवित्र किताब सीनों में रखते हैं। पहले लोग देख् कर किताबें पढ़ते थे। इनको याददाश्त अधिक और असाधारण मिली है। उन्हें मेरी उम्मत बना दे। अल्लाह ने कहा: "वे मुहम्मद की उम्मत हैं।"

खुदा। मैं ने तख्ती पर जिन उम्मतों का नाम देखा, वे सब से पहली किताब पर भी ईमान रखते हैं और अंतिम पर भी। और वे हर गुमराही से जिहाद करते हैं। काने झूठे दज्जाल से भी जिहाद करेंगे। उन्हें मेरी उम्मत बना दे। अल्लाह ने कहा: "वे मुहम्मद की उम्मत हैं।"

खुदा! मैं ने तख्ती पर जिन उम्मतों का नाम देखा, वे तो सदके भी खुद खाते हैं और इनाम भी पाते हैं। जब कि पहले लोग तो सदके को पहाड़ पर रखते थे। आग आकर उनको खा जाती और अगर रद होते तो उनको जानवर खा जाते। यह तो खुद ही खा जाते हैं। उन्हें मेरी उम्मत बना दे। अल्लाह ने कहा: "वे मुहम्मद की उम्मत हैं।"

खुदा! मैं ने तख्ती पर जिन उम्मतों का नाम देखा, वे जब किसी भले काम को करने का इरादा करते हैं तो नेकी लिखी जाती है। और करलें तो दस नेकियाँ लिखी जाती हैं और कभी सात सौ तक बढ़ा दी जाती है। उन्हें मेरी उम्मत बना दे। अल्लाह ने कहा: "वे मुहम्मद की उम्मत हैं।"

खुदा! मैं ने तख्ती पर जिन उम्मतों का नाम देखा, उनकी सिफारिश की जाएगी। और उनकी सिफ़ारिश क़ुबूल भी की जाएगी।उन्हें मेरी उम्मत बना दे। अल्लाह ने कहा: "वे मुहम्मद की उम्मत हैं।"

कतादा ने फ़रमाया: "तो हमारे सामने ज़िक्र किया गया कि अल्लाह के नबी मूसा (अ.) ने तख्तियां उठायीं और कहने लगे: "ऐ अल्लाह, मुझे भी अहमद की उम्मत में से बना दीजिए।"[4]

हासिल यह है कि सब पहले नबी और रसूल पैगंबर (सल्ल०) के आगमन की खुशखबरी देने वाले थे।

और 571 ईसवी में, 12 रबीउलअव्वल, सोमवर को यह नूर दुनिया में निकला। मुहम्मद के आने से अब्दुल्लाह और आमिना के परिवार को सम्मान मिला।

---

4. इब्ने कसीर, तफ़्सीरुल क़ुरान अल अज़ीम, बैरूत 1988, जि. 2, अल अ'अराफ 154

उन के आगमन के साथ अल्लाह की कृपा से यह दुनिया बहुत अधिक भर गयी। सुबह और शाम के रंग बदल गए। शब्द, चर्चा, आनंद, हर चीज ने विशेष अर्थ प्राप्त कर लिया। मूर्तियां थर थरायी और जमीन पर गिर गयी। राजाओं के महलों में स्तंभ और गुंबद गिर पड़े। नील झील जो अंधकार और अज्ञान का प्रतीक है, सूख गयी। मन भलाई और आशीर्वाद से भर गये। इस भलाई से सारा संसार और वातावरण भर गया।

यदि माननीय पैगंबर - सल्लल्लाहु अलैहि वा सल्लम, अपनी सब भलाई और खूबी इस दुनिया में नहीं लाते और इस दुनिया को सम्मान नहीं देते, मानवता उत्पीड़न और अंधकार में रह जाती, कमजोर लोग मजबूत के गुलाम हो जाते। बुराई की ओर बिठाया जाता। दुनिया शक्तिशाली और बल वालों के हाथ में गुलाम बन जाती।

कवि ने खुबसूरती से इस हालत को व्यक्त किया:

ऐ अल्लाह के पैगंबर! अगर आप दुनिया में नहीं आते,

तो गुलाब नहीं खिलते, बुलबुल नहीं गाते।

और आदम के लिए सारे नाम अज्ञात रहते।

अस्तित्व का कोई अर्थ नहीं रहता। और संसार शोक में डूब गया होता।।

मौलाना जलालुद्दीन रूमी ने कहा हैः – हमें ऐसे मार्गदर्शक का आदर करना है, चूँकि उन्होंने बुतों को तोड़ दिया और जुल्म और अज्ञानता का परदा लोगों के सीनों से उठाया और न्याय को संसार पर फैलाया।

ऐ लोगों! अगर पैगंबर-ए-अकरम की जाँबाजी और त्याग बलिदान नहीं होता तो आज हम अपने पूर्वजों की (जहालत) अज्ञानता की नदी में डूबकर मूर्ति पूजक रह जाते।

वह व्यक्ति जिन को पढ़ना और लिखना नहीं आता और अनपढ़ समाज में रहता था, मानवता की सभ्यता की दूरी पर उस का जन्म हुआ,उस ने लोगों को अपने ज्ञान और बुद्धि से आश्चर्य में डाला और अपने साथ ऐसा चमत्कार लाया कि उस की तरह कोई नहीं ला सकता, यह मोजिज़ा कुरान है जे हमारे जीवन का दस्तूर है और मानवता के पिछले इतिहास,आज के और भविष्य के इतिहास के बारे में बात करता है। और 1400 साल के दौरान में कोई इस मोजिज़े के सत्य होने का इन्कार कर नहीं सकता है। सब से प्रसिद्ध किताबों पर पुनर्विचार किया जाता है और कुरान मोजिज़ा है और कभी बदल नहीं सकता।

जब पैगंबर छोटे थे, उन के माता-पिता का देहांत हुआ और उन्होंने किसी से शिक्षा प्राप्त नहीं की। इन्सान की आँखों से गुप्त संसार के विधाता और अस्ली सच्चाई का मूलस्रोत उनके उसताद थे।

माननीय मूसा (अल°) अपने साथ अनेक हुक्म लाये। हज़रत दाउद (अल°) अल्लाह से दुआ और मुनाजात लाए, और अल्लाह से प्रार्थना की। माननीय ईसा (अल°) लोगों को अच्छे अखलाक सिखाने हेतु भेजे गये थे। इसलाम के पैगंबर माननीय मुहम्मद मुस्तफा (सल्ल°) यह सब एक साथ ले आये। कानून और अहकाम सिखाये, अपने नफ़्स को काबू करना सिखाया, साफ दिल से अल्लाह से दुआ माँगने और सब से ऊंची नैतिकता और जीवन भर ऐसी नैतिकता का नमूना बन गये। इस दुनिया के भ्रामक आकर्षण के झाँसे में न आने की सलाह दी। अर्थात अपने में सभी पैगंबरों के उद्देश्य और

अधिकार का संयोजन दे दिया। उस में उदारता, स्वभाव, सुंदरता, खुशी और श्रेष्ठता जुड़ गयीं।

चालीस साल के दौरान वह अज्ञानी समाज में जीवनयापन करते रहे। उन के लोगों को अभी तक उस के गुण बिल्कुल मालूम नहीं थे, जो बाद में पैदा हुए थे। पैगंबर न सिर्फ एक राजनेता और खतीब थे, बल्कि वे जीवन के हर क्षेत्र में उल्लेखनीय इन्सान थे।

निः संदेह उन के जीवन का चालीसवां साल मानवता के इतिहास में सब से महान मोड़ था।

चालीसवें साल तक उन्होंने किसी से पैगंबरी, इबादत, कयामत, स्वर्ग और नर्क के बारे में कुछ नहीं सुना था। उन्होनें श्रेष्ठ जीवन बिताया, लेकिन वह आप का व्यक्तिगत जीवन था, जो उच्च नैतिकता और अखलाक से भरा हुआ था। हिरा गुफा से लौट आने के बाद उन के जीवन में बहुत सारे बदलाव हुए।

जब उन्होंने तबलीग और दावत का कार्य शुरू किया, तो संपूर्ण अरब अचंभे में पड़ गए। उन की बातों की बलागत पर सब मोहित हो गये। उस समय कोई कवि काबा की दीवार पर अपने कविताओं को लटकाने की हिम्मत नहीं करते थे, जो मुकाबले में श्रेष्ठ कविता मानी जाती थी। इस तरह युगोँ की परंपरा अचानक ऐतिहासिक संपत्ति हो गयी। जब प्रसिद्ध कवि इमरउल-क़ैस की बहन ने कुरान की इन आयात को सुना:

وَقِيلَ يَآ اَرْضُ ابْلَعِي مَآءَكِ وَيَا سَمَآءُ اَقْلِعِي

وَغِيضَ الْمَآءُ وَقُضِيَ الْاَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُودِيِّ

وَقِيلَ بُعْدًا لِلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ

"और (ग़ैब ख़ुदा की तरफ से) हुक्म दिया गया कि ऐ ज़मीन अपना पानी जज्ब (शोख) करे और ऐ आसमान (बरसने से) थम जा और पानी घट गया और (लोगों का) काम तमाम कर दिया गया और कश्ती जो वही (पहाड़) पर जा ठहरी और (चारो तरफ) पुकार दिया गया कि ज़ालिम लोगों को (ख़ुदा की रहमत से) दूरी हो।" (हूद-44)

तो इमरउल-कैस की बहन ने कहाः

"**कोई और कुछ भी कह नहीं सकता है। मेरे भाई की काविताओं से काबा की दीवार पर कुछ फायदा नहीं। क्योंकि किसी की कविता में वह रस नहीं है जो कुरान की आयतों के बराबर हो।"**

और फिर उस ने अपने भाई की शायरी को काबे से उतार लिया।[5]

सच यह है कि आप ने ही समूची इंसानियत को वास्तव में इंसान होने और ज़मीन पर अल्लाह का उत्तराधिकारी होने का अर्थ समझाया। और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, बौद्धिक और आंतरिक और बौद्धिक संबंध आदि में सटीक मार्गदर्शन किया। ऐसे ज़बरदस्त मार्गदर्शन, जिनको विशेषज्ञों की एक बड़ी संख्या पूरी उम्र के शोध और इंसान और वस्तुओं पर खूब अनुभव से भी नहीं कर सकती। यह सत्य है कि मानवता ज्यों ज्यों बौद्धिक और सैद्धान्तिक रूप से विकास करेगी, तो संभव है कि "मुहम्मदी जीवनशैली" को अधिक निकट्स के जान सके।

5. अहमद जूदत पाशा, किससुल अंबिया, तवारीखुल खुलफ़ा, इस्तांबुल 1976, जि. 1, पे. 83

हमारे वह महान रसूल जो हथियार उठाये बिना दर्शक के तौर पर केवल एक युद्ध में शामिल हुवे, किसी युद्ध के गुर और बारीकियां सीखे बिना आप एक अनुभवी सेनापति, साहसी सिपाही और एक ऐसी चट्टान बन गए, जो बावजूद रहमत और मेहरबान होने के, समाज और दुनिया में शांति स्थापित करने और एक ईश्वरवाद को आम करने हेतु किसी भी सख्त से सख्त युद्ध में पीछे नहीं हटे। कभी पीछे नहीं हटे।

आप एक एक आदमी के दरवाजे पर बार बार गये। ताकि वे हिदायत ले आएं। किंतु लोग उनसे भागते रहे। वे चाहते थे कि यह सूर्य उनके घरों को रौशन न कर दे। और वे जीवन भर गुमराह बने रहे। उसके साथ कुछ लोगों ने तो दुर्व्यवहार किया। किंतु वे उनके व्यवहार से प्रभावित नहीं हुवे। ईमान न लाने से उनको तकलीफ होती थी। आप ऐसे लोगों को कहते थे:

"मैं तुम से बदला नहीं मांगता। और में परेशान करने वालों में नहीं हूँ।" (साद, 86)

अर्थात रसूलुल्लाह केवल अल्लाह को खुश करना चाहते थे। अतः आप ने नौ वर्ष की अवधि में लगभग समूचे अरब प्रान्त को फतह कर लिया। और वह भी बहुत साधारण सैन्य शक्ति से, जो अधिकांश समय शत्रु के सेना की तिहाई मात्रा में ही होती। इस में असली शक्ति उन असभ्य लोगों को सैन्य प्रशिक्षण भी था और आध्यात्मिक भी। वह भी बहुत कम जान हानि के साथ, जिसके उल्लेख की भी आवश्यकता नहीं। और इसी अवधि में आप इतने बड़े सिपहसालार बन कर उभरे, जिन्होंने तत्कालीन महाशक्ति रोम और फारस को भी करारी शिकस्त दी।

ऐसी बहुत सी बाधाएं होने के बावजूद पैगंबर — सल्लल्लाहु अलैहि वा सल्लम मानवता के इतिहास में सब से बड़े क्रांतिकारी बन

गए। जालिमों को मार दिया गया और मजलूमों के लिए खुशी लाये। गरीबों और अनाथों को सहायता दी।

इसी के बारे में तुर्क कवि **मुहम्मद आकिफ़** ने कहा हैः

इस बीच समय आ गया और अनाथ बालिग़ हुआ और अपनी चालीस वर्ष आयु पहुंचा।

वे लहुलुहान पांव जो ज़मीन पर चल रहे थे, ठीक हो गए।

इसी निर्दोष ने दिलों में मारी गयी ईमानी फूंक से सारी मानवता को बचाया।

कैसरों और शाहंशाहों को एक प्रयास से उन के सिंहासनों से गिरा डाला।

पिछड़ों और गरीबों को जिनका नसीब पीड़ा थी, उसने छुटकारा दिलाया।

जुल्म ने कभी नहीं सोचा था कि वह कभी समाप्त होगा, मगर उसे होना पड़ा।

हां, वह अल्लाह का खुला हुवा क़ानून था, जिसको सारे जहानों के दयावान लेकर आये।

आप ने रहमत के बाजू फैला दिए हैं, उन पर जो न्याय के पक्षधर हैं।

दुनिया के पास जो कुछ है, उसी का दिया हुवा है।

हर व्यक्ति और समाज उसी का क़र्ज़दार है।

अतः समूची मानवता उस निर्दोष की आभारी है।

ऐ अल्लाह, हम को उनमें शामिल फ़रमा, जो महशर के दिन इसी विश्वास के साथ उठाये जाएंगे।

निःसंदेह सभी नबियों और रसूलों के सरदार माननीय मुहम्मद मुस्तफा (स. अ. व.) की जीवन शैली, अन्य पैगंबरों के मुक़ाबले में समुद्र है। दूसरे पैगंबरों का रास्ता नदियों की तरह हैं, जो इस समुद्र में बहती है। वे अपने सब भूतपूर्व पैगंबरों की -ज्ञात और अज्ञात- नैतिक विशेषताओं का भंडार और विभिन्न गुणों के धनी थे, जिनकी संख्या 1 लाख 24 हजार से अधिक थी। उन के आने से मनुष्य की बुद्धि और सभ्यता विकसित हो गयी थी और आप के कारण उसे आगे चलने के लिए पर्याप्त शक्ति मिल गयी। आप (सल्ल॰) मनुष्य के बुद्धि और सभ्यता की प्रगति के एक "आदर्श नमुना" बन गये। यही कारण है कि अल्लाह ने आप को "अंतिम ज़माने का संदेष्टा" बना कर इस संसार में भेजा।

अल्लाह के पैगंबर (सल्ल॰) ने स्वयं नैतिकता के बारे में कहा:

"मुझे नैतिक्ता के उच्च मूल्यों को पूरा करने के लिए भेजा गया है।" (मुअत्ता, हुसन-उल-खुलक़,8).

आपने कोई मीरास की सामग्री नहीं छोड़ी। आप की मीरास अच्छे नैतिक मूल्य और इल्म था।

आदर्श जीवनशैली - उत्तम व्यक्तित्व

यह सच है कि रसूलुल्लाह इतिहास के वे इकलौते इंसान हैं, जिनकी की जिंदगी की छोटी से छोटी चीज़ को भी अत्यंत सुरक्षात्मक तरीके से संजोया गया। यह सच है कि सभी नबी और रसूल लोगों को सीधे रास्ते की ओर लाने में अपना एक इतिहास रखते हैं और उनके व्यवहार और जीवन शैली को भी हम तक पहुंचाया गया है, किंतु कम और सीमित मात्रा में। लेकिन जहां तक हमारे नबी की बात है तो आप की छोटी छोटी चीजों को भी संपूर्ण विस्तार के साथ दुनिया के अंतिम इंसान तक पहुंचाने का बंदोबस्त किया गया। आप के जीवन को इतिहास में एक अभिमान और गर्व के रूप में सुरक्षित किया गया। इसके अलावा यह सब अल्लाह का विशेष बंदोबस्त है कि आप के ज़माने से दुनिया के अंतिम इंसान तक आप के हर अमल और कथन को पहुंचाया जायेगा।

हमें समस्याओं, संकट और मुसीबतों से लड़ते हुवे दुनिया की परीक्षाओं से बचने के लिए ज़रूरी है कि आप के उच्च नैतिक गुण जैसे आभार, भरोसा, खुदा के फैसले पर राज़ी रहना, मुसीबत पर सब्र करना, दृढ़ संकल्प, साहस, त्याग, बलिदान, दिल की निष्ठा, अन्य के काम आना, सहनशीलता, संकट और विकट परिस्थितियों में डटे रहना आदि को अपनाएं।

और इन सब मामलों में एक उत्तम आदर्श बनाने हेतु अल्लाह ने एक महान मानवीय चरित्र भेजा है, जो मानवता के लिए एक भेंट हैं।

वह हमारे सरदार रसूलुल्लाह (स.अ.व.) हैं, जो मार्गदर्शक और एक आदर्श ज़िन्दगी के मालिक हैं।

निःसंदेह रसूलुल्लाह का पवित्र जीवन क़यामत तक आने वाली पीढ़ियों के लिए एक बेहतरीन नमूना है। क़ुरान ने इस के बारे में ही उल्लेख किया है, अतः कहा है:

"निःसंदेह आप के लिए असीम बदला है। और आप चरित्र और नैतिकता के उच्चतम स्तर पर हैं।" (कलम: 3 - 4)

रसूलुल्लाह के व्यक्तित्व और आप की बुलंद जीवनशैली ने इंसान के लिए अपने संकेतों और दृश्यों के माध्यम से, ऐसी इंसानी व्यवहार का व्यवस्थित शिखर स्थापित किया, जितनी बुलंदियों को इंसान के लिए छूना और पाना संभव था। नबी के आदर्श व्यक्तित्व ने मार्गदर्शन को सम्पन्न किया। अर्थात आप स्वयं ही हर इंसान के भीतर एक उत्तम नमूना बन कर जीवित हैं।

अल्लाह ने खुद आप की शख़्सियत को समूची मानवता के लिए आदर्श के तौर पर पेश किया है। अल्लाह तआला फरमाते हैं:

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِى رَسُولِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِمَنْ كَانَ
يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيرًا

"रसूलुल्लाह की जात में बेमिसाल नमूना है हर उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और आख़िरत के दिन की उम्मीद रखे। और अल्लाह को खूब याद करे।" (अहज़ाब: 21)

आप के जीवन का हर हर पन्ना हमारे सामने रहन सहन और व्यवहार के सौन्दर्य और संपन्नता के नये द्वार खोलता है। अतः वह

रसूल के जीवन में हर तरह के व्यवहार की खूबसूरती को प्रस्तुत करता है। चाहे विस्तार से हो या संक्षेप में। यही कारण है कि हर व्यक्ति आप के जीवन और सीरत में अपने लिए ऐसे सम्पन्न और खूबसूरत गुण पा सकता है, जो वह अपने लिए पसंद करता है।

क्योंकि आप ही दीन के मामले में भी नमूना हैं, राज्य के नेतृत्व में भी आदर्श हैं, खुदा की मुहब्बत के संसार में प्रवेश करने वालों के लिए भी आप ही नमूना हैं और जिसे अल्लाह ने अपनी नेअमतों से खूब नवाज़ा है, उनके लिए शुक्र करने के मामले में भी आप ही आदर्श हैं।

संकट और विकट परिस्थितियों में आप अपने धैर्य और सब्र के साथ आदर्श हैं। समृद्धि के समय अपनी बख्शिश और अता आप आदर्श हैं। घर वालों के साथ दया और नरमी के मामले में भी आप ही नमूना हैं। कमजोरों, गुलामों और राहगीरों के साथ सहानुभूति में भी आप ही आदर्श हैं। दोषियों को क्षमा देने में भी आप ही आदर्श हैं।

यदि आप मालदार और धनवान हैं तो महान रसूलुल्लाह की सहनशीलता और करम में विचार करें, जिन्होने समूचे अरब प्रान्त पर बादशाहत की, अरब के महान इंसानों का नेतृत्व किया और प्यार के माध्यम से उनको अपनी ओर आकर्षित किया।

अगर आप पीड़ा और संकट में हैं तो सोचिये कि रसूलुल्लाह की ज़िंदगी में से सबक़ लीजिए, कि आप मक्का में ज़ालिम काफिरों के शासन के अधीन थे।

अगर आप योद्धा और विजेता हैं तो बदर और हुनैन के योद्धा के बारे में जानिए, जिन्होंने अपने शत्रु को हराने के लिए हर तरह का प्रयास किया।

और अल्लाह न करे, यदि आप को शिकस्त का सामना करना पड़ा है तो ओहद के दिन के आप के हालात से उदाहरण लीजिए, जब अपने सहाबा को शहीद और खून में लतपत पड़े हुवे देख कर भी सब्र किया और साहस का परिचय दिया।

अगर आप उस्ताद हैं तो नबी की जीवन में गौर कीजिए, जिसने सुफ़्फ़ा के छात्रों को मस्जिद में खुदा के आदेश पढ़ाये और अपने नूरानी दिल की बरकतों को उन पर बहाया।

अगर आप छात्र हैं तो देखें कि वह्य के आने के वक़्त आप फरिश्ते जिब्रईल के सामने कैसे ध्यानपूर्वक सभ्य और संजीदा हो कर बैठते थे।

अगर आप वाइज और संबोधक हैं, जो लोगों को नसीहत करते हैं, और एक ईमानदार मार्गदर्शक हैं, तो रसूलुल्लाह को ध्यानपूर्वक सुनिए। अपने कानों को और दिल को आप की मीठी बातों का आनंद दीजिए, जब आप मस्जिद नबवी में अपने साथियों को नसीहत कर रहे थे।

अगर आप हक़ की रक्षा कर रहे हैं, उसके प्रचारक हैं और उसको थामे हुवे हैं, जबकि आप को सहयोगी नहीं मिला है, तो नबी की ज़िंदगी को देखो, जिन्होंने मक्के में ज़ालिमों के सामने बिना किसी सहारे और सहयोग के हक़ की आवाज़ उठाई और उनको इस्लाम की ओर बुलाया।

अगर आप दुश्मन पर काबू पाने का प्रयास कर रहे हैं और उसकी पीठ को पकड़ कर उसके घमंड को तोड़ना चाहते हैं और आप चाहते हैं कि बातिल और गलत का विनाश कर के सत्य और हक़ को बुलंद करें तो फतह ए मक्का के फातेह की हालत को अपने मद्देनजर रखो, कि आप एक विजेता होने के बावजूद कैसे आभार की

मुद्रा में सिर झुका कर अपनी ऊंटनी पर इस तरह मक्के में प्रवेश करते हैं, जैसे सजदे में हों।

अगर आप ज़मींदार हैं और उसमें अपने काम को व्यवस्थित करना चाहते हैं तो बनू नज़ीर, खैबर और फ़िदक की जमीनों के बारे में पढ़ो, जिन को अर्जित करने के बाद आप ने उन पर ऐसे कृषकों को लगाया, जिन्होंने बेहतरीन काम करके दिया।

और यदि आप अकेले, बेसहारा और अनाथ हैं तो आमिना और अब्दुल्लाह की आंखों के तारे नूरानी यतीम को देखो।

अगर आप जवान और भरी उम्र के हैं तो अबू तालिब की बकरियां चराने वाले उस जवान को जानिये, जिसे जल्दी ही नबी बनना है।

अगर आप व्यापारी हैं, तो शाम और यमन की ओर जा रहे क़ाफ़िले में निकले उस ताजिर और व्यापारी को अच्छे से समझिए, जो उनमें सब से ऊंचे रुतबे और बुलंद मुकाम वाला था।

अगर आप निर्णायक और फैसल हैं तो रसूलुल्लाह के चरित्र, व्यवहार और चाल चलन की सत्यता को देखें, जब आप मक्का के बड़े लोगों के पास उस समय आये, जब वे क़ाबे में हज्रे अस्वद (काले पत्थर) को रखने को लेकर लड़ रहे थे। आपने उसे उसकी जगह ठीक ठीक रख कर न्याय और बुद्धिमता का परिचय दिया।

एक बार पुनः आप इतिहास और अतीत की ओर देखो। और रसूलुल्लाह को देखो। आप मस्जिद में बेठ कर बड़े धैर्य से न्यायपूर्ण फैसले कर रहे हैं, जो गरीब अमीर सब के लिए समान हैं।

अगर आप पति हैं तो खदीजा और आयशा के बेमिसाल शौहर को पढ़ो, जिसने कितने महान जीवन, आदर्श व्यक्तित्व और उच्च स्वभाव का परिचय दिया।

यदि आप किसी बच्चे के पिता हैं तो फातिमा के पिता और हसनैन के नाना के उच्च स्वभाव और उनके प्रेम भाव को अपनाइए।

आप के हालात जो भी हों, आपकी स्थिति जो भी हो, आप को रसूलुल्लाह के जीवन में निश्चित ही आदर्श दिशा निर्देश और मार्गदर्शन करने वाला मिलेगा।

वह आप का मार्गदर्शक है, क्योंकि आप हर उस गलती को सुधारते हैं जो आप बैठते हैं। और फिर अपने कामों को, जो रास्ते से भटक गए, पुनः आप उन्हें व्यवस्थित करते हैं। और सब कामों को रसूलुल्लाह की सीरत के अनुसार कर देते हैं। उसी के प्रकाश और मार्गदर्शन के साये में आप जीवन के संकट और कठिनाइयों से छुटकारा पालेंगे और दोनों संसारों का सौभाग्य प्राप्त कर लेंगे।

यह सही है कि आप की दिली और आत्मिक ज़िन्दगी एक ऐसा बेमिसाल सदाबहार गुलिस्तां थी, जो विभिन्न सुगंधित फूलों और शबनम की छींटों से महक रहा था।

जैसा कि हमने देखा, नबी का जीवन ही मालदार और गरीब तथा खुशहाल और बदहाल दोनों के लिए समान रूप से आदर्श नजर आता है। क्योंकि कोई बादशाह प्रजा के लिए कभी आदर्श नहीं हो सकता और कोई प्रजा बादशाह के लिए उदाहरण नहीं बन सकती।

कभी कोई फकीर, जो जीवन भर आराम का एक लुकमा प्राप्त करने के लिए जीवन भर जद्दोजहद करता है और असफल रहता है, किसी भी तरह आनंद और ऐश में पलने वाले मालदार के लिए आदर्श नहीं बन सकता।

जहां तक आप के जीवन की बात है तो वह दोनों ओर के लिए समान रूप से आदर्श है। क्योंकि आप को अल्लाह तआला ने यतीमी और अनाथ अवस्था से उठाना प्रारंभ किया, जो मानव समाज में सब

से कमज़ोर और पिछड़ी अवस्था समझी जाती है। फिर आप को अल्लाह ने हर प्रकार की ऊंचाइयों और बुलंदियों से गुजारा, यहां तक कि मानवता के सामर्थ्य की उच्चतम मंज़िल और स्तर तक पहुंचा दिया। अर्थात नुबुव्वत और सरदारी का स्तर। अतः आप के जीवन की मंज़िलें इंसानी जीवन में आने वाले सभी उतार चढ़ाव से हो कर गुज़री हुई है। इसी लिए आप की ज़िंदगी, चाहे व्यक्तिगत रूप से कितनी ही भिन्न हो, किंतु हर इंसान के लिए उसमें किसी भी परिस्थिति में पैरवी करने योग्य नमूना अवश्य मिलेगा।

तो सार यह है कि आप मानव समाज का सब से बड़ा चमत्कार हैं, जो अल्लाह तआला ने मानवता पर भेजा। समाज के न्यूनतम स्तर के इंसान से लेकर उच्चतम स्तर के व्यक्ति की जीवन शैली के लिए आप सब से खूब सूरत आदर्श हैं। और आप के आदर्श व्यक्तित्व में उतरने वाले मोमिनों के लिए यह एक जिंदा और सटीक तराजू है।

जो लोग मानव समाज को छुड़ाने और संकट से निकालने का दावा करते हैं, और कहते हैं कि वे बाक़ी लोगों के लिए मिसाल बनते हैं, खास तौर से बौद्धिक दृष्टिकोण के लोग फलसफी, जो अपनी कमज़ोर और छोटी बुद्धि से हर चीज़ को स्पष्ट करने की चुनौती लेते है, वे भी इस मामले में असफल रहे। लेकिन नबी और रसूल और जो उनके रास्ते पर चलते हैं, उनका मामला अलग है। और चूंकि नबी और रसूल आसमानी संदेश और पैगाम को आधार बनाते हैं। अतः वे खुदा के मार्गदर्शन के दूत बना कर भेजे गये हैं। इसीलिए वे जो भी खुदा की तरफ से लेकर आते हैं, तो वे हमेशा यही कहते हैं कि **"अल्लाह का यही हुक्म और आदेश है।"** जबकि फलसफी चाहे अपने आप को मानवता के हितैषी और उनका मार्गदर्शक दर्शाते थे, किंतु को चूंकि खुदा का समर्थन नहीं होता था और वे अपनी छोटी और कमज़ोर बुद्धि से ही सोचने पर विवश थे, और बुद्धि कई बार निजी स्वार्थ से प्रभावित हो जाती है, अतः वे अपनी राय के अनुसार

आदेश देते हुवे कहते थे कि **"मुझे ऐसा लगता है" या "मैं ऐसा सोचता हूँ।"** यही कारण है कि एक फलसफी का नज़रिया और दृष्टिकोण दूसरे से भिन्न और विपरीत होता है। और एक दूसरे को झुठलाता है। यही कारण है कि न वे स्वयं सीधा रास्ता पा सके। न अपने समाज का मार्गदर्शन कर सके।

उदाहरण के तौर पर **अरस्तू** को ही लें। हालांकि उसके पास नैतिकता की सोच और उनका एक नज़रिया अवश्य था, लेकिन वह्य से वह वंचित था। इसीलिए कोई एक व्यक्ति भी उसके विचार और फलसफे पर विश्वास रखने वाला नहीं है। और न ही किसी को उसके विचारों के कारण कामयाबी मिली। क्योंकि फलसफी लोगों ने ख़ुद अपने दिलों और आत्मिक संसार की सफाई नहीं की। और उनके विचार और उनकी सोच वह्य से पुख़्ता नहीं हो सकी। अतः एक इकलौता माध्यम जो इंसान को हर प्रकार की मानवीय और दिल और दिमाग की उन मुसीबतों से छुटकारा दिलाये, जो वह्य से पुख़्ता नहीं हुई हैं, वह पवित्र क़ुरआन ही है। अतः क़ुरान वह मज़बूत रस्सी है, जिसे अल्लाह ने अंतिम नबी के साथ मानवता के लिए उतारा। सच्चाई यह है कि वे सब अमली नमूने जो क़ुरआन में मौजूद हैं, वे सब हमारे रसूल की जीवनशैली में मौजूद हैं। अतः बहुत से वे काम जो मानवता के लिए आवश्यक हैं, ताकि वे अपने पैदा होने के उद्देश्य के साथ न्याय कर सकें, वे सब क़ुरान और हदीस के साथ जुड़े हुवे हैं।

हमारे लिए दो बड़े स्रोत क़ुरान और हदीस मार्गदर्शक के तौर पर छोड़े। क्योंकि क़ुरआन और हदीस ही दुनिया और आख़िरत की भलाई के लिए बेहतरीन नुस्खे हैं। और वह "अस्तित्व के नूर" की बेहतरीन यादगार हैं।

दूसरी दृष्टि से यह भी देखना चाहिए कि रसूलुल्लाह ने अपने ऊपर दिव्य संदेश आने से पहले लोगों में अपना शानदार चरित्र

पेश किया और अपने आप को लोगों में प्रिय बनाया। लोग आप को सादिक़ और अमीन कहने पर मजबूर हो गये थे कि: "आप ईमानदार हैं और आप सच्चे हैं।" आपने लोगों में अपनी साफ छवि बनाने के बाद ही इस्लाम का प्रसार शुरू किया।

लोगों ने आप की उच्च नैतिकता, बेहतरीन स्वभाव और सत्यता व निष्ठा का आप की नुबुव्वत से पहले ही अनुभव कर लिया था। लोग आप को पसंद करते थे। अतः लोग आप को "अमीन" कहते थे। अतः सब के सब आप को निर्णायक बनाने पर एकमत हो गये, जब काबे के पुनर्निर्माण के समय उनमें काले पत्थर को क़ाबे में लगाने को लेकर मतभेद उभर आया था।

और आप के सादिक़ और सत्यता धारी होने का प्रमाण यह है कि रोम के बादशाह हिरक़ल ने अबू सुफियान को जो इस्लाम के सब से बड़े दुश्मन थे और अब तक इस्लाम नहीं लाये थे पूछा: **"क्या उसके इस दावे से पहले उसे झूठा कहते थे आप लोग?"** अबू सुफियान के पास नहीं कहने के अलावा कोई चारा नही बचा। उसने पूछा: **"क्या उन्होंने कभी धोखा दिया?"** तो अबू सुफियान ने जवाब दिया: **"नहीं, और हम अभी उसके साथ ऐसी परिस्थिति में हैं कि हमें नहीं पता वो हमारे साथ क्या करने वाला है। और मेरे लिए इस से अलग कुछ कहने की क्षमता नहीं।"**[6]

मक्का वाले भी गवाही देते थे। क्योंकि उन्होने शांति के सिवा कुछ नहीं देखा था।

एक बार तो अबू जहल ने भी जो आप का कट्टर दुश्मन था, कहने लगा:

---

6. अल बुखारी, बदउल वह्य, 6, अस्सलात 1, असदक़ात 28, मुस्लिम, अल जिहाद, 74

"ए मुहम्मद, हम तुमको झूठा नहीं कहते। कभी आप से झूठ नहीं सुना। बस आप की लायी हुई चीज़ को झुठलाते हैं।"

इसी घटना के संदर्भ में यह आयत नाज़िल हुई:

"हम जानते हैं कि लोगों की बातों से आप को कष्ट पहुंचता है। लेकिन वो वास्तव में आप को नहीं झुठलाते। ज़ालिम अल्लाह की बात को झुठलाते हैं।" (अल-अनआम 33)[7]

आप के अमीन होने का प्रमाण यह किस्सा भी है जो सीरत जी किताबों में आया है, कि खैबर युद्ध के दौरान एक यहूदी चरवाहा मुसलमान होने के लिए आया। आप ने उसे कहा कि पहले यह बकरियों का रेवड़ मालिक के पास पहुंचा के आओ। फिर वापस आना।[8] हालांकि मुसलमानों को खाने का सख्त संकट का सामना था। इस से सख्त से सख्त हालात और परिस्थितियों में भी ईमान को बनाये रखने का उदाहरण मिलता है।

नबी के अख़लाक़ और चरित्र से हम वास्तविक लाभ प्राप्त कर सकते हैं, जब हम मेअराज (आसमानों की यात्रा) की बेहतरीन घटना से भी सबक़ ले सकते हैं, जब हज़रत अबू बकर ने केवल सुनकर आप को यह कहते हुवे सच्चा मान लिया था और अपना सदाबहार वाक्य कहा कि:

"यदि यह बात मुहम्मद ने कही है, तब तो यह सच्ची ही है।"

सच्चाई यह है कि रसूलुल्लाह के न्याय, दया और करुणा के जो अनगिनत और बेशुमार दृश्य हैं, उन्होंने क़यामत तक आने वाली दुनिया के लिए एक आदर्श स्थापित किया है।

---

7. अल वाहिदी, असबाबुन्नुज़ूल, तहक़ीक़: कमाल बिसयोनी जगलोल, बेरूत, 1990, पे. 219
8. इब्ने हिशाम, अससीरतुन्नबविय्यह, बैरूत दारुल फिक्र, 1937, जि. 3, 397 - 398

और जो भी न्याय प्रिय आंख आप के इकलौते चराग से निकल कर दुनिया को उज्ज्वल करने वाले प्रकाश को ध्यान पूर्वक देखेगी, उसके लिये स इस सत्यता को नकारना असंभव है, चाहे छोटे पैमाने पर ही हो।

आप की अज़मत और गौरव को गैर मुस्लिम न्यायप्रिय लोगों और बुद्धिजीवियों ने भी स्वीकार किया है। **थॉमस कारलेल** आप के बारे में कहते हैं।

"आप का आना अंधेरे से रौशनी का प्रकट होना था।"

इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका ने आप के बारे में लिखा है:

"जहां तक मुहम्मद पहुंचे, वहां पूरे मानव इतिहास में न कोई अन्य नबी पहुंचा, न कोई कल्याणकारी, और न ही कोई धार्मिक इंसान पहुंच सका।"

बी. स्मिथ लिखते हैं:

"निःसंदेह मुहम्मद इस दुनिया के सब से बड़े समाज सुधारक और कल्याणकारी थे। इस पर सर्वसम्मति है।"

इस सच्चाई को लेखक **स्टैनले लेनपोल** ने भी स्वीकार किया है:

"जिस दिन मुहम्मद (स.अ.व.) ने अपने शत्रुओं पर बड़ी जीत अर्जित की, उसी दिन खुद अपने ऊपर भी नैतिक गुणों की विजय प्राप्त की। अतः किसी को मारा या क़त्ल नहीं किया। और सब क़ुरैश और मक्का वासियों को पूर्णतः आम क्षमा दे दी।"

आर्थर गेलमान कहता है:

"हमने देखा कि मुहम्मद ने मक्का फतह होने के दिन बल और शक्ति होने और खतरनाक बदला ले सकने के बावजूद

अपने सब शत्रुओं को उनकी अतीत गलतियों से प्रभावित हुवे बिना माफ़ कर दिया। और अपने लश्कर को किसी प्रकार के खून बहाने से रोक दिया। किसी को कुछ नहीं कहा। अपनी शानदार दया का परिचय दिया। और इस पर अल्लाह का आभार व्यक्त किया।"

फलसफी **लो फीत** ने भी, जो 1789 ई. के फ्रेंच परिवर्तन की वैचारिक बुनियाद रखने वालों में शामिल था, जब मानवाधिकार क़ानून बनाते हुवे उसने हर क़ानून का अध्ययन किया और इस्लामी कानून को सर्वोत्तम पाया, तो अपने भाषण में कहा कि:

"ऐ मुहम्मद, आप कितने महान थे। आप न्याय के मामले में शिखर पर पहुंचे। कि आप तक न आज तक कोई पहुंच सका। और न आगे कोई पहुंच सकेगा।"[9]

यह है असल कमाल और गौरव, जिसको दुश्मन और गैर मुस्लिम भी स्वीकार करते हैं और उसकी पुष्टि करते हैं। अर्थात जिन लोगों ने आप को नबी नहीं माना, उन्होंने भी आप की बुद्धिमता और गौरव को स्वीकार किया था। क्योंकि आप की अजीब और अद्त जीवनशैली ने ज़िन्दगी के हर प्रश्न का उत्तर दिया था। और अपने भीतर नैतिक संपन्नता को संजोया था। इसने रौशनी को ढूंढने वालों के रास्ते में रौशनी फैलायी। इसी ने धरती के सभी इंसानों की शिक्षा का मार्ग प्रशस्त किया।

आप की जीवनशैली ऐसा प्रकाश था, जो कभी शांत नहीं हुवा। हर राहगीर के लिए रास्ते को रौशन किया। आप जैसे मार्गदर्शक की संसार में मिसाल नहीं मिलती।

9. कामिल मीरास, तर्जुमा अत्तजरीद अस्सरीह, अनकरा, 1972, जि. 9, पे, 289

आप के ज्ञान के हलके हर समुदाय और समाज के लोगों से भरे हुवे रहते थे। उसमें रंग, नस्ल, जात पात, क्षेत्र और प्रांत का कोई भेदभाव नहीं होता था।

उनमें आने की किसी को मनाही नहीं थी। यह कोई सामुदायिक सभा नहीं थी, बल्कि इंसानियत के आधार पर इसका आयोजन था। कोई भी इंसान इस में आ सकता था।

अब आप गौर करें कि मुहम्मद की किस किस ने पैरवी की। तो पायेंगे कि समाज के उच्च वर्ग में हब्शा का बादशाह नजाशी, कबीला हमीर का सरदार ज़िल केला, फेरोज़ देलमी, कबीला म'अन का सरदार फरवा, अम्मान से उबैद बिन जाफ़र और यमन से मरकबूद।

इन्हीं बड़ों के बराबर में बैठे हुवे मिलेंगे बिलाल, यासिर, सुहैब, खबाब, अम्मार आदि। और इनके साथ ही सुमैय्या, लबीना, ज़िनीरा, उम्मे उबैस, नहदिया आदि विधवाएं भी मिलेंगी।

आप के पास प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले लोगों में बहुत गहरी बुद्धि और अक्ल वाले लोग भी थे। और ऐसे लोग भी थे, जिन्होने मानवता की जटिल गुत्थियों को सुलझाया।

और कई ऐसे भी थे, जिन्होने बाद में देश संभाले और मुल्क चलाये। लोगों में इन्होंने शांति और सद्भाव को आम किया, उनको भाईचारे का अहसास कराया और लोगों को इन अधीन न्याय मिला।

द्वितीय भाग

- रसूलुल्लाह के उच्च नैतिक मूल्य
- सितारों के समान उच्च मूल्य

रसूलुल्लाह के उच्च नैतिक मूल्य

यदि हम इंसानियत के इतिहास पर गहन विचार करें तो हम पाएंगे कि कोई व्यक्ति आप के अलावा ऐसा दुनिया में नहीं आया, जिसपर इतना लिखा, पढ़ा, सोचा, कहा या सुना गया है, जितना आप पर इस तरह का शोध और विचार किया गया। यदि हम उन सब विशेषताओं को एक जगह लिखना चाहें, जिनसे आप का व्यक्तित्व बना, तो उसके लिए कई जिल्दें और भाग आवश्यक होंगे।

और वास्तविकता यह है कि इस्लामी शिक्षाओं ने[10] आप की जात से अपनी विभिन्न शाखाओं की बुनियाद में बहुत फायदा उठाया। इज्तिहाद और नए मामले हल करने के मामले में भी उन्होंने ऐसा ही किया।[11] और इसी कारण से शास्त्रों की विभिन्न शाखाओं ने रसूलुल्लाह के व्यक्तित्व के बारे में अत्यंत प्रयास किया।

---

10. यह मूलस्रोत जिन पर इस्लामी शास्त्रों और शिक्षाओं की बुनियाद रखी गयी है, क़ुरान और हदीस हैं, जो वह्य की व्याख्या बनते हैं। सुन्नत आप के हर कथन, वचन, कर्म, व्यवहार, आचरण आदि को कहते हैं, और जिस बात का क़ुरान ने स्पष्ट उल्लेख किया है, हम उसकी समीक्षा नहीं कर सकते।
11. इज्तिहाद का मतलब यह है कि जिन मामलों में क़ुरान और सुन्नत का स्पष्ट या सांकेतिक उल्लेख नहीं है, उनमें कोई आदेश निकालना। हालांकि यह भी क़ुरान और सुन्नत के प्रकाश में ही होगा।

पिछले लगभग चौदह सौ साल पर आधारित इस्लामी इतिहास में लिखी गयी सभी इस्लामी रचनाएँ केवल एक पुस्तक पवित्र कुरआन और एक वतक्ति रसूलुल्लाह की व्याख्या करने में लिखी गयी हैं।

हमारी अपनी मानवीय योग्यताओं और अधूरी क़ाबिलियत से अल्लाह के रसूल, जो खुदा का एक करिश्मा और चमत्कार हैं, की शख़्सियत और आप के वास्तविक गुणों को समझने में असमर्थ हैं। उदाहरणस्वरूप हम "मुहम्मदी नूर" को जैसा समझना चाहिए, वैसा समझने में असमर्थ हैं। क्योंकि हमारे मानवीय संसार के अहसास और बौद्धिक क्षमताएं आप के उच्च व्यक्तित्व को समझने में असमर्थ हैं।

हम यहां अपनी क्षमता के अनुसार आप के बेमिसाल व्यक्तित्व की कुछ झलक और कुछ नमूने प्रस्तुत करने का प्रयास करेंगे, जिनसे एक भंडार भरा हुआ है।

आप के चेहरे, चरित्र और नैतिक गुणों की सुंदरता

अल्लाह के रसूल ऐसा सुंदर व्यक्तित्व थे, जिस जैसा कभी बनाया ही नहीं गया। हम उसकी सम्पूर्ण व्याख्या कभी कर ही नहीं सकते।

इसी वजह से इमाम क़ुरतबी कहते हैं:

"अल्लाह के रसूल का पूरा रूप और सुंदरता सामने लायी ही नहीं गयी, क्योंकि यदि ऐसा किया जाता तो आप के सहाबा उसको देख भी नहीं सकते।"[12]

अल्लाह के रसूल के अधिकांश सहाबा आप को सम्मान और आदर के कारण भरपूर तौर से देख भी नहीं सकते थे, कि सैराब

12. अली यारदम, सीरतु रसूलीना, इस्तांबुल, 1992, जि. 4, 199

हो सकें। हालांकि आप हमेशा उनके बीच में रहा करते थे। अतः रिवायात किया गया है कि नबी जब मुहाजिर और अंसार सहाबा के सामने तशरीफ़ लाते और निकलते, जब कि सहाबा बेठे रहते और उनमें अबू बकर और उमर भी होते तो हज़रत अबू बकर और उमर ही आप को सही से देख पाते थे। आप उनको देखते और वे आप को देखते। आप उनकी ओर देख कर मुस्कुराते और वे आप की ओर देख कर मुस्कुराते। (तिर्मिज़ी: मनाकिब, 16/3668)

मिस्र के विजेता अमर बिन आस ने यही बात एक मौके पर कही:

"अल्लाह के नबी मुझे सब से पसंदीदा और महबूब थे। किंतु मैं आप की ओर अत्यधिक सम्मान के कारण नज़र भर देख नहीं सकता था। आप कैसे थे, मुझे कोई पूछे तो मैं बता नहीं सकता।" (मुस्लिम, ईमान, 192, अहमद 4, 194)

आप का चेहरा, जो आस पास वालों पर शांति और अम्न का संचार करता था, बहुत ही रौशन और चमकदार था।

चुनांचि एक सहाबी अब्दुल्लाह बिन सलाम जो यहूदियों के बड़े आलिम भी थे, इस्लाम लाने से पहले जब वह मदीने पहुंचे तो आप को देख कर कहने लगे कि:

"यह चहरा किसी झूठे का हरगिज़ नहीं हो सकता।" (तिर्मिज़ी, तिर्मिज़ी, क़यामत, 42/2485, इब्ने माजा, अतइमह, 1, अहमद, 5/451)

आप के चेहरे का सौन्दर्य, रौब, प्रकाश और खूबसूरती ऐसी थी कि आप के रसूल होने पर और किसी दलील और तर्क की आवश्यकता ही नहीं थी।

आप को जब कोई चीज़ नापसंद होती तो आप का चेहरा बदल जाता था। और जब कोई चीज़ पसंद आती, तब भी चेहरे से प्रकट हो जाती थी।

आप के बदन से शर्म, हिम्मत और साहस प्रकट होता था। जहां तक दिल के नरम होने की बात है तो उसके उल्लेख की कोई ज़रूरत ही नहीं है।

आप के चेहरे से सौन्दर्य का प्रकाश झलकता था। बात में निडरता और निरंतरता, हर अमल में इच्छा, बात से संबोधन की विशेषता और गुणवता टपकती थी।

आप फालतू नहीं बोलते थे। आप की बात बौद्धिक गुणों से भरपूर होती थी। आप के शब्दकोश में इधर उधर की बात के लिए कोई शब्द नहीं था। आप अत्यंत सरल और हर एक के समझ में आने वाली बात करते थे।

आप बहुत नरम और सीधे थे। आवाज़ से नहीं हंसते, बल्कि केवल मुस्कुराते थे। आप को जो पहली बार देखता, डर से उसका रंग बदल जाता। और जो साथ रहता, आप का आशिक़ हो जाता। जी जान से मुहब्बत करता।

आप बड़े लोगों का उनके मर्तबे के अनुरूप सम्मान करते थे। अपने रिश्तेदारों का अन्य लोगों की तुलना में अधिक ख्याल रखते थे, किंतु आम इंसान को भी खूब इज़्ज़त देते थे।

आप अपने सेवकों और खादिमों का बड़ा सम्मान करते थे। जो आप खाते, उनको खिलाते और जो आप पहनते, उनको पहनाते थे। जिस तरह आप नरम दिल और सादे इंसान थे, इसी प्रकार बहुत बहादुर और साहसी भी थे। इसी तरह मौका पड़ने पर लोगों का हाथ भी बटाते थे।

आप लोगों को कितना भेंट करते थे, हम उसका ठीक ठीक अनुमान भी नहीं लगा सकते। आप ऐसे देते थे, जैसे कोई ऐसा शख़्स हो, जिसे गरीबी का भय नहीं है। हज़रत जाबिर इस बात को बताते हुवे कहते हैं:

"ऐसा कभी नहीं हुवा कि आप से किसी वस्तु की मांग की गयी हो, और आप ने न कह दिया हो।" (मुस्लिम, फ़ज़ाइल, 56)

आप उच्च नैतिकता और चरित्र के धनी थे। अपने संबंध और रिश्तेवालों से मिलने जाते। सब से अत्यंत अच्छा व्यवहार करते। बुरी आदतों से आप हमेशा बचते थे। आप का फरमान है:

"मोमिन के अच्छे अखलाक से अधिक भारी कोई चीज़ क़यामत के दिन तराजू में नहीं होगी। अल्लाह किसी बेशर्म बुरे आदमी को पसंद नहीं फरमाते।" (तिर्मिज़ी: बिर्र, 62/2002)

आप वचन और वादे के सच्चे, बात के पक्के थे। बहुत होशियार और समझदार थे। हर समय गहन विचार और गहरी सोच में रहते। कम बोलते और जब बोलते तो बात साफ और पूरी करते। आप को अर्थ से भरपूर बातें प्रदान की गयीं। आप की बातों को गिना जा सकता था। बात कम हो या ज़्यादा, कभी बेकार न बोलते। आप बहुत सादा और अच्छे नरम स्वभाव के आदमी थे। अपने लिए कभी गुस्सा नहीं होते। मगर जब हक़ अपनी जगह से हटा दिया जाता तो आप को तब तक सख़्त गुस्सा रहता, जब तक हक़ अपनी जगह न कर दिया जाता। और वापस आप शांत हो जाते। आप कभी अपने लिए किसी से नहीं झगड़े। किसी से झगड़ा नहीं करते।

किसी के घर में बिना अनुमति नहीं प्रवेश करते। खुद अपने घर में जब जाते तो उस समय को तीन भागों में बांट देते। अल्लाह की इबादत के लिए, परिवार के लिए और स्वयं अपने लिए। और अपने

समय को हर शख्स के साथ गुज़ारते थे। आम हो या खास। आप का दिल हर व्यक्ति के लिए खुला रहता था।

आप मस्जिद में सभी जगह बैठते। किसी खास स्थान पर न बैठते, ताकि किसी एक स्थान पर बैठने की आदत को रोका जाए। क्योंकि आप स्थानों और जगहों में पवित्रता पैदा करने के खिलाफ थे। इसी प्रकार मस्जिद में एक विशेष ढंग और शैली को अपनाने से भी मना करते, ताकि अभिमान और घमंड का कारण न बने। आप जब मस्जिद में जाते तो जहां जगह खाली मिलती, बैठ जाते। और लोगों से भी ऐसा ही करने को कहते।

आप से जब कोई किसी काम को करने या सहयोग की मांग करता तो आप जब तक उसको पूरा नहीं कर देता, चैन नहीं लेते। और यदि उसकी मदद नहीं कर सकते, तो भली बात ही कह कर उसका दिल खुश करते। आप लोगों के दर्द और दुख को साझा करते। आप के पास हर समय हर तरह के लोग जमा रहते। चाहे उनका मुकाम और सामाजिक स्तर कुछ भी हो। मालदार, गरीब, शिक्षित, अशिक्षित आदि। आप की सभाएं, सहनशीलता, ज्ञान, शर्म, सब्र, विश्वास और ईमानदारी के संचार का साधन हुवा करती थीं।

किसी भी आदमी को उसकी किसी बात पर या ऐब पर टोकते नहीं थे। जब किसी को कुछ कहना होता तो इशारों में और ऐसे उत्तम तरीके से कहते कि उसे बुरा नहीं लगता। जिस खामी को कोई आदमी छुपाता, आप कभी उसको ज़ाहिर नहीं करते। और लोगों को भी किसी के पीछे लगने से मना करते।

कायनात का अभिमान (स. अ. व.) हमेशा सवाब की बात कहते। आप की सभाएं मुहब्बत और प्रेम का नमूना हुवा करतीं। आप जैसे ही बात करते, तो आप के आस पास के लोग कान लगा कर ऐसे सुनते, जैसे उन पर जादू कर दिया गया है। आप की संगत

में बैठने वालों पर पूर्णतः शिष्टाचार और संजीदगी व्याप्त हो जाती। जैसा कि उस हालात को वे खुद ही कहते हैं:

"जैसे हमारे सिरों पर परिंदे बैठे हों।" (अबू दाऊद, सुन्नह, 23-24/4753)

आप के प्रति सहाबा के आदर भाव और सम्मान का यह आलम था कि बहुत सख्त ज़रूरत पर भी वे रसूलुल्लाह को देखते नहीं थे। यही वजह थी कि वे किसी देहाती के आने का इन्तिज़ार करते थे कब वे आएं और रसूलुल्लाह से कुछ पूछें तो हम को भी कुछ सीखने का मौका मिल जाये।

आप इखलास का एक जीता जागता सबूत थे। कभी ऐसी नहीं कहते, जो आप के दिल में न होती। आप के अमल और अखलाक क़ुरान की ज़िंदा व्याख्या थे। आप कभी अपने अलावा को किसी ऐसी बात का हुक्म नहीं देते, जो आप खुद न करते हों।[13]

आप की सादगी और तवाज़ू

हालांकि आप थोड़ी सी अवधि में वहां तक पहुंचे, जहां तक कोई दुनिया का इंसान न पहुंच सका। पूरी इंसानियत के दिलों को एक शिक्षक और प्रशिक्षक के तौर पर जीत लिया। दुनिया की नेअमत की ओर कभी नहीं देखा। अपनी उसी पुरानी सादगी पर बरक़रार रहे। पहले की भांति अब भी अपने उसी ईंटों से बने कच्चे कमरे में ही रहे। टाट की चटाई पर सोते। सादा वस्त्र पहनते। सादा खाना खाते। जब कभी खाने को कुछ न पाते, तो खुदा का शुक्र करते और पेट पर पत्थर बांध लेते। हालांकि अल्लाह आप के सब गुनाह माफ़ कर

13. देखिये: इब्ने साद, तबक़ात अल कुबरा, बैरूत दार ए सादिर, जि. 1, 121, 365, 422, 425

दिए थे, फिर अल्लाह की इतनी इबादत करते कि पांव पर सूजन आ जाती।

आप हर गरीब से हमदर्दी रखते और अनाथ और जिसका कोई न होता, उसके साथ बैठते। और इतनी महानता के होते हुवे भी आप समाज के न्यूनतम व्यक्ति के साथ रहते। उनके सामने अपनी दया और करुणा के बाजू फैलाये रहते।

और फतह मक्का के दिन जब आप को लोगों ने सब से अधिक शक्ति और बल के साथ देखा था, तो एक आदमी आप के पास आया और आप से फरमाया कि ऐ अल्लाह के रसूल, मुझे इस्लाम सिखाइये। आप उसे इस्लाम सिखाने लगे और अपनी उस हालत को भी याद दिलाया जब आप मक्के में कमज़ोर थे और उस से कहा:

"अपने ऊपर रहम खाएं। क्योंकि मैं कोई बादशाह नहीं हूँ, बल्कि मैं एक औरत का बेटा हूँ जो मांस के सूखे टुकड़े खाती है।"[14]

इस से आप की अपने न्यूनतम स्तर के आदमी के साथ तवाज़ु और सादगी का पता चलता है।

उसी दिन आपने दोस्त और साथी अबू बकर को भी कहा, जब आप अपने बूढ़े पिता को लेकर आप के पास आये:

"बड़े मियां को वहीं क्यों न रहने दिया। मैं ही खुद उनके पास चल कर हाज़िर हो जाता।"[15]

आप सदैव अपने आप को कमज़ोर समझते। और कहते:

"मैं तो तुम्हारे जैसा इंसान ही हूँ।" (कहफ़: 110)

14. देखिये: इब्ने माजा, अलअतइमा, 30, तबरानी, मुअजम अल अल अवसत, 2, 64
15. देखिये: अहमद, जि 6, 349, हैसमी, जि. 6/ 164, इब्ने साद, जि. 5, 451

आप अपने आप को हमेशा रसूलुल्लाह के साथ अब्दुल्लाह (अल्लाह का बन्दा) कहते और डरते कि कहीं आप की उम्मत भी अन्य नबियों की क़ोमों की तरह गुमराही में न पड़ जाए।

जैसे ही आप अत्यधिक सम्मान देखते तो कहते:

"मुझे इब्ने मरयम की तरह न चढ़ाओ। मैं तो अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल हूँ।" (हैसमी, 9/21)

आप के पास एक बड़ा थाल था, जिसे "गर्रा" कहा जाता था। जिसे चार आदमी उठाते थे। जब दोपहर का समय हुवा और उसे खाने के लिए लाया गया तो सब लोगों ने भी उसके इर्द गिर्द बैठ कर खाया और आप ने भी पेट भर कर खाया और प्राकृतिक अवस्था में बैठ गए। एक देहाती ने कहा:

यह कैसी बैठक है?" आपने फरमाया:

"**अल्लाह ने मुझे बन्दा बनाया है। कोई ज़ालिम और घमंडी इंसान नहीं बनाया।** फिर आपने फरमाया: **चारों ओर से खाओ। बीच को छोड़ दो। बरकत बीच में है।" (अबू दाऊद, अतइमा**, 17/3773)

इसका निष्कर्ष यही निकलता है कि आप ने जीवन में कभी भी घमंडी और अहंकारी व्यक्ति की तरह कभी व्यवहार नहीं किया।

एक और मौके पर फरमाया:

"भलाई करो। क़रीब रहो। और खुशख़बरियाँ दो। क्योंकि किसी का अमल उसे जन्नत में नहीं ले जाएगा।" सहाबा ने ताज्जुब से पूछा: **"आपको भी नही, ऐ अल्लाह के रसूल?"**

आप ने कहा: **"मुझे भी नहीं। हां अल्लाह की रहमत हो जाये तो अलग बात है।"** (बुख़ारी, रिक़ाक, 18, मुस्लिम, मुनाफ़िक़ीन, 71, 72, इब्ने माजा, ज़ुहद, 20, दारमी, रिक़ाक, 24)

इसी तरह एक अन्य मौके पर आपने लोगों को चेतावनी देते हुवे बताया कि जिसने तकब्बुर और घमंड का लिबास पहना, तो अल्लाह उसे क़यामत के दिन अपमान और ज़िल्लत का लिबास पहनाएंगे। और इसी संदर्भ में फरमाते हैं:

"जिसने भी अहंकार और घमंड का वस्त्र अपनाया और पहना, तो अल्लाह उसकी तरफ कयामत के दिन देखेंगे भी नहीं" (बुख़ारी, लिबास, 1/5)

और फ़रमाया: **"जिसनेद दुनिया में शोहरत का लिबास पहना, अल्लाह उसे जिल्लत और अपमान का लिबास पहनाएंगे। तथा उसमें आग लगाएंगे।"** (इब्ने माजा, लिबास, 24)

आप अपने युद्ध में प्राप्त में होने वाले माल तक को, जो आप का हिस्सा होता था, बराबर बांटते थे। सदैव सादा जीवन जीते थे। और ज़ाहिरी दृष्टिकोण से अपनी उम्मत के न्यूनतम आदमी की ज़िन्दगी जीते थे।

रसूलुल्लाह की दान करने की आदत

आप अपने आप को हमेशा खर्च करने पर नियुक्त कहते थे। और फरमाते: "देने वाला और असल मालिक तो अल्लाह है।"

हज़रत सफवान बिन उमैय्यह इस्लाम लाने से पहले, जब वह कुफ्फार के सबसे के बड़े सरदार थे, एक बार हुनैन और ताइफ़ में रसूलुल्लाह के साथ थे। जंग के बाद आप जिअराना नामी जगह में थे, तो सफवान को लेकर रसूलुल्लाह गनीमत के माल को देखते हुवे

फिर रहे थे, तो सफवान की नज़र एक रेवड़ पर पड़ी, जिसमें कई जानवर भेड़, बकरियां आदि थे। सफवान की नज़र उन पर टिक गयी। रसूलुल्लाह ने उनको देखा तो आप ने उनसे फरमाया:

सफवान, **क्या तुमको यह पसंद हैं?** उन्होंने कहा हां।

तो आप ने फरमाया: **चल अब यह सब तेरी।** तो आप ने फौरन कहा कि इतना बड़ा और अच्छा दिल किसी अन्य इंसान का नहीं हो सकता। और फिर कलिमा पढ़ कर मुसलमान हो गए।[16]

और जब अपने लोगों में वापस हुवे तो उनसे कहा:

ऐ मेरे लोगो। इस्लाम ले आओ। क्योंकि मुहम्मद ऐसे आदमी की तरह देता है, जिसे खत्म होने और गरीब हो जाने का कोई डर नहीं हो।" (मुस्लिम, फ़ज़ाइल, 57, 58, अहमद, 3/107)

एक और व्यक्ति आपके पास आए और कोई चीज मांगी। आपके पास वह चीज नहीं थी तो कुछ देर रुक कर आपने कर्ज लिया और उसे दे दिया। फिर जल्दी ही क़र्ज़ लौटाने का वादा किया।[17]

आप अपने दादा इब्राहिम की तरह थे, जो मेहमानों का बड़ा आदर करते थे। और कभी उन्हें अकेला नहीं खाने को कहते। मरने वाले का क़र्ज़ खुद अदा करते। और मक़रूज़ का जनाज़ा नहीं पढ़ाते। आप की एक मशहूर हदीस है:

"दानदाता हमेशा अल्लाह और जन्नत से निकट रहता है। लोगों से क़रीब जहन्नम से दूर होता है। और कंजूस अल्लाह,

16. वाकिदी, अल मगाज़ी, बेरूत 1989, जि. 2, पेज. 855, 855
17. हैसमी 10/242, साथ ही देखिये: अबू दाऊद, खिराज, 33, 35/2055, व इब्ने हिब्बान सहीह, बैरूत 1993, जि. 14/262, 264

जन्नत और लोगों सब से दूर और जहन्नम के करीब होता है।" (तिर्मिज़ी, बिर्र, 40/1961)

एक दूसरी हदीस में फरमाया:

"दो **आदतें कभी मुसलमानों में एक साथ नहीं हो सकती। कंजूसी और बुरा चरित्र।"** (तिर्मिज़ी, बिर्र, 41/1962)

रसूलुल्लाह का तक़वा

आप सबसे अधिक अल्लाह से डरने वाले थे। और अल्लाह से मांगा करते थे। अतः फरमाते:

"ऐ अल्लाह, तू मेरे नफ़्स को अपना डर अता फरमा। और उसे साफ फरमा। तू नफ़्स को सब से अच्छा साफ करने वाला है। तू ही उसका मालिक और मौला है। (मुस्लिम, ज़िक्र, 73)

और यह भी फरमाते:

"**ऐ अल्लाह मुझे माफी, हिदायत, तक़वा और इज़्ज़त अता फरमा।"** (मुस्लिम, ज़िक्र, 72)

तक़वे के कारण ही फकीरों की तरह जीवन बिताया। हज़रत आयशा फरमाती हैं:

"आप के खानदान ने आप के दुनिया से तशरीफ़ ले जाने तक कभी तीन दिन लगातार सालन के साथ रंगी हुई गेहूं की रोटी न खाई।" (बुखारी, अयमान, 22, मुस्लिम, ज़ुहद, 2-22, इब्ने माजा, 84)

आप अपनी उम्मत को सदैव अल्लाह से डरने और तक़वा अपनाने पर उभारते थे। आप ने फरमाया:

"निःसंदेह मुझ से क़यामत में निकटतम लोग वे होंगे जो तक़वा इख्तियार करेंगे। चाहे जो हों और जहां के हों।" (अहमद, 7, 235, हैसमी, 9/22)

आप फरमाते: **"निःसंदेह मेरे सब से क़रीब लोग अल्लाह से डरने वाले हैं।"** (अबू दाउद, फ़ितन, 1/4242)

आप यह भी फरमाते:

"हमेशा अल्लाह से डरो। और बुराई के बाद भलाई करो। और लोगों के साथ अच्छा बर्ताव करो।" (तिर्मिज़ी, बिर, 55/1987)

आप ने वास्तविक तक़वा प्राप्त करने का तरीका और उपाय बताया:

"कोई आदमी उस समय तक तक़वे वाला नहीं हो सकता, जब तक वो बिना हर्ज वाले कामों को हर्ज वालों के लिए न छोड़ दे।" (तिर्मिज़ी, क़यामत, 19/2451, इब्ने माजा, ज़ुहद, 24)

चूंकि आप किसी इंसान में फ़र्क़ और अंतर नहीं करते थे, आप ने फरमाया:

"किसी अरबी को गैर अरबी पर और गोरे को काले पर कोई वरीयता नहीं, सिवाए तक़वे के।" (अहमद, 5/411)

यहां तक़वे का एक अच्छा उदाहरण है, जिसे अल्लाह के नबी ईसा (अले°) ने बयान फ़रमाया। एक व्यक्ति ने उन के पास आकर कहा:

"ऐ भलाई एवं खूबी के अध्यापक, मुझे वह चीज सिखाएं जो मुझे पता ना हो और आप जानते हों। जिस से मुझे लाभ मिले और आप को नुक्सान न पहुँचे।" ईसा ने पूछा: **वह क्या चीज है।"** इस व्यक्ति ने कहा: "अल्लाह की राह पर कैसे सही ढंग से निष्ठा (तक़्वा)

करना है?" हजरत ईसा (अले°) ने निष्ठा एवं तक्वा की अभिव्यक्ति अच्छी तरह स्पष्ट करके बताया: "**बहुत आसान है, अल्लाह से सच्चे दिल से प्यार करते रहो और उस के लिए जितना हो सके, काम करते रहो. जैसे अपने नफस पर तुम रहम करते हो, अपने जैसे मनुष्यों पर भी रहम करो।,,** उस व्यक्ति ने कहा: "ऐ खैर और खूबी के मुअल्लिम, मेरे हम जिंस कौन हैं?" ईसा (अले°) ने कहा: "**आदम की सब औलाद। जिस चीज़ की अपने लिए (अनुमति) नहीं देते हो, दूसरों के लिए भी उसकी अनुमति ना दिया करो। तब तुममें खुदा की निष्ठा है।"**[18]

एक दिन उमर इब्न खत्ताब ने उबै इब्ने कअब से कहा: **"तक़वा क्या है?"** उबै बिन कअब ने जवाब दिया:

"ऐ मुसलमानों के अमीर, क्या आप कभी कांटो वाली राह से नहीं गुज़रे? उमर ने कहा: **"जरूर, गुजरा हूँ"** उबै ने पूछा: **"कैसे गुजरे?"**

उमर ने कहा: "**दामन समेट कर ध्यान रख के।"**

उबैद ने कहा: **,,यही है निष्ठा (तक़्वा)।,,**[19]

यही परहेजगार लोग थे कि रसूल (सल्ल°) के दिल में सब से ज्यादा उन का स्थान था।

मुआज़ इब्न जबल कहते हैं कि जब पैगम्बर (सल्ल°) ने उन को यमन भेजा, उन के साथ घर से निकले। जब कि मुआज इब्न जबल सवारी से चल रहे थे, पैगम्बर (सल्ल°) पैदल चलते हुवे उन को वसीयत करते थे:

18. अहमद, जुहद, प्रकाशन अज्ञात, तिथि अज्ञात, पेज 59
19. देखिये: इब्ने कसीर, तफ़सीरुल क़ुरान अल अज़ीम, बैरूत 1988, जि. 1, 42

,,ऐ मुआज, शायद तू और मैं एक दूसरी बार न मिलें और शायद मस्जिद और मेरी कब्र के पास गुजर करे।,, मुआज पैगम्बर (सल्ल°) की बातों से दुखी होकर पैगम्बर (सल्ल°) की जुदाई की कल्पना से जोर से रोने लगे। पैगम्बर (सल्ल°) मदीना के निकट मुआज की ओर रूख करके कहा:

"निःसंदेह मेरे सब से क़रीब लोग परहेजगार लोग है, कोई भी हो, कहीं भी हो।"[20]

रसूल की परहेज़गारी

बहुत सारे राज्य एवं क़ौमें खुशी से पैगंबर (सल्ल°) के नेतृत्व में आयीं। अरब द्वीप पूरी तरह उन के कब्जे में था। जब कि उन के पास बड़ी शक्ति, दौलत और सलतनत थी, लेकिन उन की ज़िन्दगी सादी थी और कहते थे: ,,मैं अपने लिए किसी चीज का मालिक नहीं हूं,,। बल देकर कहते थे कि सब चीज अल्लाह की इच्छा और उस की शक्ति से है। समय-समय पर उन के हाथ में बहुत माल और धन रहता था, कीमती और महँगी चीजों से भरे काफिले हर तरफ से मदीना में आते थे, पर वे सब को गरीबों और मिस्कीनों में बाँटते थे और खुद सादगी से रहते थे और कहते थे:

"अगर मेरे पास उहुद पहाड़ की चोटी तक धन और संपत्ति भी हो तो इससे मैं खुश नहीं होता हूं, कि ऐसे तीन दिन रहूँ जबकि मेरे पास एक दिनार है। लेकिन वह दीनार जो कर्ज है मेरे पास उस पर खर्च करने हेतु रख लूं (बुखारी, अत्तमन्नी, 2, मुसलिम, जकात ,31)

20. देखिये: अहमद, जि. 5/ 235, हैसमी, मजमउज़वाइद, बैरूत 1988, ज़ि. 9, 22

कभी काफी दिन गुजरते थे, पर रसूल (सल्ल°) के घर में कुछ खाने को नहीं रहता था। वे कई बार भूखे पेट सोते थे। (अहमद, 6।217; इबने सादी, 1।405)

अनस इब्ने मालिक कहते हैं: "में पैगंबर (सल्ल°) के पास आया। आप एक चटाई पर सोते थे।आप के सिर के नीचे एक तकिया था। उस समय उमर के साथ एक सहाबी पैगंबर के पास आऐ। रसूल (सल्ल०) ने करवट बदल ली। उमर ने देखा चटाई ने पैगंबर (सल्ल°) के बदन को जख्मी कर दिया। जब उमर ने पैगंबर (सल्ल) को इस हाल में देखा तो रोने लगे।

पैगंबर (सल्ल°) ने उनसे पूछाः ,**अरे, उमर, क्यों रो रहे हो?**,

उमर ने कहाः "अलाह की कसम में जानता हूँ कि क़िसरा और कैसर के मुकाबले अल्लाह के पास आप की कद्र ज्यादा है। वे दोनो इस दुनिया में राहत से रहते, लेकिन आपका हाल यह है?। पैगंबर (सल्ल°) ने कहाः

,**क्या तुम राजी नहीं हो कि उन लोगों के लिए यह दुनिया हो और हमारे लिए आखिरत हो,** उमर ने कहाः ,जी हाँ,। पैगंबर (सल्ल°) ने कहाः **"ऐसा ही है, सचमुच।"**[21]

पैगंबर (सल्ल°) अपने संबंध को इस दुनिया से ऐसे बताया:

"यह दुनिया ना मेरे लिए है ना मैं इस दुनिया के लिए। मैं इस दुनिया में एक मेहमान की तरह हूँ कि पेड़ के नीचे आराम करके चला जाता हूँ।,[22]

---

21. अहमद, जि. 3, 139, तबरानी, जामेअ कबीर, तहक़ीक़, हम्दी अब्दुल मजीद सल्फी, बैरूत दारुत्तुरास इस्लामी, 10, 162
22. तिर्मिज़ी, जुहद, 44/2377, इब्ने माजा, जुहद, 3, अहमद, जि. 1, 301

यह है जिन्दगी और उस का दैनिक जीवन।।

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) डरते थे कियामत के दिन में इन चीज़ों (नेमतों) से और अल्लाह से हमेशा दुआ करते थे:

,**अल्लाह मुझे हमेशा गरीबी की हालत में रखिए और गरीबी के हाल में ही मौत दीजिएगा, और कियामत के दिन में मुझे गरीबों के साथ उठाईएगा।** (तिरमिजी, 37-2352,- इबने माजा, अल – ज़ुहद 7)

हालांकि सब पैगंबर (सल्ल॰) जानते थे कि वे अल्लाह के अमन में हैं और अवश्य जन्नत में दाखिल होंगे। किंतु वे यह भी जानते थे कि उन से भी दूसरे लोगों की तरह पूछताछ होगी कि जो संदेश हमने तुम को दिया था, वह ठीक ठीक पहुंचा दिया? और जो अल्लाह ने नेअमतें दीं, उन सारी नेअमतों का शुक्र कर लिया या नहीं? इसी के बारे में खुदा फरमाते हैं:

"हम उन लोगों से अवश्य पूछेंगे, जिन के पास रसूल (सल्ल॰) भेजे गये थे, और हम रसूल से भी अवश्य पूछेंगे।" (अअ्राफ-6)

सच्चाई यह है कि एहसान, तक़वा और परहेज़गारी जैसे विभिन्न शब्द लगभग एक ही मायना का फायदा देते हैं। इन सब अर्थों में समान चीज़ जो एक सूफी गुण पैदा करती है, वह अपने नफ़्स और आत्मा को इच्छाओं से रोकना है। इसी से आत्मिक गुनवताएँ सम्पन्न होती हैं। और इंसान **"दिल की सफाई और आत्मा की स्वच्छता"** तक पहुंचता है। यही **"शांत और सलाम हृदय"** का अभिप्राय है, जिसका अल्लाह अपने बंदे से तक़ाज़ा करते हैं। और इसी का इस आयत में ज़िक्र है:

كَذٰلِكَ وَاَوْرَثْنَاهَا بَنِي اِسْرَآئِلَ

"मगर जो साफ और सही दिल लेकर आये।" (शुअरा - 89)

पैगंबर (सल्ल°) की नरमी

रसूल (सल्ल°) का दिल बहुत नरम और नाजुक था। एक दिन आप ने देखा कि एक व्यक्ति ने जमीन पर थूक किया। आप ने उस व्यक्ति को कुछ नहीं कहा, बल्कि स्वंय वहां रुके, और आपके साथी ने जल्दी से उस के थूक को मिट्टी से बंद किया। इस के बाद आप अपने रास्ते चले गए।

पैगंबर (सल्ल°) उस व्यक्ति से बहूत खुश होते थे जो स्वंय की देखभाल करते थे, आप उसे बहुत पसंद करते थे। जो इन्सान गंदे कपड़े पहनते थे उससे बहुत नाराज होते थे। उसे पसंद नहीं करते जो आदमी लंबे बाल और बहुत ज़्यादा लंबी दाढ़ी रखते थे। एक दिन पैगंबर (सल्ल°) मस्जिद में बैठे थे कि एक व्यक्ति लंबे बाल और दाढ़ी में मस्जिद में आया। पैगंबर (सल्ल°) ने उस का इशारे से बाहर निकलने को कहा, वह व्यक्ति जल्दी से जान गया कि उस के बाल और दाढ़ी के लिए बोला। वह मस्जिद से बाहर गया और थोड़ी देर बाद वह पैगंबर (सल्ल°) के ख्वाहिश पूरा करके वापस आया। पैगंबर (सल्ल°) ने उस को बोला:

,यह अच्छा नहीं है कि जैसे शैतान लंबे बाल और दाढ़ी रखते थे, हम भी रखें।[23]

एक बार उन्होंने एक मर्द को देखा उस के बाल परेशान और लंबे थे। पैगंबर (सल्ल°) ने फ़रमाया:

23. मूअता, अशअर, 7 बैहकी, शुअब-अल-इमान, बेरूत,1990, जि, 5, पेज 225

"क्या इस मर्द के पास कोई सामान नहीं है कि अपने बाल और दाढ़ी को ठीक करे।, दूसरे जगह में उन्होंने देखा एक मर्द गंदे कपड़े पहना हुवा था, आप ने फ़रमाया:

,इस मर्द को किया हो गया कि अपने कपड़े नहीं धोता।" (अबु दाऊद, अल-लीबास, 14-4026 ,अन नसाइ, अज-जीनत, 60)

एक दिन एक मर्द पैगंबर (सल्ल°) के पास गंदे कपड़े पहनकर आया। पैगंबर (सल्ल°) ने उससे पूछाः **,तुम्हारे पास माल हैं**, मर्द ने बोलाः हाँ, उन्होंने फिर पूछाः **"कैसा माल,** मर्द बोलाः ,अल्लाह ने मुझे सब दे दिया, घोड़ा, बकरी और ऊँट।, पैगंबर (सल्ल°) ने कहाः

,अगर खुदा ने तुमको इतना माल दिया है, तो जरूर एह सारी चीजें तुम से दिखाई देना और ज़ाहिर होना चाहिए।" (अबु दाऊद अल-लीबास, 14-4063, अन नसाइ,अज-जीनत, 45, अहमद, ज. 4-147)

दूसरे जगह में आप ने कहा:

"अल्लाह, यह पसंद करेगा कि जो नेअमत दी है, वह इन्सानों पर देखे।" (तिरमिजी, अल-अदब, 54-2819. अहमद, 11, 311)

अल्लाह के पैगंबर (सल्ल°) नाजुक, भले और नरमदिल आदमी थे। जब एक धमकाने वाले ने बार-बार उन को चिल्लायाः

"ऐ मोहम्मद। ऐ मोहम्मद।" हर बार उस के अशिष्टता के जवाब में उन्होंने नरमी से उत्तर दिया: **"आप क्या चहते हैं?"**[24]

और एक दूसरी बार भी कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) अपने दया भाव, करुणा और उच्च चरित्र के कारण अल्लाह के पैगंबर (सल्ल०) अपने मेहमानों की खुद सेवा करते और उनका सम्मान करते थे।" (बेहकी, शुअब, 6-518, 7-436)

24. मुस्लिम, नज़र, 8, तिर्मिज़ी, ज़ुहद 50, अहमद जि. 4, 239

जब आप बालावस्था में थे, तो आप ने कभी किसी से गम्भीर लड़ाई झगड़ा नहीं किया। और चूंकि आप बहुत ऊंचे चरित्र और स्वभाव के धनी थे, यही कारण है कि आप ने अपने घर वालों को ऊंचे चरित्र और नैतिक मूल्यों का प्रशिक्षण दिया था।

आप के नवासे हज़रत हसन का हाल इस पर सबसे उत्तम और खूबसूरत सबूत है:

"रिवायात किया गया है कि हज़रत हसन बैतुल्लाह का तवाब (काबे की परिक्रमा) कर के मक़ाम ए इब्राहीम पर आए। दो रकअत पढ़ी और वहां सिर रख कर रोने और दुआ करने लगे:

"ऐ अल्लाह, तेरा गुलाम, तेरा बन्दा, तेरा फकीर तेरे दर पर आया है। यह कुछ देर कहा और फिर वहां से चले गए। चलते हुवे कुछ ऐसे गरीबों के पास से गुजरे **जिनके पास रोटी का टुकड़ा था। आप ने उनको सलाम किया। उन्होंने आप को खाने के लिए बुलाया। आप ने कहा:**

"अगर यह सदक़ा न होता तो मैं अवश्य आता।" फिर फ़रमाया:

"हमारे साथ मेरे घर चलो" लोग चले। आप ने उनको खाना खिलाया, कपड़ा पहनाया और कुछ राशि दिरहम देने का आदेश दिया।"[25]

यह दया, करुणा और प्रेम आम मख़लूक़ सृष्टि के साथ व्यवहार करते समय मख़लूक़ के लिए ख़ालिक़ और बनाने वाले के चरित्र के रंग में रंग जाने का उत्तम उदाहरण है।

25. देखिये: अबशीही, मुस्ततरिफ, बैरूत 1986, जि 1, 31

सैयदना हज़रत हसन (रज़ि.) की एक दूसरी मिसाल इसी बात को स्पष्ट करती है। अतः हज़रत हसन एक दिन मदीने की किसी बाग के पास से गुज़र रहे थे। आप ने एक हब्शी को देखा जिसके हाथ में एक रोटी है। उसमें एक लुक़मा वह खुद खाता है। और दूसरा कुत्ते को खिलाता है। यहां तक कि आधी रोटी उसने कुत्ते को दे दी। हज़रत हसन को अल्लाह की दया और **"रहमत वाली विशेषता"** का नमूना इस व्यक्ति में देख के आश्चर्य हुआ, कि वह कुत्ते को इस तरह दया से खिला रहा है और आप ने उस से पूछा:

"किस चीज़ ने तुझे इस बात के लिए तैयार किया कि तू उस को आधी रोटी खिला दे। तूने कुछ भी नहीं सोचा नहीं।?"

उस व्यक्ति ने जवाब दिया: "मेरी आँखों को उसकी आँखों से शर्म आ गयी कि मैं विचार करता।"

तो आप ने उस से पूछा: "किस के गुलाम हो तुम?" उस ने कहा: "अबान बिन उस्मान का गुलाम हूँ।" आप ने फरमाया: "बाग किस का है फिर?" उसने कहा: "अबान बिन उस्मान की।" तब हज़रत हसन ने इरादा किया कि उस गुलाम को अपने साथ रखें, जो दिखने में गुलाम था, किंतु वास्तव में खुदा का प्यारा और उस से क़रीब था। आप ने उस से कहा:

"मैं अल्लाह की क़सम खा कर कहता हूँ कि तुझे नहीं छोड़ूंगा, जब तक तुझे खरीद न लूं।"

फिर आप गये और गुलाम और बाग को खरीद लिया। और गुलाम के पास आकर कहा:

"ऐ गुलाम, मैंने तुझे खरीद लिया है।" तो वो खड़े हो कर कहने लगा:

"जैसी अल्लाह की, अल्लाह के रसूल की और आप की मर्ज़ी और आदेश, मेरे आक़ा!" जब हज़रत हसन ने यह शब्द सुने तो उसकी पवित्रता, दिल की सफाई और नेकदिली देख कर और अधिक आश्चर्य हुवा। और आप ने उस से कहा:

"मैंने बाग को खरीद किया है। तुम अल्लाह के लिए आज़ाद हो। और बाग मेरी ओर से तुझे भेंट है।" तो उस लड़के ने कहा:

"ऐ मेरे सरदार, मैंने बाग उसी राह में भेंट कर दिया, जिस में आप ने भेंट किया था।" (इब्ने मंज़ूर, संक्षिप्त दमिश्क का इतिहास, 7/25)

पैगंबर (सल्ल°) के शिष्टाचार और शर्म

पैगंबर (सल्ल°) कभी बुलंद आवाज से नहीँ बोलते थे। लोगों के पास हमेशा चुपचाप और मुसकान से गुजरते थे। अगर आप कोई बुरी बातें सुनते थे, वे कभी उस आदमी के चेहरे पर नजर नहीं डालते थे।

सब लोग जानते थे कि पैगंबर (सल्ल°) को ऐसे अमल बिलकुल पसंद नहीं है, इस के वजह से सब लोग जब पैगंबर (सल्ल°) आते थे, बुलंद आवाज से बात नहीं करते थे। पैगंबर (सल्ल°) कभी बुलंद आवाज में नहीं हंसते थे। केवल मुसकराते थे।

पैगंबर (सल्ल°) की शर्म और हया लड़कियों से अधिक थी। पैगंबर (सल्ल°) ने शर्म के बारे में में कहाः

"क्योंकि शर्म और हया ईमान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।" (बुखारी, ईमान, 16)

“शर्म और इमान एक साथ में है अगर एक चला गया तो दूसरा भी चला जाएगा।” (बुखारी, अल-अदबुल मुफरद, 1312)

"हया और शर्म इन्सान को सुंदर बनायेगी। बेशर्मी इंसान की ऐबदार बनायेगी।" (मुसलिम, बिर, 78, अबुदावुद, अलजिहाद 1)

जो इन्सान सचमुच शर्म करते हैं वह हमेशा मौत को याद करते रहते है, यह चीज़ दुनिया की मुहब्बत भूलने इन मदद करती है। इसलिए पैगंबर (सल्ल°) हमेशा अपने दोस्तों को बोलते थे शर्म और हया हमेशा रखना।

एक दिन पैगंबर (सल्ल°) ने कहाः **,अल्लाह से हमेशा शर्म करना जरूरी है**, उन्होंने जवाब दियाः **,हम अल्लाह से शर्म करते हैं और हमेशा उसकी पूजा करते हैं।**" वे बोलेः

"सचमुच शर्म का मतलब यह है कि हमेशा सोचें और अपने शरीर को बुरी बातों से प्रतिबंध करें और हमेशा मरने के याद करें। अगर कोई आदमी इस दुनिया को फरामोश करना चाहे और हमेशा इस दुनिया के बारे में सोचते जरूर इस दुन्या में उस को सब कुछ मिलेगा। (तिर्मिज़ी, अल-क़ियामत, 24/2458)

अल्लाह के पैगंबर (सल्ल°) ने कभी किसी के चेहरे पर घूर कर नहीं देखा था। आप हमेशा जमीन पर देखते थे। आप का ज़मीन पर देखना आसमान पर देखने से अधिक होता था। अधिकतर विचार विमर्श ही में रहते। पैगंबर (सल्ल°) अपनी हया और शर्म के कारण ही कभी किसी के ऐब और कमी को उसके मुंह पर और उपस्थिति में नहीं बोलते थे।

आइशा (र°) ने कहा कि कभी लोग बुरी बातें बोलते थे वे कभी कुछ नहीं कहते थे। सिर्फ नरमी और नाजुक इशारे से बोलते थेः

"क्यों लोग ऐसी बातें बोलते हैं।" (अबुदावुद, अल-अदब, 5-4788)

"अगर आप चाहते थे कि उपस्तिथ लोगों में से किसी को उस्की गलती पर बोलें कि यह उनके लिए उचित नहीं है, तो आप कभी भी

सीधे नहीं कहते थे। बल्कि आप ऐसे कहते थेः "क्यों मैं आपको इस हालत में देख रहा हूँ।"[26]

और चूंकि आप उत्तम और उच्च चरित्र के धनी थे, यही कारण है कि आप किसी को भी भली बात कहने के सदैव इच्छुक थे। आप किसी को चिंतित और दर्द नहीं देते थे। क्योंकि आप दर्द की बहुत आला मिसाल थे।

और इसी तरह मौलाना जलालुद्दीन रूमी जो अल्लाह के एक ऐसे पसंदीदा बन्दे थे, जो रसूलुल्लाह के इन अखलाक से सुसज्जित थे, बहुत ही अजीब इबारत में लपेट कर इन खुली वास्तविकताओं को बयान किया है:

"मेरी बुद्धि ने मेरे दिल को पूछते हुवे कहा: "ईमान क्या है? तो मेरे दिल ने मेरी बुद्धि के कान की ओर झुक कर कहा: "ईमान अदब का दूसरा नाम है।"

पैगंबर (सल्ल°) की बहादुरी

किसी को पैगंबर (सल्ल°) से ज्यादातर प्रस्तुत करना जरूर नहीं है। किसी ने उम्र भर आप को कभी डर की हालत में नहीं देखा थे। आप हमेशा साहसी और बहादुर थे। आप को कभी मरने का डर नहीं लगता था। आप अपने मारने वालों के पास से हमेशा यह आयात पढ़ते हुवे गुज़र जाते थेः

26. देखिए: मुसलिम अस-सलात, 119, इब्ने हुबाब, ज़. 4, 538

إِنَّا جَعَلْنَا فِي أَعْنَاقِهِمْ أَغْلَالًا فَهِيَ إِلَى الْأَذْقَانِ فَهُمْ مُقْمَحُونَ وَجَعَلْنَا مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ سَدًّا وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَأَغْشَيْنَاهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ

"हम ने उनके गले में फंदा डाल दिया। वे हिल भी नहीं पाएंगे। हम ने उनके आगे भी दीवार बना दी है और पीछे भी दीवार बना दी है। और उन पर पर्दा डाल दिया। अब वे देख नहीं सकते।" (यासीन - 9)

हजरत अली (र°) ने उन की बहादुरी के बारे में कहाः

"हम ने आप को बद्र के दिन देखा। हम उस युद्ध में पैगंबर के पीछे शरण लेते थे। आप हम में दुश्मन के सब से क़रीब थे। क्योंकि वे हम में सब से बहादुर और साहसी थे।" (अहमद, जि. 1, पे. 86)

दूसरी जगह में बरा पैगंबर (सल्ल°) की बहादुरी को ऐसे बयान कियाः

,जब हम जंग में बुरे और खतरनाक हालात में होते थे, हम आप को हमेशा पनाहगाह देखते थे क्योंकि अल्लाह के नबी (सल्ल°) सब से बहादुर थे। (मुस्लिम, अल-जिहोद, 79)

पैगंबर (सल्ल°) हमेशा हक और दीन के लिए जंग करते थे। जब हुनैन जंग हुआ तो उस जंग की शुरूआत में मुसलमानों का लशकर पस्त हुआ था। तब पैगंबर (सल्ल°) ने जंग किया और दुश्मनों को परास्त कर दिया। पैगंबर (सल्ल°) की बहादुरी को देख कर आपके सैनिक बहुत बहादुर हुए और उस जंग में उन्होंने सफलता प्राप्त की। (मुस्लिम, अल-जिहाद, 76-81)

अल्लाह के रसूल (सल्ल°) ने कहाः

,अल्लाह के नाम की कसम, सिर्फ़ अल्लाह के लिए मैं जंग करता हूँ, उस के लिए मैं खुद को कुरबान करूँगा। (मुस्लिम, अल-जिहाद, 103)

पैगंबर (सल्ल°) की सहनशीलता

अल्लाह के पैगंबर (सल्ल°) बहुत सहनशील थे।[27] (मुस्लिम, अल-हाज, 137) मुसल्मानों की माँ आइशा (र°) ने कहाः

,कोई आदमी अल्लाह के रसूल (सल्ल°) के जैसा अच्छे व्यवहार वाला नहीं है। अगर कोई सहाबा में से या आप के परिवार में से आप को बुलाते तो जल्दी से जवाब देते थे। उन के खुश अखलाक के प्रति कुरान में कहा गया हैः

وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيمٍ

'निःसंदेह आप चरित्र और नैतिकता के उच्चतम स्तर पर है।" (अल-कलम, 4) (अल वाहिदी, असबाब-उन-नुजुल, 463)

पैगंबर (सल्ल°) कभी किसी से अपने लिए बदला नहीं लेते थे। हमेशा लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करते थे और लोगों का माफ करते थे।

दूसरी जगह में आइशा (र°) उन की नरमदिली और खुश मिजाजी को याद करके फरमाती हैं:

,अल्लाह के पैगंबर कभी किसी को अपने हाथ से नहीं मारते थे। उन्होंने किसी को तकलीफ नहीं दी। हमेशा असली मार्ग को तलाश

27. मुस्लिम, अल-हाज, 137

करते थे और कभी अपने लिए किसी से बदला नहीं लेते। हां अल्लाह के खातिर में आप ज़रूर बदला लेते थे। (मुस्लिम, अल-फजाइल, 79)

हज़रत अनस ने पैगंबर (सल्ल°) को ऐसे याद किया:

“कभी किसी को नहीं देखा कि उस के हाथ पैगंबर के जैसे हों। और कभी किसी को नहीं देखा कि उस के कपड़े और उस के शरीर में खुशबु ऐसी आती हो।", साबित ने कहा, उस से मैं ने सवाल किया था:

,ये अबुहमजा, अगर आप रसूल (सल्ल°) की बातें सुनते थे ऐसा खयाल करता है कि मुश्क सुनते थे। अनसार ने जवाब में कहाः

,जी हाँ, मैं चाहता हूँ कि कियामत के दिन में अल्लाह के रसूल सल्ल°) को देखूँ और कहूंः,अल्लाह के पैगंबर(सल्ल°) यह मैं हूँ आप का नौकर।, अनसार ने कहाः ,लगभग दस साल मैं पैगंबर की सेवा करने जाता था। कभी आप ने नहीं बोला कि क्यों तुमने यह काम ऐसे करना था और वैसे कर दिया।, (अहमद, 3, 222, बुखारी, अस-सौम 53, अल मनाकिब, 23, मुस्लिम-अल-फज़ाईल, 82)

पैगंबर (सल्ल°) ने एक दिन एक सहाबी की तारीफ की और फ़रमाया:

"असल में आप में दो विशेषताएं (अच्छी आदतें) है, जिन्हें सचमुच अल्लाह पसंद करते है, आप की विशेषता हैः सहनशीलता और गंभीरता" (मुस्लिम, अल-ईमान, 25-26)

अबु हुरैरह ने रिवायत की कि एक दिन मस्जिद में एक देहाती ने पेशाब किया। सब सहाबा उस के साथ बहस करने लगे। पैगंबर (सल्ल°) ने उन लोगों से फरमाया:

"उस को रहने दो और उस के पेशाब पर पानी डाल दो" आप लोगों को अल्लाह ने भेजा कि सब लोगों के काम आसान करें। ना कि मुशकिल। (बुखारी, 80. अल-वुजु, 61)

इस के बाद अल्लाह के नबी (सल्ल°) ने उस व्यक्ति को खुशी और नरमी से समझा दिया।

हज़रत अनस कहते हैं:

"मैं पैगंबर (सल्ल°) के साथ जा रहा था। अल्लाह के रसूल सल्ल°) के बदन पर एक मोटे किनारे वाली नजरानी चादर थी। एक व्यक्ति ने आप के पीछे दौड़ कर आप की चादर पकड़ कर इतना ज़ोर से खींचा कि मैंने आप के कंधे के कुछ हिस्से पर निशान पड़ा हुवा देखा। फिर कहाः

"ए मुहम्मद। अपने लोगों को आदेश दीजिए कि मुझे अल्लाह के उस माल में से जो तुम्हारे पास है, कुछ दें।

पैगंबर (सल्ल°) ने उस चेहरे पर देखा और मुस्कुराए। फिर आदेश किया कि उस के लिए कुछ माल दिया जाए।" (बुखारी, हुमाल 19, लिबास 18, आदाब 68, मुस्लिम जकत 128)

अल्लाह के रसूल को अपनी दावत के फैलाने में इसी उच्च सहनशीलता और बुलंद चरित्र के कारण तौफ़ीक़ मिली। और इसी के बारे में अल्लाह ने फरमाया:

فَبِمَا رَحْمَةٍ مِنَ اللهِ لِنْتَ لَهُمْ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيظَ الْقَلْبِ لَانْفَضُّوا مِنْ حَوْلِكَ

"अल्लाह की रहमत और कृपा से आप उन मुसलमानों के साथ नरमी का बर्ताव करते हैं। यदि आप सख्त और बदमिजाज होते तो लोग निःसंदेह आप के पास से चले जाते।" (आलि इमरान, 159)

सच्चाई यह है कि सब लोग जाहिलियत के जमाने में पैगंबर (सल्ल॰) के दयालु व्यक्तित्व, धैर्य और सहनशीलता के पीछे ऐसे ही दौड़ते थे, जैसे शमा के इर्द गिर्द परवाने दौड़ते हैं। उन्होंने अपनी असभ्यता और दुर्दशा को समाप्त कर दिया। और इस इंसानियत के चराग के आस पास परवानों की तरह जमा हो गए। क्योंकि पैगम्बर किसी इंसान का बुरा नहीं चाहते थे। बल्कि आप सब के लिए हिदायत चाहते थे। क्योंकि आप उनके लिए कष्ट नहीं, राहत और आराम बनाये गए थे।

रसूल (सल्ल॰) की मेहरबानी

अल्लाह के नबी (सल्ल॰) ने अपनी मुबारक हदीस में कहाः

"**अल्लाह उन लोगों पर रहम करते हैं जो लोगों के साथ भलाई और नरमी करें। जो लोग जमीन पर रहने वालों के साथ रहम करेगा तो आसमान वाला उन पर रहम फरमायेगा।"** (तिरमिजी, अल-बिर, 16-1924)

जब पैगंबर (सल्ल॰) ने बच्चे के रोने की आवाज़ सुनी, तो आप को आशंका हुयी कि कहीं उसकी माँ परेशान न हो, अतः आप ने नमाज छोटी कर दी। ताकि उसकी माँ उसे देख सके। सारी सारी रात आप तहज्जुद में इबादत करते थे, अपनी उम्मत के लिए हमेशा दुआ करते और उन लोगों के लिए रोते जाते थे। इस दुनिया में पैगंबर (सल्ल॰) को लोगों को नर्क से मुक्ति दिलाने के लिए अपना समय

व्यतीत करते थे। यह सब आप की अपनी उम्मत के प्रति रहमत और दया का प्रमाण हैं।

चूंकि आप रहमत वाले नबी थे, अतः आप की रहमत हर हर व्यक्ति और जानदार तक फैली हुई थी। एक दिन पैगंबर (सल्ल°) से फरमाइश की गयी कि काफिरों के लिए बददुआ करें। तो आपने जवाब में कहाः

"मुझ को अल्लाह ने बददुआ करने के लिए नहीं भेजा, बल्कि अच्छा व्यवहार एवं भलाई करने के लिए भेजा है।" (मुस्लिम, अल-बिर, 87, तिरमिजी, अद-दअवात, 118)

जब रसूल (सल्ल°) इस्लाम की तबलीग करने के लिए ताइफ आए, तो काफिर और अधर्मी मुशरिक लोग उन को पत्थरों से मारने लगे। पैगंबर (सल्ल°) के पास जिब्रील (आ°) और पहाड़ों के फरिशते आए और अल्लाह के पैगंबर (सल्ल°) से पूछाः

"अगर आप राजी है तो हम दोनो पहाड़ों को एक दूसरे पर मारें और उन को मार डालें।" पैगंबर (सल्ल°) बोले:

"अल्लाह से बड़ी उम्मीद है कि इन लोगों के बीच में कोई ऐसा जन्म लेगा जो सिर्फ अल्लाह की पूजा करेगा।" (बुखारी, मुस्लिम, अल-जिहाद, 111)

और इन ताइफ वालों के लिए जिन्होंने उन को और उन के लोगों को निष्कासित किया और पत्थर बरसाए, हिजरत के नौवें साल तक हिंसक विरोध किए और मुसलमानों को हानि पहुंचाई, आप ने उनके लिए दुआ करने लगेः

"ऐ अल्लाह। सकीफ़ (ताइफ की क़ौम) को सीधे रास्ते की हिदायत दे। और उन लोगों को हमारे पास भेज दे।" धीरे-धीरे

कितना समय गुजरा और ताइफ के रहने वाले मुसलमान हो गये। (इबने हिशाम, 134, तिरमिजी, मनाकिब, 73-3942)

अबू उसैद (र°) एक दिन पैगंबर के पास गुलामों को लेकर आए। उन लोगों के बीच में एक औरत रो रही थी। पैगंबर (सल्ल°) ने उसे पूछाः **"आप का क्या मामला है?** औरत बोलीः **"इस मर्द ने मेरे बच्चे को बेच दिया।"** पैगंबर (सल्ल°) ने अबू उसैद से पूछाः **"क्या तुमने बच्चे को बेच दिया।?** उन्होंने कहा: **"जी हां।" "कहां बेच दिया।?"** अबू उसैद ने कहाः **"अब्स के परिवार में।"** पैगंबर (सल्ल°) ने उसे फ़रमाया: **तू जल्दी से सवारी लेकर उसे लेकर आ"।"** [28]

पैगंबर (सल्ल°) ऐसे मेहरबान थे कि उन की मेहरबानी सारी दुनिया को शामिल थी।

एक बार उन्होंने कहा थाः **"एक दूसरे के बिना प्यार और ईमान के तथा एक दूसरे पर मेहरबानी के बिना जन्नत में दाखिला नहीं होगा। क्या मैं न बता दूं कि कैसे मेहरबान हों?"** उन्होंने कहाः

"अल्लाह के पैगंबर ज़रूर बताएं।" आप ने फरमाया:

"सलाम को फैलाओ। खुदा की क़सम तुम बिना रहम के जन्नत में दाखिल नहीं हो सकते।" सहाबा ने कहा:

ऐ अल्लाह के रसूल, हम रहमदिल हैं।, पैगंबर (सल्ल°) ने जवाब में कहाः

28. अली – अल-मुत्तकी अल-हिन्दी, कनजुल-उम्माल, बेरूत, 1985, 4, 176/10044

"मकसद यह नहीं है कि एक या दो आदमी रहमदिल हों, मतलब यह कि सारे लोग मेहरबान होना चाहिए।" (हकीम, 4-185/7310)

पैगंबर (सल्ल°) की माफी

मुसल्मान वो है जो कि अल्लाह को प्यार करता है और माफ करने को पसंद करता है। अगर इन्सान अपने गुनाह और गलत कामों पर पछताता है और अल्लाह से माफी मांगता है तो अल्लाह उस को जरूर माफ करेगा। क्योंकि अल्लाह मेहरबान और माफ करते हैं। अतः वह चाहता है कि सब लोग एक दूसरे को माफ करें।

अल्लाह उस वक्त माफ करेंगे कि इन्सान अपने बुरे कामों पर पछताए, और जो अल्लाह आदेश देते हैं सब को पूरा करे। और जिन बुरी चीजें की उन्होंने इजाजत नहीं दी, उन्हें छोड़े। माफी की सब से अच्छी मिसाल पैगंबर (सल्ल°) के जीवन में हज़रत हिन्द की है,। इस औरत ने उहद के जंग में पैगंबर (सल्ल°) के चचा हमजा के जिगर को अपनो दाँतों से टुकड़ा-टुकड़ा किया था। और जब मक्के के फतह में मुसल्मान बन गयी। अल्लाह के नबी (सल्ल°) ने उस को माफ कर दिया।

हब्बार इब्ने असवद एक बड़ा खतरनाक इस्लाम दुशमन था, जब पैगंबर की बेटी जैनब मक्का से मदीना जा रही थी, उस वक्त इस ने उन के ऊँट को धक्का दिया। जैनब उस समय गर्भवती थीं, वह ऊंट से गिर गयीं, उस की बच्ची उस के गर्भ में मर गयी। इब्ने असवद ने बहुत अत्याचार किया। इसी कारण जब मक्का फतह हुआ तो वह फरार हो गया। जब अल्लाह के नबी (सल्ल°) मदीने में साथियों के बीच में थे, तो अपने दोस्तों के साथ इबने असवद खुद को पैगंबर (सल्ल°) के पैरों में डाल दिया और बोला:

"ऐ अल्लाह के रसूल, आप पर सलाम हो। में गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई पूजनीय नहीं। और आप उसके रसूल हैं। मैं आप के डर से भाग गया। मैंने सोचा दूसरी क़ोमों से मिल जाऊं। फिर मुझे आप की माफी और आप का उपक्रम याद आ गया। ऐ रसूलुल्लाह, हम अनजान और गुमराह थे। अल्लाह ने आप के माध्यम से हमें हिदायत दी। और बर्बादी से बचाया। अब मुझे माफ़ कर दो। मैं अपने जुर्म का इक़रार करता हूँ।" पैगंबर (सल्ल°) ने उस को फ़रमाया:

"मैंने तुमको को माफ किया। अल्लाह ने तुम पर एहसान किया कि तुम को इस्लाम की दौलत अता की। और इस्लाम पहली पूरी ज़िंदगी को मिटा देता है।"

आप ने उसे गालीगलौज करने और उसके साथ छेड़छाड़ करने से भी लोगों को मना किया। (वाकिदी, 11, 857-858)

इक्रिमा इब्ने अबूजहल सब से बड़ा इस्लाम का दुश्मन था। जब मक्का फतह हुआ तो इक्रिमा यमन भाग गया, उस की पत्नि उम्मे हकीम बिनते हारिस बिन हिशाम बहुत अच्छी और समझदार औरत थी। जब वह मुसलमान बन गयी, तो पैगंबर (सल्ल°) से इजाजत ली कि अपने पति को माफ करे और उस को लेकर वापस आए। उम्मे हकीम अपने पति को खोजने गयी। उन्होंने कहा:

"मैं तुम्हारे पास सब से भले इंसान के पास से आई हूँ। उसने तुमको पनाह और अमन दे दिया है। चलो।" तब इक्रिमा अपनी पत्नि के साथ मक्का में वापस आये। जब वे शहर में आये, पैगंबर (सल्ल°) ने अपने सहाबा से फ़रमाया:

"इक्रिमा इबने अबुजहल मुसाफिर और मामून हैं। उस के पिता को गाली मत देना। क्योंकि जब आप गाली देंगे, तो जिंदों

को तकलीफ होगी। और मुर्दों को वो गाली पहुंचेगी नहीं।" जब वो आये तो आप खुशी से उछल कर उनकी तरफ लपके। और इस्तेक़बाल किया। फिर अल्लाह के पैगंबर (सल्ल°) ने उनको भी माफ कर दिया। (हाकिम, अल-मुसतदरक, 3, 269)

पैगंबर (सल्ल°) ने इकरिमा से कहाः **"एक बाहदुर शहसवार का स्वागत है।"**[29] और फिर पिछली किसी बुराई को कभी याद नहीं किया। (तिरमिजी, अल-इस्तीजान, 34।2735)

पैगंबर (सल्ल°) अधिकतर अपनी दुआ में यह मांगते:

"ऐ अल्लाह, मेरी उम्मत को माफ कर दीजिए, वे कुछ नहीं जानते हैं।" (बुखारी, अल अनबिया, 25 इब्ने माजा, अल मनासिक, 56, अहमद, ज, 1,441)

जब कबीला यमामा के सरदार सुमामा इब्ने असाल मुसलमान हो गया, तो उस ने कहाः

"अल्लाह के अलावा इस दुनिया में कोई पूजनीय नहीं है और मुहम्मद (सल्ल°) उस के पैगंबर है। अल्लाह की कसम तुम्हारा चेहरा बदतरीन चेहरा था मेरी नजर में। अभी वह चेहरा मेरा पसंदीदा चेहरा हो गया। अल्लाह की कसम पहले सब से बुरा धर्म तुम्हारा धर्म था, अभी तुम्हारा धर्म मेरे लिए सब से प्यारा धर्म हो गया। अल्लाह की कसम सब से पहले बुरा तुम्हारा वतन था, अभी तुम्हारा वतन सब से पसंदीदा वतन हो गया। अभी आप के लश्कर ने मुझे गिरफ्तार कर लिया है और मैं उमरा के लिए जाना चहता हूँ। अप क्या कहेंगे इस के बारे में?

29. तिरमिजी, अल-इस्तीजान, 34/2735

पैगंबर (सल्ल°) ने उस को खुशखबरी सुनाई और उमरा करने की इजाजत दे दी।" जब वह मक्का पहुंचा, तो किसी ने कहाः "आप अधर्मी हो गए।" उसने कहा:

"नहीं, मोहम्मद (सल्ल°) के साथ मैं मुसलमान हो गया, अगर पैगंबर (सल्ल°) इजाजत नहीं दे, तो यमामा से आप के लिए एक गेहूं का दाना भी नहीं दूँगा। (बुखारी, अल-मगाजी, 70)

इस के बाद सुमामा ने अपने व्यापारिक संबंध काफिरों के साथ समाप्त कर लिए। जबकि हमेशा वे अपने ज़रूरतों हेतु यमामा आया करते थे। तो मक्का के रहने वाले मुश्किल और भूख में पड़ गये और अल्लाह के पैगंबर (सल्ल°) के पास आए तो आप ने उन लोगों की मदद की। पैगंबर (सल्ल°) ने सुमामा की ओर पत्र लिखवाया और ख्वाहिश की कि अपने व्यापरिक संबंध को कुरैश से ठीक करे।[30]

वह काफिर भूल गये कि तीन साल उन्होंने अबुतालिब के रिशतेदारों को कितनी पीड़ा पहुंचाई थी, खाने पीने से वंचित रखा। लेकिन अल्लाह के नबी (सल्ल°) ने उन को भी माफ कर दिया।

खैबर की फतह के बाद सातवें साल पैगंबर (सल्ल°) को पता चला कि मक्का वाले संकट में हैं, तो कि पैगंबर (सल्ल°) ने अमर बिन उमैय्या के साथ उन लोगों के लिए खाना पीना भेज दिया गया। अबु सुफ्यान ने सारी खाने-पीने की चीजें मक्का के निवासियों को दे दी, जो अल्लाह के नबी (सल्ल°) ने भेजी और कहाः

,अल्लाह, मेरे भाई पैगंबर (सल्ल°) को बेहतरीन बदला दे कि वह सब से अधिक रिश्तों को जोड़ने वाले इन्सान है।, (याकुबी, अत-तारीख, ज. 2,56)

30. इबने अब्दुल बिर अल इसतीआब, अल काहीरा, ज, 2, 214-215, इबने असीर, असद-उल-गाबा, अल काहिरा, 1970, ज,1, 295)

इस के बाद जो अल्लाह के पैगंबर(सल्ल°) ने उन लोगों के साथ नेक व्यवहार किया, वे सब पैगंबर (सल्ल°) की मेहरबानी देख कर धीरे-धीरे सब मुसलमान बन गये।

हुदैबिया में के एक समुह ने पैगंबर (सल्ल°) पर हमला किया और आप को मारना चाहते थे। उन लोगों को पकड़ लिया गया, लेकिन पैगंबर ने उन लोगों को माफ किया। (मुस्लिम 132, 133)

खैबर की फतह के बाद एक यहूदी औरत ने उन लोगों के खाने में ज़हर डाला। अल्लाह के रसूल (सल्ल°) ने एक लुकमा अपने मूँह में डाला और जल्दी से अपने मूँह से निकाला। उस औरत ने अपने बुरे काम का इक़रार किया । जब उस औरत ने इकरार किया, तो अल्लाह के रसूल (सल्ल°) ने उस को माफ किया। (बुखारी, अत्तिब, 55, मुसलिम, अस-सलाम, 43)

हालांकि आप वही के मध्यम से जानते थे कि लबीद यहूदी मुनाफ़िक़ ने अल्लाह के रसूल (सल्ल°) पर जादू किया है, किंतु पैगंबर (सल्ल°) ने कभी इसका जिक्र किसी के आगे नहीं किया और न उसको कुछ कहा, न ही सज़ा दी।[31]

इसी संदर्भ में यह आयत उतरी:

خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجَاهِلِينَ

"माफ़ कीजिये, भलाई का हुक्म दीजिए और जाहिलों से आप मत उलझिए।" (अ'अराफ़ 199)

31. इब्ने साद, 2/197, बुखारी, तिब, 47, 49, मुस्लिम, अस्सलाम, 43, नसाई, तहरीम, 20, अहमद, 367

अल्लाह के जो भी नेक बन्दे, जो मुहब्बत के माध्यम से रसूलुल्लाह के करीब हो सके और जिनको अल्लाह के रसूल की माफी में से थोड़ा सा भी हिस्सा मिला हो, वे भी इस आशा पर खूब माफ़ करते थे, कि इसके बदले में उनको अल्लाह की माफी में से हिस्सा मिलेगा जैसे **मंसूर हल्लाज** कि जब उनको पत्थर मारे जा रहे थे तो वे यही कह रहे थे:

"ए अल्लाह, मुझे पत्थर मारने वालों को तू मुझ से भी पहले माफ़ कर दे।"

अल्लाह के रसूल (सल्ल°) की पड़ोसियों के अधिकारों की पालना

अल्लाह के रसूल (सल्ल°) हमेशा पड़ोसी के हक को जानते थे। इस वजह से एक हदीस में कहा गया हैः

जिब्रील (आ°) ने लगातर पड़ोसी के हक को अदा करने की वसीयत की कि मैंने गुमान किया कि पड़ोसी को शायद वे वारिस क़रार दे देंगे। (बुखारी, अल अदब, 28, मुस्लिम, अल-बिर , 140-141)

उन्होंने दूसरी हदीस में कहाः

,पड़ोसियों को तीन भाग में बाँटा जा सकता है। एक वह जिसके तीन हिस्से हैं, दूसरे के लिए दो और तीसरे के लिए एक हिस्सा। जिस पड़ोसी के तीन हिस्से हैं, उसका एक हक़ यह है कि वह मुस्लिम हैं और एक रिश्तेदार का हक़ है, और एक तीसरा यह है कि वो पड़ोसी है। जिन लोगों के दो हक हैं, वह

मुस्लिम है और पड़ोसी है। जिस इन्सान का एक हक़ है वह काफिर पड़ोसी है।,[32]

पड़ोसी के हक़ का उलंघन यह है – पड़ोसी के घर में खिड़की में से झांकना, खाने आदि की बू और गंध से उस को कष्ट देना। और कोई अन्य तकलीफ देने वाला काम उसके घर के आस पास करना

इस की वजह से पैगंबर (सल्ल°) ने कहाः

,सब से अच्छा दोस्त अल्लाह के यहां वह इन्सान है जो अपने दोस्त के लिए अच्छाई करता है, और सब से अच्छा पड़ोसी वह है जो अपने पड़ोसी के हक़ को जानता है।, (तिरमिजी, अल-बिर, 28)

दूसरी जगह कहा:

,मोमिनों के लिए यह रवा नहीं है कि वह तो खाना खा कर सोयें और उन के पड़ोसी भूखे रहें।, (हाकिम, ज, 2,15/2166)

अबूजर गिफारी (र°) ने इस के बारे में कहा कि जब खाना बनाते समय पैगंबर (सल्ल°) ने आदेश किया कि पड़ोसी को भी खाने में हिस्सा दिया करो। अल्लाह के रसूल (सल्ल°) ने कहाः

,अबुजर जब तुम शोरबा तैयार करो तो उस में पानी ज्यादा डालना और सालन में से पड़ोसियों को देना।, (मुस्लिम, अल-बिर, 142)

"ऐ अबू ज़र, जब तुम शोरबा तैयार करो तो उस में पानी ज्यादा डालना और सालन में से पड़ोसियों को देना।" (इब्ने माजा, अतइमा, 58)

32. बैहकी, अश-शुअब, 7/83, सुयूती, अल जामि-ऊस सग़ीर, मिस्र , 1321 ह, 1/146

हज़रत अबू ज़र सब से फ़क़ीर सहाबी थे। अतः पड़ोसी के साथ अच्छे व्यवहार में गरीब के लिए भी कोई बहाना और छूट नहीं चल सकती।

हज़रत अबू हुरेरह ही फरमाते हैं कि अल्लाह के रसूल ने फरमाया:

"खुदा की क़सम मोमिन नहीं हो सकता, नहीं हो सकता, नहीं हो सकता। हमने पूछा कौन ऐ अल्लाह के रसूल। आप ने फरमाया कि वह व्यक्ति, जिसके आतंक और बदमाशी से उसका पड़ोसी सुरक्षित न रहे।" (बुखारी, अदब, 29, तिर्मिज़ी, क़यामह, 60)

और एक अन्य रिवायत में फ़रमाया: **"जन्नत में वह शख्स दाखिल नहीं हो सकता, जिसकी शरारतों से उसका पड़ोसी सुरक्षित न रहे।"** (मुस्लिम, ईमान, 74)

रसूलुल्लाह का निर्धनों और फकीरों के साथ व्यवहार

रसूलुल्लाह गरीबों, फकीरों, अनाथों और विधवाओं के साथ ऐसा अच्छा व्यवहार करते थे[33] कि कई बार उनको खुद अंदाजा नहीं होता था कि उनके साथ क्या संकट और कठिनाई हैं।

हजरत अबू सईद खुदरी कहते हैं:

"मैं मुहाजिरीन सहाबा की एक जमाअत के साथ बैठा हुवा था। कुछ लोग अपने खुले शरीर को ढांप रहे थे। और एक पढ़ने वाला पढ़ रहा था। उस समय अल्लाह के रसूल (सल्ल°) आये और हमारे पास खड़े हो गए। तो जो आदमी तिलावत करता था, खामोश हो गया और

33. बुखारी, नफ़्का, 1, मुस्लिम, ज़ुहद, 41, 42

पैगंबर (सल्ल°) से सलाम किया। पैगंबर (सल्ल°) ने कहाः **,क्या कर रहे हो?,** उस ने जवाब दियाः इस आदमी ने हमारे लिए कुरान की तिलावत की और हम उस को सुन रहे हैं।, पैगंबर (सल्ल°) ने कहा: **"तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिसने मेरी उम्मत में ऐसे लोगों को पैदा किया, जिनके साथ बैठने का खुद मुझे हुक्म हुवा है।"**[34] फिर अल्लाह के रसूल हमारे बीच में बेठ गये। ताकि सब से दूरी बराबर बनी रहे।, (सुरह कहफ 28)

फिर अल्लाह के रसूल ने हाथ ऐसे इशारा किया तो लोगों ने दायरा बना लिया। तो हमारे चेहरे आप के सामने हो गए। अल्लाह के रसूल मेरे अलावा किसी को नहीं जानते थे। आप ने फरमाया:

"आप को खुशखबरी हो ऐ गरीब मुहाजिरों, अल्लाह आप को मालदारों से (आधा दिन) पांच सौ साल पहले जन्नत में दाखिल करेगा। (अबुदाऊद, अल-इलम, 13/3666)

एक दिन जब पैगंबर (सल्ल°) मदीना में बैठे थे, एक फकीर और नंगा समूह आया, जिसकी भूख से हड्डियाँ दिख रही थी। वह पैगंबर (सल्ल°) के पास आया। पैगंबर (सल्ल°) ने जब उन लोगों को देखा कि वे लोग कितने गरीब हैं, तो पैगंबर (सल्ल°) का चेहरा बदल गया और वे घर पर गये। फिर घर से निकले और बिलाल को अजान देने का फरमान दिया। जब उन्होंने नमाज अदा की तो अल्लाह के नबी (सल्ल°) ने इन गरीब लोगों की मदद देने का आदेश किया। जब

34. इशारा है अल्लाह तआला के इरशाद की ओर: "और आप अपने आप को रोके रखिये जो सुबह शाम अल्लाह को याद करते हैं। जो अल्लाह की रजामंदी के इच्छुक हैं। और आप आंखें उन से न फेरना, तुम्हारा इरादा दुनिया की ज़ीनत प्राप्त करने का हो। और हमारी याद से गाफ़िल दिल वाले और अपनी इच्छा से चलने वाले लोगों की आज्ञा मत करना। उनका मामला हद से बढ़ गया।" (कहफ़, 28)

पैगंबर (सल्ल°) ने सहाबा को उन लोगों की मदद करते हुवे देखा तो आप बहुत खुश हो गये। (मुस्लिम, अज़-ज़कात, 69-70. अहमद, 4/358-361)

पैगंबर (सल्ल°) की जिन्दगी माफी ,सब्र, रहम और नरमदिली से परिभाषित थी। अल्लाह के रसूल (सल्ल°) ने अपनी पत्नि आइशा (र°) को नसीहत की कि ,आइशा कभी गरीब और फकीरों को अपने मकान से बाहर मत निकालो। तुम्हारे पास जो कुछ भी हो तो उन को दे दो।

,ओ, आइशा, कभी गरीब को न भगाओ। चाहे खजूर का टुकड़ा ही देना पड़े। हमेशा गरीबों को प्यार करो और उनको क़रीब करो। जो उनको क़रीब करेगा तो अल्लाह बदले के दिन में उसकी मदद करेगा।, (तिरमिजी, अल-जुहुद, 37/2526)

अब्बाद इब्ने शुरहबील ने रिवायत कियाः

,एक दिन बहुत भूख लगी थी। मैं मदीना के एक बाग में अंदर गया। एक पेड़ से खजूर तोड़ा और उस में से कुछ थोड़ा सा कपड़े में ले लिया। अचानक बाग का मालिक आया। मुझे मारा और मेरे कपड़े ले लिए। मैं अल्लाह के रसूल (सल्ल°) के पास आया तब पैगंबर (सल्ल°) ने उस बाग के मालिक से फरमाया:

,यह जाहिल होता तो तू सिखा नहीं सकता। यह भूखा होता, तू खाना नहीं दे सकता। ,फिर आपने उस को आदेश दिया तो उसने मेरे कपड़े वापस दे दिए और मुझे एक या आधे वस्क़ की मात्रा में मुझे खाना दिया (अबुदाऊद, अज़ ज़ुहद, 93/2623, अन नसाई, अल क़ुजात, 21)

यह हदीस बतलाती है कि इस्लाम सब से पहले जुर्म और गुनाह की बुनियाद को तलाश करता है, उस के बाद उस गुनाह को ठीक करने की कोशिश करता है। यही कारण है कि शरीअत में सज़ा ऐसी

ही है, जैसे माँ बाप अपनी औलाद को सज़ा देते हैं। सजा शरीअत इस्लाम में गुनहगारों को जिन्दगी से वंचित नहीं करती है, बल्कि उस को दोबारा जिन्दगी में शामिल करती है।

अल्लाह के रसूल का कैदियों और गुलामों से संबंध

अल्लाह के रसूल (सल्ल°) की मेहरबानी और रहम दिली से जंग के कैदी भी बचे हुवे नहीं थे। उन्होंने हमेशा फरमाया था कि कैदियों से अच्छा बर्ताव करना। अबू अजीज जो मुसअब इब्ने उमैर के भाई हैं, ने रिवायत किया कि:

बद्र की जंग में मैं साथियों के साथ क़ैद हो गया और पैगंबर ने कहाः

"**कैदियों से नरमी का बर्ताव करना है।**"

मैं अनसार के पास था। वे सुबह और शाम का खाना खजूर खाते और मुझे गेहूं देते थे। अगर उन लोगों के पास एक टुकड़ा रोटी का भी होता तो उस से मुझे भी देते थे। मैं शर्म से उस रोटी को दूसरे आदमी को देता था और वह आदमी थोड़ा टुकड़ा खुद खाता और थोड़ा मुझे वापस देता था। (हैसमी, 6/86, इबने हिशाम, 2/277)

पैगंबर (सल्ल°) हमेशा गुलामी और मातहती की उस व्यवस्था को जो उस जमाने में पाई जाती थी, समाप्त करें। आप ने इस ओर कई कदम उठाए। इस लिए आप हमेशा उनके हक़ को पूरा करने की कोशिश करते थे। हमेशा गुलाम को आजाद किये जाने का जिक्र करते थे कि गुलाम को आजाद करना बहुत महत्वपूर्ण इबादत है। पैगंबर (सल्ल°) ने इस काम की बहुत तबलीग़ की कि उन के सब से अच्छे दोस्त अबुबक्र सीद्दीक (र) ने अपने मालों को गुलामों को आजाद करने के लिए अल्लाह के लिए खर्च किया।

मअरूर इबने सुवैद (र°) ने कहा कि मैं ने अबूजर र. को देखा कि वो जैसा कपड़ा स्वयं पहनते थे, उनका गुलाम भी वैसे ही कपड़ा पहना हुवा था। मैं ने कारण पूछा। तो जवाब दिया:

एक मर्द की माता को मैं ने गाली दी। अल्लाह के रसूल (सल्ल°) मुझे बोलाः

,ऐ अबूज़र क्या तुमने उस की मां को गाली दी? यह मालुम हुआ है कि अभी तुम में जहालत की निशानियां रह गयी हैं। जो इन्सान तुम्हारे मातहत और अधीन हैं वे तुम लोगों के भाई है। जो तुम खाओ, उनको भी खिलाओ। जो तुम पहनो, उनको भी पहनाओ। उन लोगों पर उनकी सहनशीलता से अधिक बोझ मत लादो। यदि लाद दिया तो उनकी मदद करो। (बुखारी, अल-इमान, 22. मुस्लिम, अल ईमान, 38)

एक मर्द ने अपने खादिम की अपनी बांदी (दासी) से शादी कर दी और कुछ दिन के बाद उन लोगों को विभाजित करना चाहा। गुलाम अल्लाह रसूल (सल्ल°) के पास आया और शिकायत की। पैगंबर (सल्ल°) ने फरमाया:

"ऐ लोगों, तुमको क्या हो गया कि तुम में का एक व्यक्ति अपने ग़ुलाम की शादी अपनी बांदी से कराता है और फिर उन को अलग अलग करना चाहता है? सुन लो, जो वास्तविक शौहर हो, तलाक़ केवल वही दे सकता है।, (इबने माजा, अत-तलाक़, 31, तबरानी अलकबीर, ज. 11/300)

इसी कारण सहाबा इस तरह के सभी मुद्दों में अपने गुलामों को आजाद करना ही उचित समझते थे। और पैगंबर (सल्ल°) की बातों के आधार पर अमल करते थे। इस की वजह से गुलाम बनाने से हमारे जमाने तक पूरी तरह मना कर दिया गया है। यह इस्लाम

ही था जिसने इन्सान को गुलामी के फंदे से मुक्ति दी, जो एक समय तक युद्ध का मूल उद्देश्य होने के कारण मानव इतिहास का मुख्य सत्य समझा जाता था।

इस्लाम धर्म ने उस जमाने में गुलामों के मालिक को आदेश दिया कि जो खाना तुम खाते हों, ऐसा ही खाना अपने गुलाम को भी दो और जो कपड़ा तुम पहनते हो उस को भी पहनाओ और उस को ज्यादा काम मत देना। और उस की आवश्यकताओं को समय पर पूरा करना। इस्लाम की शरीअत तालीम देती है कि गुलाम को आजाद करना यह अमल सवाब है और यह काम मोमिनों के लिए मुक्ति का कारण है। इस्लाम ने गुलाम के मज़बूत अधिकार बताए और उनकी रक्षा को लाज़िम क़रार दिया इस्लाम धर्म ने बताया कि जिसके कोई गुलाम न हो, वह गुलाम वाले से उत्तम और अच्छा है। क्योंकि अधिकारों के नीचे दबा हुवा इन अधिकारों के कारण एक तरह से गुलाम ही हो गया है। पैगंबर (सल्ल॰) ने अपने अंतिम सांसों के समय कहाः

"नमाज को पूरा करना। नमाज को पूरा करना। और जिन लोगों के पास गुलाम हैं उनके सिलसिले में अल्लाह से डरते रहना।" (अबुदाऊद, अल-अदब, 123-124/5256, इबने माज़ा, अल-वसाया, 1)

यह रसूलुल्लाह की अपनी उम्मत को सब से गहरी नसीहतों और निर्देशों में से एक है।

इसी वजह से अल्लाह के पैगंबर (सल्ल॰) गुलामी के दरवाजों को बंद करते और आज़ादी के दरवाजों को खोलते थे, यहां तक कि उसको समाप्त ही कर दिया। इसी कारणवश आपने उम्मतियों को गुलामों को और बांदियों को आजाद करने पर उभारा और आदेश दिया। तो क्या इस से सुंदर गुलामी को समाप्त कराने का कोई उदाहरण कहीं है?

जो उदाहरण ऊपर जिक्र हुआ है, यह बताने हेतु पर्याप्त है कि इस्लाम ने गुलामों को क्या उच्च स्तर दिया है।

तो जैसा कि यह मालूम है कि **हज़रत बिलाल हबशी** इस्लाम लाने से पहले गुलाम थे। जब वह मुसलमान बन गए तो पैगंबर (सल्ल॰) ने उनको सबसे बड़े मुअज्जिन का पद दिया और उनका महान उसताज़ बना दिया। उन को पैगंबर (सल्ल॰) ने उपहार किया।

ज़ैद बिन हारिसा गुलाम थे। हज़रत खदीजा ने आप को भेंट किया। आप ने आज़ाद कर दिया। यह सहाबी फिर अखलाक़ और चरित्र की बेहतरीन मिसाल और उदाहरण बने। उन के बेटे उसामा बिन जैद को पैगंबर (सल्ल॰) ने मुसलमानो के बुजुर्गों का पेशवा बना दिया।

मशहूर सिपहसालार उन्दलुस (स्पेन) के विजेता तारिक़ इब्ने ज़ियाद ऐसे गुलाम थे जिनकी गर्दन में फंदा डाला रहता था। बेचे और खरीदे जाते थे। लेकिन यह गुलाम इस्लाम लाने के बाद इस्लाम की वजह से इज्जत और एहतिराम के असली मुकाम तक पहुंचा और मुसलमानों के लश्कर का सिपहसालार भी बना।

संक्षिप्त में यह है कि इस्लाम ने गुलाम को सरदार के बराबर और समान स्थान दिया। इसी कारणवश काफिरों को इस्लाम बुरा लगता था। आज के दौर में यही चीज़ इस्लाम के दुश्मनों ने कर रखी है। क्या आज़ाद लोगों को गुलाम नहीं बनाया? क्या उन्होंने आज़ादी के नाम पर और अपने नापाक उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु गरीबों, निर्दोषों और कमजोरों के अधिकार नहीं छीन लिए? क्या आज की नापाक और बदबूदार नाम और परिभाषा वाली आज़ादी, जिसे आज लोग बोल और लिख रहे हैं, क्या महज़ नाम और परिभाषा बदलने मात्र से यह वर्तमान समय की गुलामी गत इतिहास की गुलामी से किसी तरह भिन्न है?

अतः वो इस्लाम जिसने बीते समय में अपनी विशेषताओं और खूबियों को उपयोग करके मानवता को गुलामी और पिछड़ेपन निकाला है, आज भी वो वो इस बात के लिए समर्थ है कि लोगों को पिछड़ेपन से निकाल कर विकास के पथ पर डाल दे।

यदि ऐसा इंसानियत इसके अलावा करती तो वो हित साधने के स्वार्थी दांतों में फंसी होती।

इस्लाम ने गुलामी व्यवस्था को बंद किया और इन्सान की क़दर और मूल्यों को ऊँचाई तक पहुँचाया। वह साम्राज्य कहां रहे, जिन में आज़ादों को गुलाम बनाया जाता था। आज वो गुलामी कहां रही, जिस के बारे में पैगंबर (सल्ल०) ने में कहाः

"जिस इन्सान के हाथ में गुलाम है तो जो खाना खुद खाता है उस को भी वही देना और जो लिबास स्वयं पहनता है उस को भी वही पहनाना पड़ेगा।" (बुखारी, अल-इमान, 22, मुस्लिम अल-इमान, 36-38)

यह वे बातें हैं, जिन से इस्लाम धर्म ने इन्सानियत को एवं उस के मकाम और क़द्र को ऊपर तक जितना संभव था, पहुंचाया।

सच है कि यदि आज भी इंसानियत को किसी चीज़ से इस बुरी प्रथा से छुटकारा दिलाया जा सकता है तो वह वही है जो कल काम आयी थी। अर्थात अल्लाह के रसूल का तरीका और जीवनशैली। कि आप ने लोगों के मामले सुनने के लिए इंसाफ के तराजू स्थापित किये। इंसानियत को उसका मुकाम प्रदान किया। इस्लाम ने फकीर या अमीर, राजा या प्रजा और मालिक और गुलाम में कोई भेदभाव नहीं किया। आप के पास जब एक सहाबी ने आकर पूछा: ,हम अपने गुलाम को दिन में कितनी बार माफ़े करें?, आप ने फरमाया:

,उसे प्रतिदिन सत्तर बार माफ़े करो।" (अबुदाऊद, अल-अदब, 123-124/5164, तिरमिजी, 31/1949)

सचमुच पैगंबर (सल्ल°) नरमदिली और मेहरबानी का समुद्र थे, जिसका कोई किनारा नहीं था। आप का लोगों की भावनाओं और उनके दिलों का खयाल रखना अद्त था। इसी पर आप की यह बात शानदार प्रमाण प्रस्तुत करती है:

'अगर आप में से अपने खादिम से खाना मंगवाए तो उसको साथ में न बिठाए तो उसको एक दो लुकमे दे दो, क्योंकि उसकी खाना बनाने और तय्यार करने की ज़िम्मेदारी है। (बुखारी,55. तिरमिजी, अल-अतइमा,44)

यदि अल्लाह चाहें तो गुलाम को मालिक और मालिक को गुलाम बना दें। इस वजह से हर हालत में अल्लाह की प्रशंसा और शुकर करना चाहिए और साथ ही गुलामों के साथ अच्छा संबंध रखना अनिवार्य है।

अल्लाह के पैगंबर (सल्ल°) का औरतों के साथ व्यवहार

जाहिलियत के जमाने में औरत का कोई मक़ाम एवं क़द्र नहीं थी, लोग उस जमाने में अगर उन के घर बेटी जन्म लेती थी, तो उस को जिंदा ज़मीन में दफना देते थे। बेटी को शर्म और लाज की चीज़ समझते थे। इस की वजह से उस बेटी को मार कर खुद को गौरवशाली समझते थे। अल्लाह ने उन की हालत को क़ुरान करीम में ऐसे पेश किया:

وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِالْاُنْثٰى ظَلَّ

وَجْهُهُ مُسْوَداًّ وَهُوَ كَظِيمٌ

"**और जब उनमें से किसी को बेटी के जन्म की बधाई दी जाती तो उसका रंग काला पड़ जाता और वह अंदर ही अंदर गुस्से से कुड़ता।**" (नहल- 58)

इस्लाम आने से पहले औरतों और बेटियों के साथ लोग अत्यंत घटिया बर्ताव करते थे। पुरूष औरतों को सिर्फ दिल खुश करने के लिए इस्तेमाल करते थे। यहां तक कि अल्लाह के रसूल (सल्ल°) तशरीफ़ ले आये। तो आप ने महिलाओं के अधिकारों की बुनियाद रखी। फिर महिला समाज में इज़्ज़त और सम्मान का प्रारूप बन कर उभरी। और मातृत्व की बुनियाद एक सम्मान और इज़्ज़त की चीज़ बनी। और आप की इस हदीस:

"जन्नत माताओं के पैरों के नीचे ही है।"[35] (नसाई, अल-जिहाद, 62. अहमद, ज. 39, 429. सुयूती,1,125)

की रौशनी में महिला सम्मान और इज़्ज़त की उच्चतम चोटियों पर चढ़ गयी।

आप के रहमदिल और दयालू पैगंबर होने की इस से अच्छी मिसाल क्या हो सकती है। पैगंबर (सल्ल°) एक बार सफर में थे और उन के साथ गुलाम था उस का नाम अन्ज़शा था । वह गुलाम बुलंद आवाज से गाना गाते हुवे ऊँट को तेज़ गति से हांकते हुए चलता था। पैगंबर (सल्ल°) को उन कमज़ोर औरतों को लेकर खतरा हुवा जो ऊंटों पर बैठी थीं। आप ने उस गुलाम से कहाः

,ए, अंजशा, आराम से चलो और शीशों का खयाल रखो।, (बुखारी, अल-अदब, 95, अहमद,-जि. 3/117)

पैगंबर (सल्ल°) ने दूसरे हदीस में फरमाया:

35. नसाई, जिहाद, 62, अहमद, 3/429, सुयूती, 1/25

,मेरे अल्लाह, मैं दो इन्सानों के हक़ में डरता हुँ: अनाथ और औरत।,[36] (इबने माजा, अल-अदब, 6)

दूसरी हदीस में पैगंबर (सल्ल°) ने फरमाया:

,मुसलमान पुरुष मुस्लिम महिला से नफरत न करें। अगर उस का एक चरित्र पसंद न आये, तो उस का दूसरे चरित्र अच्छा लग जायेगा।, (मुस्लिम, अर-रिज़ाअ, 18)

औरत हरगिज कोई कांटेदार भूमि नहीं है, जिस से घृणा और नफरत ई जाए। बल्कि औरत गुलजार है कि हमेशा प्यार और मुहब्बत की भूखी है। क्योंकि औरत उपहार और अल्लाह की नेअमत है, इस के लिए पैगंबर (सल्ल°) ने कहाः

"दुनिया की दो नेअमतें मेरे लिए पसंदीदा बनाई गई हैं: औरत और खुशबू, और नमाज मेरे आँखों की ठंडक बनाई गयी है।, (नसाई, इशरत-ऊ-निसा,10, अहमद, जि.3, 128,199)

अतः ज़रूरी है कि यह मुहब्बत नफरत से व्यर्थ न की जाए। क्योंकि औरत उस क़तरे और नुत्फे को अपने अंदर समेटती है, जिस से ज़मीन पर अल्लाह का खलीफा यानी इंसान पैदा होता है।[37]

---

36. ऊंट मधुर आवाज और मस्त संगीत से मस्त हो जाते थे। ऊंटों का हुदी ख्वां (चलाते हुवे गाने वाला) मधुर स्वर गाता था ताकि ऊंटों का काफिला तेज़ चले।
37. रसूल (सल्ल°)ने शादी कभी शहवत के लिए नहीं की। क्योंकि आप की पहली शादी किसी कुंवारी लड़की से नहीं थी, बल्कि शादीशुदा औरत से थी। खदीजा उस समय में चालीस साल की थी, पैगंबर (सल्ल°) ने जब तक खदीजा जीवित थी, किसी से शादी नहीं की। और आप के साथ अपनी जीवनकाल के सब से अच्छे दिन बिताए। आप के निधन के बाद आप बुढापे को पहुंच चुके थे। अन्य सभी पत्नियों से चौवन साल की आयु के बाद ही की। यह सब अपने शौक से नहीं, बल्कि अल्लाह के आदेश से की। ताकि महिलाओं को दीन सिखाया जा सके। आप की अधिकांश औरतें बड़ी आयु की, बिना खानदान की और कई बच्चों वाली थी। ये सभी शादी उन की मरजी से नहीं था, बल्कि अल्लाह के अमर और

हम को यह जानना जरूरी है कि मुहब्बत और प्यार अल्लाह ने हर इन्सान की फितरत और प्रकृति में रखा है। और इस प्रकृति और स्वभाव को इस मुहब्बत के लिए सक्षम बनाया है। यही कारण है कि पैगंबर (सल्ल॰) का औरतों की इच्छा और लगाव किसी हवस और कुनीति पर आधारित नहीं थी, बल्कि आप ने औरत को सर्वश्रेष्ठ और सब से ऊंचा मुक़ाम दिया, जिसकी वे हक़दार थीं। औरत ने मानवता के इतिहास में अपना सर्वोच्च स्थान इस्लाम की छाया में पाया। सच्चाई यह है कि इस्लाम के अलावा आज कल की तथाकथित सभ्य क़ोमों का महिला सशक्तिकरण और उनको अधिकार देने का जो दावा है, वह केवल स्वार्थ और निजी हित साधने पर आधारित है। वे औरत को एक आर्थिक माध्यम और हवस को ठंडा करने की चीज़ मानते हैं।

अतः हमें ज़रूरी हैं कि हम इस समय में लोगों को औरत को उसका सही मक़ाम और स्तर समझाएं तथा उसको सम्मान दें। इस मामले में इस्लाम की सोच को आम करें। मर्द और औरत मानव जिन्दगी के शुरू से ही दो भाग रहे हैं, जो एक दूसरे को पूरा करते हैं। इस संपन्नता में अल्लाह ने औरत को ज़्यादा बड़ा और विस्तृत भागीदार बनाया है। खास तौर पर यह कि उस के जरिए ही हमारा मानव समाज सुरक्षित होगा। इस्लाम ने औरत के कद को ऊंचा किया । इस के बारे में पैगंबर (सल्ल॰) ने कहाः

"अगर किसी इन्सान के पास तीन बेटियाँ या तीन बहने हैं और उसने उन की अच्छी तरबियत और पालनपोषण किया

धर्म की दावत के हक के लिए था। अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) से शादी करने के लिए पैगंबरी का हक़ अदा किया, हमने ऊपर में जिक्र किया कि आपकी सभी शादी अल्लाह की मर्ज़ी से थी। (अधिक मालुमात के लिए उसमान नूरी ताबपाश पैगंबर मुस्तफा (सल्ल॰) ज.1,130-140 देखना)

तो जन्नत उस इन्सान के लिए खुली है।" (तिरमिजी, बाब-उस-सिला, 13-2040. अबुदावुद, अल-अदब 131-5147)

दूसरी जगह में पैगंबर (सल्ल°) ने हदीस शऱीफ में फ़रमाया:

"**कोई दो बेटियों की अच्छी तरबियत करेगा, यहां तक कि वे बालिग़ हो जाएं, तो वह और मैं कयामत के दिन इस तरह आयेंगे।"** और फिर आपने अपनी उंगलियां मिलाकर इशारा किया। (मुसलिम, अल बिर 149, तिरमिजी, अल-बिर, 13/2038)

फिर उसके बाद पैगंबर (सल्ल°) ने नेक औरत की कद्र और उस के मरतबे के बारे में कहाः

,दुनिया एक फायदा उठाने की चीज़ है। उस की बेहतरीन नेअमत नेक औरत है।, (नसाई, अननिकाह,15, इबने माजा, उन निकाह, 5)

आम तौर पर हर बड़े और महान व्यक्ति के पीछे किसी औरत का हाथ होता हैं। जैसे पैगंबर (सल्ल°) की पत्नि हजरत खदीजा (र°) को ले लीजिए। आप बहुत महान औरत थी। इस्लाम के शुरूआत में आप (सल्ल०) के प्रति उन की सेवाएँ रसूल हमेशा याद रखी जाएंगी। आप दावत ए इस्लाम के प्रारंभिक सहयोगियों में थी।आप ने उनको पूरी उमर नहीं भुलाया। अल्लाह के नबी (सल्ल°) की बेटी फतिमा जहरा का अपने पति हज़रत अली की कामयाबियों में बड़ा रोल था। वह नेक सालेह और दुनिया की बेहतरीन औरत थी।

अतः खुलासा यह है कि नेक औरत इस दुनिया की सब से बड़ी नेअमत है। इसी लिए पैगंबर (सल्ल°) ने अच्छे मर्दों के लिए यही पहचान और मापदंड बनाया और कहाः

,जो मुसलिम महिलाओं के हक में अच्छा मर्द है वह बेहतरीन मुस्लिम मर्द है। बेहतरीन मर्द वह है कि अपने पत्नी के साथ अच्छा व्यवहार करे।, (तिरमीजी, अर-रिज़ा 11/1162, 1195)

अतः यह बड़ी शर्म और लज्जा की बात होगी कि औरत से सिफ मौज मस्ती और योन शांति का संबंध रखा जाए। उसको मात्र सामान के तौर पर देखा जाए। औरत के प्रति केवल शारिरिक दृष्टि से देखना उन सब नेअमतों से आंखें मूंदना है, जो अल्लाह ने उस में रखी हैं। इस जमाने में औरतें अय्याशी के कामों और खेलों में इस्तेमाल होती हैं। अफसोस! औरत के उच्चस्तर से दुनिया कितनी अंधी है।

औरत का समाज की एक सच्ची निर्माणकर्ता और कल्याण कारी के तौर पर प्रशिक्षण होना चाहिए। उसे बच्चों की बेहतरीन शिक्षिका और इंजीनियर बनाया जाना चाहिए। उसे ऐसी गौद बनाया जाना जरूरी है, जो योद्धाओं को जन्म दे। क्योंकि माँ के अलावा ऐसी कोई शख्सियत और जात नहीं है जिसे इतना महान बनाया गया हो। क्योंकि एक सच्ची मां एक ज़माने तक हमको पहले अपने पेट में, उसके बाद अपने आगोश में जगह देती है और उम्र के अंत तक हमारी देखभाल करती है। अपना पूरा जीवन हमारे पीछे झोंक देती है। उसे बहुत सम्मान मिलना चाहिए। इस की वजह से माता के शुक्र और सम्मान बच्चों का ऐसा कर्ज है जिसे हम अपने जीवन के अंत तक अदा कर नहीं सकते हैं।

जहां तक खुशबू की बात है अल्लाह के रसूल की। तो यही कारण है कि आप के लिए खुशबू को पसंदीदा बनाया गया। आप की खुशबू ऐसी थी, जिसे फरिश्ते भी प्यार करते। खुशबू और सुगंध सफाई की निशानी है। जिस इन्सान के पास खुशबू होती है, बेशक वह इन्सान साफ मुसलमान है। पैगंबर (सल्ल°) अपने आप को साफ सुथरा रखते और अपनी देखभाल करते थे। और उन के पसीने से गुलाब की खुशबू आती थी। पैगंबर (सल्ल°) जब एक बार किसी बच्चे के सिर पर हाथ लगा देते तो देर तक खुशबू आती रहती।

इस के बारे में आमश ने इबराहीम से रिवायात किया कि पैगंबर (सल्ल॰) अपनी खुशबू से अंधेरी रात में भी पहचान लिए जाते थे। (अद दारमी, अल-मुकद्दमा, 10)

फिर हम जब नमाज़ के जौहर की ओर आगे बढ़ते हैं तो पाते हैं कि नमाज अल्लाह के पैगंबर (सल्ल॰) की आँखों की ठंडक है। क्यों कि नमाज के जरिए अल्लाह से नजदीक हुआ जाता है। नमाज अल्लाह से चर्चा करना है। जो इन्सान नमाज पढ़ता है, तो वह ऐसा है जैसे वह अल्लाह को देखता है। और यदि वे नहीं देखता, तो उस को तो अल्लाह देखता ही है। इसीलिए आप के आंखों की ठंडक नमाज में रखी गयी है।

अल्लाह के पैगंबर (सल्ल॰) का बर्ताव अनाथों के साथ

अल्लाह तआला ने आप को अनाथ और यतीम बना कर दुनिया में भेजा ताक़ि यतीम अपना पूर्ण अधिकार और हक़ मिल सके। मुहम्मद (सल्ल॰) अनाथ और गरीबों को खोजते थे और उन को उनका हक देते थे। जब पैगंबर (सल्ल॰) का जन्म हुआ था तो आप के पिता की वफात हो चुकी थी। इस की वजह से अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने अनाथों से बहुत महरबानी का बर्ताव करते और उन से अच्छा संबंध रखते थे। कुरान -करीम में अनाथों और गरीबों के लिए बहुत ज्यादा आदेश नाजिल हुये हैं। अल्लाह ने इन आयतों को इसलिए कुरान में लिखा है कि मुसलमानों को शिक्षित करे कि यतीमों से अच्छे संबंध स्थापित करेः

فَأَمَّا الْيَتِيمَ فَلَا تَقْهَرْ

"यतीम को न झड़को।" (जुहा: 9)

पैगंबर (सल्ल°) ने अपनी पाक हदीस में फ़रमाया:

"सबसे अच्छा मुसलमान का घर वह है कि उस में अनाथ हो और उस से भलाई करें और बुरा घर वह घर है कि जिसमें अनाथ हो और उस से बुराइ करेँ।, (इब्ने माजा, अदब, 6)

दूसरी जगह में पैगंबर (सल्ल°) ने कहाः

,जो मुसलमान अनाथों को खाना देगा अल्लाह उस आदमी को जन्नत के अंदर दाखिल करेगा लेकिन अगर वह बहुत गुनाहगार हो और अल्लाह उस को माफ न करें तो अलग बात है।" (तिरमिजी, अल-बिर्र, 14/1917)

दूसरी हदीस में पैगंबर (सल्ल°) ने कहाः **,जो इन्सान अनाथों के सिर पर केवल अल्लाह के लिये हाथ फेरेगा, उस के बाल की हर एक संख्या पर जिस पर उसने हाथ लगाया, अल्लाह तआला नेकी लिखेंगे और जो आदमी कोई अनाथ के बेटे या बेटी के साथ अच्छाई करेगा वह जन्नत में मेरे साथ इस तरह रहेगा और अपनी बीच की और शहादत की ऊँगली से इशारा किया।,** (अहमद, ज, 5/250)

पैगंबर (सल्ल°) समाज के दयालु और रहम दिल लोगों को बहुत जोर दे कर वसीयत और नसीहत करते थे कि अनाथों की देखभाल किया करें। और फिर फरमाते कि:

"मैं और जो इन्सान अनाथ की देखभाल करते हैं हम जन्नत में ऐसे बैठेंगे" और आपने अपनी बीच की ऊँगली और पास की उंगली को एक साथ करके इशारा किया।, (बुखारी, अल-अदब, 24)

दूसरी जगह में एक सहाबी ने अपनी संगदिली की शिकायत की तो रसूल (सल्ल°) ने उस को नसीहत की:

,अपने दिल को नरम करने के लिए कोई गरीब को खाना दे दो और कोई अनाथ के सिर पर दुलार करो।, (अहमद,ज, 2, 263, 387)

दूसरी जगह पर रहम और मेहरबानी के उच्चतम स्तर पर पहुंच कर यह फ़रमाया:

,मैं हर एक मुस्लिम बंदे के खुद उसकी जात से भी क़रीब हूं। जो इन्सान अपने माल को विरासत रख दे, तो वह माल उस के बच्चों के लिए है और हर इन्सान अपने ज़िम्मे क़र्ज़ या व्यर्थ माल छोड़े तो वह मेरी ओर है।, (मुस्लिम, अल-जुमा, 43. इबने माजा, अल-मुकद्दमा, 7)

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जानवरों के साथ व्यवहार

अल्लाह के दयालु पैगंबर (सल्ल॰) के हर हर अमल में रहमदिली और मेहरबानी अवश्य थी। आप हर प्राणी से अच्छा और रहमदिली का बर्ताव करते थे और हर एक की जरूरत पूरी करते थे। जानवरों को भी इस रहमत के सागर में से हिस्सा मिला था। उन की नेकी और रहमदिली से जानवर भी महरूम नहीं थे। लोग इस्लाम के पहले ज़माने में जानवरों से अच्छा व्यवहार नहीं करते थे। वे जीवित जानवरों का मांस काट कर खा जाते थे। जानवरों के बीच लड़ाई एवं चोट की प्रतियोगिता का आयोजन कर लेते थे। अल्लाह के पैगंबर (सल्ल॰) ने इन सब प्रकृति के विपरीत क़लमों के सारे नुकसान लोगों को समझाए और इन सब को बंद कर दिया।

अबु वाकिद लेसी ने इसके बारे में रिवायत किया कि:

,रसूल (सल्ल°) मदीना आये, तो देखा कि मदीना निवासी ऊँट के कोहान और उस की पीठ को काट दिया करते हैं। पैगंबर (सल्ल°) ने इस बुरे अमल को मना किया और कहा:

"जिस जानवर को जिन्दा हालत में काटा जाएगा वह मृत की तरह है। (तिरमिजी, अस-सैद, 12/1480, अहमद, 5, 218)

जाबिर ने रिवायत किया है कि पैगंबर (सल्ल°) ने एक गधे को देखा कि किसी ने उस के मुँह पर एक दाग लगा दिया तो आप ने कहा:

,क्यों मैं ने ऐसे कामों से मना नहीं किया? "**कोई ऐसे काम करे अल्लाह उससे नाराज होगा**।" और चहरे पर मारने और तमंचा लगाने से भी मना किया है।" (अबु याला: अलमुसनन्द, 4, 76)

अबदुरहमान इब्ने अबदुल्लाह ने अपने पिता से रिवायत किया, उन के पिता अल्लाह के रसूल (सल्ल°) के साथ एक सफर में थे और नबी (सल्ल°) किसी काम से गये। हम ने चिड़िया को देखा उस के पास दो बच्चे थे। हम ने बच्चों को ले लिया और उन की माँ हमारे पास दौड़ती थी। जब अल्लाह के पैगंबर (सल्ल°) आये तो कहा:

,किस ने इस चिड़िया के बच्चों को अपने माँ से जुदा किया? चिड़ियों को उसकी माँ को वापस करो।, हम एक गाँव को आग लगा रहे थे। आप ने कहा:

,**किसने इस गांव को आग लगायी?** हम ने कहा कि हम ने लगायी।, आप ने कहा:

,आग से सज़ा देने का अधिकार केवल आग के पैदा करने वाले के पास ही है।, (अबुदाऊद, अल-जिहाद, 112/2675, अल-आदब, 163-164/5267)

एक दिन अल्लाह के रसूल (सल्ल°) अहराम बांध कर मदीना से मक्का के इरादे से तशरीफ़ ले जा रहे थे। जब एक स्थान पर पहुँचे, जिसे उसाया कहते थे। उन्होंने देखा कि एक हिरन पेड़ के नीचे सोया हुवा है। नबी (सल्ल°) अपने सहाबा में से एक को आदेश दिया कि **उस के पास रहना, ताकि कोई इंसान उसको परेशान न करे, यहां तक कि सब लोग गुज़र जाएं।।** (मुअत्ता, अल-हाज 79, नसाई, हाज, 78)

एक बार और जब पैगंबर (सल्ल°) मक्का को फतह करने के लिए दस हज़ार के ज़बरदस्त लश्कर के साथ जा रहे थे, तो घाटियों और वादियों में उन्होंने देखा कि एक कुतिया अपने बच्चों पर डर पाकर चिल्लायी और उस के बच्चे दूध पी रहे थे। रसूल (सल्ल°) अपने सहाबा में से जुऐल इबने सुराका को आदेश दिया कि **कुतिया के पास जाओ और उस की रक्षा करो और लश्कर से उस को और उस के बच्चे को कोई चोट ना लगे।,** (वाकिदी, ज. 2, 804)

एक दिन पैगंबर (सल्ल°) एक ऊँट के पास गुजर रहे थे, कि वह बहुत पतला और दुबला था, तो आप ने फरमाया:

,इन गूंगे जानवरों के बारे में अल्लाह से डरना। ,यह हैवान बहुत पतला और दुबला है। उस पर अच्छे से सवार हों और पसंदीदा खाने को भी दीजिए।, (अबुदाउद, अल-जिहाद, 44/2548)

अब्दुल्लाह इब्ने जाफ़र ने कहाः ,एक दिन रसूल (सल्ल°) मेरे पीछे सवार थे, और आप मुझ से एक ऐसी बात बोले, जो मैंने अभी तक किसी से नहीं बोली है। बाद एक बाग के अंदर गये, वहाँ एक ऊँट था। जिस को पैगंबर ने देखा तो वह रोया और उस के आँखों में आँसू जारी हो गये। पैगंबर (सल्ल°) ऊँट के पास आये और उस के आसुओँ को साफ किया, कुछ खामोश बैठे और कहाः

,कौन है इस ऊँट का मालिक?, यह ऊंट किसका है? अंसार का एक जवान आया और कहा: "ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल°) यह मेरा ऊँट है। तो रसूल (सल्ल°) ने फरमाया:

,अल्लाह से नहीं डरते है कि तुझको इस ऊँट का मालिक बना दिया, आप ने इस हैवान को इतना अजाब और कष्ट दिया, भूखा प्यासा रखा कि इसने मुझ से शिकायत की। (अबुदावुद, अल-जिहाद, 44/2549)

एक बार अल्लाह के रसूल (सल्ल°) एक कौम के पास से गुजर रहे थे कि वे अपने ऊँटों और सवारियों पर बैठे हुवे थे। और सवारियां ठहरी हुई थीं। आप ने उन से फ़रमाया:

"अपने ऊँटों पर अच्छी तरह बैठना और उनको समय पर अच्छे से छोड़ना। उन को हर समय बातें करते हुवे सड़क और बाजारों में अपनी कुर्सी मत बनाना। कभी ऐसा होता हैं कि सवारी अपने मालिक से बेहतर हो जाती है। और अपने मालिक से ज्यादा अल्लाह का ज़िक्र करती हैं। (अहमद, ज. 3, 439)

अल्लाह के रसूल ने एक मर्द को देखा कि वह एक भेड़ को ज़िबह रहा है और इस के बाद चाकू को तेज करने लगा। पैगंबर (सल्ल°) इस बेरहमी पर हैरान हो गये और कहा:

,आप चाहते हैं कि उस को कई बार मारें? क्या यह नहीं हो सकता था कि आप ज़िबह करने से पहले इस चाकू को तेज कर लेते?।, (हाकिम, 4, 257, 260)

अब्दुल्लाह इब्ने मसूद ने पैगंबर (सल्ल°) से रिवायत किया: **,क्या आप को मैं न बता दूं कि किस के लिए आग हराम है?,** लोगों ने कहा: ज़रूर बताइए ऐ अल्लाह के रसूल। अल्लाह के रसूल (सल्ल°) ने फरमाया: **,जो इन्सान अल्लाह की सारी मखलूक के**

प्रति दयालु, रहमदिल और मेहरबान होता है।, (इब्ने हिब्बान, सहीह, 2, 216/470, अहमद, ज. 1, 415)

पैगंबर (सल्ल°) ने रहमदिली और बेरहमी को ऐसे उल्लेख किया:

,एक मर्द रास्ते में जा रहा था और उस को प्यास लगी, एक कुए के पास पहूँचा और पानी पिया। बाद में एक कुत्ते को देखा कि वह प्यास से मिट्टी खा रहा था। मर्द ने कहा: इस कुत्ते के हालत में, मैं भी गिरिफ्तार हो गया था। उसके बाद अपने मौजों में पानी भरा और कुत्ते को पानी पिलाया। कुत्ता खुश हो गया। अल्लाह ने उस के अच्छे कार्य पर उस के गुनाह को माफ किया।" पैगंबर (सल्ल°) से पूछा गया:

"ए अल्लाह के रसूल (सल्ल°) ,जानवरों के साथ अच्छे बर्ताव पर मुझ को क्या इनाम मिलेगा?, जवाब में फरमाया:

,हर तर जिगर के बदले बदला है।, (बुखारी, अल मुसाकात, 10)

दूसरी हदीस में है:

,एक औरत को बिल्ली को अज़ाब देने के लिए नर्क में डाला गया। उस ने बिल्ली को बंद किया। उस को ना खाना दिया और ना पानी, और ना ही उसको छूट दी कि वह स्वयं के लिए भोजन का बंदोबस्त करे।, (बुखारी, अल अनबिया, 34. मुसलिम, अस-सलाम 145-151, अल बिर (सल्ल°), 133, नसाई, अल-कसुफ, 14)

अरब और दुनिया के बेहतरीन नबी मोहम्मद (सल्ल°) ने ऐसे जाहिल समाज को बेहतरीन समाज और ज़माने को सब से बेहतरीन ज़माने में बदल दिया। वे संगदिल-लोग अपने बेटियों को जिन्दा कब्र में दफन करते थे। इस्लाम के असर से रहमदिल और मेहरबान

के ऐसे कुतुब हुए कि अपनी दया के कारण जानवरों से भी अच्छा बरताव करते थे।

क्योंकि उन लोगों की सोच और जिन्दगी को पैगंबर (सल्ल°) ने एक शानदार नमूना बन कर प्रभावित किया। यहां तक कि एक छोटी सी चिड़िया से भी इतनी नरमदिली और एहतियात से बदल दिया। उन्होंने अपने दोस्तों को इतने नर्मदिली की तरबियत दी, कि आप स. जब उन लोगों को साँप या बिच्छू को मारने का आदेश देते थे, तो हमेशा नसीहत करते थे कि एक चोट से उन को मार दो और उन को तकलीफ मत दो। एक हदीस में इसी के बारे में फरमाते हैं:

,कोई एक चोट में साँप को मारे, उस को इसके बदले में नेकी मिलेगी और किसी ने दूसरी चोट में साँप को मारा, उस को इस से कम नेकी मिलेगी और किसी ने तीसरी चोट में उस को मारा उस बंदे को सब से कम नेकी मिलेगी।, (मुस्लिम, अस-सलाम, 147. अबुदाऊद, अल अदीब, 162-163-5263)

अल्लाह के रसूल (सल्ल°) ने दूसरे कष्टदायक जानवरों सांप बिच्छू आदि को मारने के लिए भी रहम और दया की शिक्षा दी। क्या यह सब आपके रहम दिल होने का प्रमाण नहीं है? और क्या इस स्तर तक पहुंचना आम इंसान के बस में है?

अल्लाह के रसूल अपने इस मक़ाम और अखलाक के आधार पर कभी अपनी तारीफ करवाना पसंद नहीं करते थे। और आप सदैव बड़ी शालीनता में यह कहते हुवे अल्लाह की नेअमतों को शुमार करते **"कोई अभिमान नहीं"** (तिर्मिज़ी, मनाकिब, 1; इब्ने माजा, जुहद, 237, अहमद)

क्योंकि घमंड और अभिमान की सीढ़ी अपनी तारीफ करना और सुनना है। यह इंसान को घमंड और अहंकार की ओर ले जाता

है। और हालांकि आप पूरी मख़लूक़ में सब से उत्तम और उच्चतम थे, अल्लाह ने स्वयं आप की प्रशंसा की, किंतु फिर भी आपने फरमाया:

"मुझे ऐसे मत बढ़ाओ जैसे ईसा बिन मरयम को ईसाइयों ने बढ़ाया। मैं केवल अल्लाह का बंदा और उसका रसूल हूँ।" (बुखारी, अंबिया, 48, अहमद, जि, 1, 23)

यह सच है कि हर इंसान के अंदर बंदा होने की योग्यता होती है। यह अलग बात है कभी वह अपनी इच्छाओं का बंदा हो जाता है और कभी अपने रब का, किंतु जो अपने रब का बंदा होता है वह इच्छाओं से बेपरवाह हो जाता है।

अल्लाह के रसूल ने अपने जीवन में और उस के हर क्षेत्र में संतुलन बनाए रखने में किसी तरह की कमी नही छोड़ी। पूरे मानवीय इतिहास में ऐसा किसी अन्य समुदाय के बड़े व्यक्तित्व में हमें कहीं देखने को नहीं मिलता।

यह संभव है कि हम विभिन्न समाजों और समुदायों में कुछ ऐसे लोग और सितारे ढूंढ लें, जो किसी एक क्षेत्र में महान हो। किंतु जीवन के हर क्षेत्र में महान होना केवल आप ही का कमाल है। हर एक के बस की बात नहीं।

अर्थात अल्लाह के पैगंबर (सल्ल॰) इतने आदर्श और उदाहरणीय नरमदिल और मेहरबान थे कि कोई उन के जैसा आज तक के पूरे इतिहास में नहीं हुवा।

आप को अल्लाह ने समूची मानवता के लिए इतने गौरव और गुण दिए, जितने किसी अन्य कभी नहीं दिए गए। संक्षिप्त में कहा जाए तो आप चरित्र, नैतिकता और उच्च व्यक्तित्व का बेमिसाल नमूना थे।

यही कारण है कि अल्लाह के रसूल अपने कमाल से पूरे संसार के सामने एक अद्वितीय नमूना और आदर्श बन कर उभरे।

इसका जिक्र करना जरूरी है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल°) नमाज को बहुत ध्यान से पढ़ते थे और नमाज को महत्वपूर्ण जानते थे। रातों में बहुत कम सोते थे। जब रात में लोग सोते थे, वे हमेशा इबादत करते और रोते थे। आखिरी जीवन में अल्लाह के रसूल (सल्ल°) की बीमारी बहुत बढ़ गयी थी। फिर भी आप नमाज को मस्जिद में पढ़ने की कोशिश करते थे।

अब्दुल्लाह इब्ने शुखैर (र°) आप के दिल से नमाज पढ़ने को नकल करते हैं:

,जब में पैगंबर (सल्ल°) के पास आया तो देखा कि आप नमाज पढ़ रहें हैं और आप के पेट में से हांडी के उबलने की तरह आवाज़ आ रही है। अर्थात आप रो रहे थे।, (अबुदाऊद, अस-सलात, 156-157- 904. नसाई, अस-सहव, 180)

अल्लाह के रसूल (सल्ल°) पर रमजान के अलावा भी कोई महीना और सप्ताह ऐसा नहीं बीतता था कि जिसमें आप रोजा ना रखते हों। आप अक्सर नफल रोजा रखते थे। इसी आधार पर मोमिनों की मां आईशा (र°) ने फरमाया:

,अल्लाह के पैगंबर इतने रोज़े रखते थे कि लगता था कि इफ्तार नहीं करेंगे। और ऐसे इफ्तार करते थे कि गुमान होता कि रोजा नहीं रखेंगे।, (बुखारी , अस-सौम, 52)

पैगंबर हर महीने की 13, 14, और 15 को, 6 दिन शव्वाल महीने में , 9, 10 या 10-11 मुहर्रम के महीने में रोजा रखते थे। सोमवार और बृहस्पतिवार के दिनों में रोजा रखना आप की आदत थी।

ज़कात की आयात नाज़िल होने के समय उन्होंने सब मुसलमानों को जकात अदा करने और भले कामों हेतु खर्च करने का हुक्म दे दिया। फरमान देने से पहले वे खुद अम्ल करते थे। और अल्लाह के रास्ते में खर्च करने की बेहतरीन मिसाल प्रस्तुत करते। इस खातिर में सब से पहले जब दूसरे लोगों को जकात देने का आदेश देते थे, तो वे खुद नमूना बनते थे । आप की जिन्दगी अल्लाह की इस आयत के अनुरूप चलती थी।

اَلَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيمُونَ الصَّلٰوةَ
وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ

"और इन मुसलमानों को जो कुछ हम ने दिया है, यह उस में से खर्च करते हैं।" (बक़रा-3)

आप अल्लाह के रास्ते मे खर्च करने वालों की प्रशंसा करते थे। जैसे मालदारों और व्यापारियों की भी अल्लाह के रास्ते में खर्च करने पर प्रशंसा करते थे।

सितारों के समान उच्च मूल्य

अल्लाह के नबी (सल्ल०) के हाथ में दुनिया की हर नेअमत थी, किनयु आप कभी उनको एकत्र कर के नहीं रखते थे। अबुजर गिफारी ने कहा कि:

मैं जब रास्ते पर अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के साथ जा रहा था, तो हमारे सामने उहुद का पहाड़ नजर आया। आप ने देखा और बोलेः

,ओह, अबुजर।, मैं ने कहाः

,जी हाँ।, अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फिर कहा:

,मुझे पसंद नहीं है कि उहुद के इस पहाड़ जितना माल सोना वगेरह मेरे पास हो, और मुझ पर तीन दिन गुज़र जाएं और मेरे पास एक दीनार भी बचे, मगर यह कि मैं उसमें से अपने क़र्ज़ अदा करूं या उसको भी अल्लाह के बंदों पर इस तरह, इस तरह और इस तरह खर्च कर दूं। दाएं, बाएं और पीछे, हर तरफ। बाद में चलते हुए कहाः

,कयामत के दिन में जिन लोगों के पास बहुत माल है, वही कम माल वाले होंगे, मगर जिसने ऐसा, ऐसा और ऐसा कहा.।, दाएं, बाएं और पीछे। **"और बहुत कम हैं, जिन्होंने.."**, (बुखारी, अर रिकाक, 14. अल इसतिकराज, 3. मुस्लिम अज़-ज़कात, 32)

कभी एसे हुआ कि पैगंबर (सल्ल°) दो या तीन दिन तक बिना कुछ खाये पीये रोज़ा रख लेते थे। जब आप के साथियों ने, आप के जैसा रोजा रखना चाहा तो उन्होंने कहा कि रात में रोजा मत रखना। वे बोले: फिर आप रखते है। तो आप ने फरमाया कि **,मैं आप लोगों के जैसा नहीं हूं, मुझे खाना पीना मिलता है।** मतलब यह है कि गैब से अल्लाह ये सब मुझे दे देंगे। और आप अपने दोस्तों को रोजा रखने से खुद पर दया हेतु मना करते थे।, (अल बुखारी, अस सौम, 48)

ज़रूरी है कि मोहम्मद (सल्ल°) को बतौर हमारे पेशवा और मुरशिद (आध्यात्मिक गुरू) के, जो हम को सीधे रास्ते की हिदायत करते हैं, हम आप को इस दृष्टि से भी पहचानें और इस दृष्टि से भी आप को जानें कि आप की बातों औरतरीक़ों पर अमल करने का क्या मापदंड और मेअयार है। क्योंकि आप के सब अमल और तरीके दरअसल दो हिसों में बांटे जा सकते हैं। :

1) ,पहले वे अमल और स्थितियाँ जो सिर्फ आप की विशेषताएं हैं,

2) दूसरे वे अमल और आदेश जो सब मुसल्मानों के लिए हैं।

इस तरह से पहला मापदंड सिर्फ अल्लाह के रसूल (सल्ल°) के लिए ही हैं, और वह हमारी शक्ति के बाहर हैं। क्योंकि यह ऊंचा मापदंड और बुलंद मुकाम सितारों तक पहूँच गया। हमारे लिए उसकी कल्पना करना भी असंभव है। लेकिन वे बातें, काम और चीजें, जिनको दूसरा मापदंड शामिल है, तो वे दूसरे सब इन्सानों के लिए संभव हैं, जिसकी हर एक इन्सान के लिए अनुक्रमा करना जरूरी है। और हम उसकी रौशनी में चलें जितना हमारे बस में है।

किसी इन्सान में मोहम्मद (सल्ल°) के दरजे तक पहूँचने की कुदरत तो नहीं है, लेकिन उन की अनुक्रमा कर के उसके लिए यह

संभव है कि वह अपनी छोटी सी दुनिया में आप की अनुसरण कर के और पैरवी करके दूसरा छोटा मोहम्मद बन जाए।

मिसाल के लिए यह अल्लाह का बारीक चुनाव ही था, कि उस्मानी तुर्कों ने अपने मुल्क की रक्षा करने वाले सैनिकों को छोटे मुहम्मद अर्थात मुहम्मदी सिपाही का नाम दिया।

एक बात यह भी जानने की है कि हम को अल्लाह के रास्ते में कितना खर्च करना है, यह तो मालूम है, किंतु उसकी इबादत कितनी मात्रा में क़रनी है, वो मालूम नहीं है। अतः ज़रूरी हैई कि अंतिम सांस तक इसके साथ लग कर और सुन्नतों से चिपक कर जितना हमारे बस में है, अपनी ज़िन्दगी गुज़ारें।

इस सिलसिले में हमारे लिए सर्वोत्तम नमूना, जिसमें हम अपने आप को तौल सकें, अंसार और मुहजिरीन की बेमिसाल जमाअत है, जिसे अल्लाह के रसूल ने तरबियत करके संवारा। ताकि वे उस नेअमत का शुक्र अदा करें, जो अल्लाह ने उनको दी। जिसने बेमिसाल उदाहरण प्रस्तुत करते हुवे समरकन्द और चीन आदि के इलाक़ों को भी इस दीन को फैलाने हेतु अपने कदमों से रौंद डाला। न कभी थक के बैठे। और न कभी हार मानी।

तीसरा भाग

- अल्लाह के रसूल (सल्ल°) के अनुसरण में आध्यात्मिक परिपक्वता
- प्रेम और प्यार से आप की पैरवी
- सौभाग्य का युग: आप की मुहब्बत और चरित्र का दर्पण
- पैगंबर (सल्ल°) के प्रति प्रेम के निविद गीत
- रसूलुल्लाह पर दुरूद पाक और सलाम

अल्लाह के रसूल (सल्ल°) के अनुसरण में आध्यात्मिक परिपक्वता

मान‍नीय रसूल (सल्ल°) के उत्कृष्ट गुणवताओं को एक बेहतरीन नमूना और आदर्श के तौर पर सहाबा ने अपनाया। अब हमें सहाबा के उत्तम चरित्र को अपनाने और उनकी उच्च नैतिक्ता के नजदीक आने के लिए सब से पहले जरुरी अध्यात्मिक परिपक्वता तक पहुंचना चाहिये। क्योंकि उन के उत्कृष्ट गुणों के बारे में आयतों में कहा गया हैः

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيراً

"रसूलुल्लाह की जात में आप लोगों के लिए एक बेहतरीन नमूना और आदर्श है। जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर भरोसा रखें और खुदा को खूब याद करे।" (अल-अहज़ाब 21)

जैसे कि हम देख सकते हैं आयत इन्ही दो गुणों को दर्शाती है ,,जो अल्लाह के न्याय के दिन की आशा (आने में विश्वास) रखता है और अल्लाह को खूब याद करते हैं,, इन में यह दोनों चीजें हमारे लिए अल्लाह – रसूल (सल्ल°) के रास्ते पर उचित रूप से चलने के

दो महत्वपूर्ण स्तर प्रदान करते हैं। जिन पर चल कर हम अल्लाह के रसूल को बतौर आदर्श व्यक्तित्व के अपना सकते हैं।

अतः इबादतें तो सीमित समय तक होती हैं, परन्तु ईमान की रक्षा हर समय की जानी आवश्यक है। और ईमान की रक्षा हेतु ज़रूरी है कि ज़िक्र ज़बान पर हर समय रहे। अन्यथा दिल के अंदर शैतानी खयालात आ जाएंगे। अतः अल्लाह को एक लम्हे के लिए भी न भूला जाए।

इसी कारण विभिन्न आयतों में सर्वशक्तिमान खुदा आदेश देते हैः

,,ऐ, वे लोगों, जो ईमान रखते हैं, अल्लाह को बार-बार याद कीजिए,।[38] इस आयत में ज़िक्र की कोई मात्रा और और संख्या खुल्लम खुल्ला हमारे सामने नहीं आयी। मतलब साफ है कि हर निर्धारित चीज़ पूरी करने से ही सम्पन्न होती है। ज़िक्र के क़रने की कोई सीमित संख्या नही हैं।[39] अतः जो नेक बन्दा बनना चाहे, वह उसे चाहिए कि खूब ज़िक्र करे। जितना अधिक किया जाएगा, उतना ही लाभ होगा।

एक अन्य आयत में अल्लाह फरमाते हैं:

اَلَّذِينَ اٰمَنُوا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِ

اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ

38. अहज़ाब 41, जुमुअह 10

39. हर ऐसी चीज़ जिसकी कोई निर्धारित सीमा या हद न बतायी गयी हो, उसका उद्देश्य अधिकाधिक संभावित सीमा तक पहुंचना होता है।

"**वे लोग जो ईमान ले आये, और उनके दिल अल्लाह के ज़िक्र के साथ संतुष्ट हैं। सुनलो, अल्लाह के ज़िक्र से ही दिलों को शांति और संतुष्टि मिलती है।**" (रअद, 28)

ज़िक्र से मुराद किसी एक शब्द को विशेष अंक या संख्या में ज़बान ही ज़बान से दोहराना नहीं है, बल्कि ज़रूरी है ज़िक्र को अल्लाह के ध्यान के साथ दिल से किया जाए। क्योंकि अल्लाह की तवज्जोह का असल केंद्र दिल ही है। इस से रोग दूर होंगे। दिल का हर रोग और मेलकुचेल साफ होगा। अल्लाह का नूर भरेगा। और अल्लाह की पहचान नसीब होगी। इंसान अल्लाह के रहस्यों को जानने का उत्सुक होगा। जैसे ही दिल अल्लाह अल्लाह करेगा, बंदा ऊंचाइयों को छूता चला जायेगा। इसी कारणवश अल्लाह के रसूल ने हदीस में फरमाया:

"अल्लाह से मुहब्बत की निशानी अल्लाह की याद और ज़िक्र से मुहब्बत है। (बेहक़ी, शुअब, 1, 367, सूयुति, जि, 2, पेज, 52)

आशिक़ कभी एक पल के लिए भी अपने माशूक़ और महबूब को नहीं भूल सकते। उनकी ज़बानें और दिल कभी उसके ज़िक्र से गाफ़िल नहीं होते। अतः जो ईमान का मिठास चखना चाहे, उसे चाहिए कि दिल ही दिल में ज़िक्र करे। तथा उठते बैठते सोते जागते हर समय उसको याद करे। साथ ही अल्लाह की छोटी छोटी और बारीक चीजों में ध्यान लगाएं, जिनके कारण अल्लाह ने आसमान और ज़मीन को पैदा किया। फिर वह कह पड़े:

اَلَّذِينَ يَذْكُرُونَ اللّٰهَ قِيَاماً وَقُعُوداً وَعَلٰى جُنُوبِهِمْ
وَيَتَفَكَّرُونَ فِي خَلْقِ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضِ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ
هٰذَا بَاطِلاً سُبْحَانَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ

"ए हमारे रब! तूने यह सब व्यर्थ नहीं बनाया है। महान है तू, हमें आग की यातना से बचा ले।" (आलि इमरान, 191)

बहरहाल वे दिल जिनको इस नरमी का तजुर्बा नहीं, वे अल्लाह को नहीं चाहते। इसी कारण अल्लाह तआला फरमाते हैं:

,,... वह जिन के मन अल्लाह की याद को समझने के मामले में कठोर हैं। वे खुली हुई गुमराही में हैं। (ज़ुमर, 22)

अतः जो भी इंसान अल्लाह की याद से दूर हो, जैसा कि आयत में है, उसका अहसास और मानवीय विशेषता समाप्त हो जाती है।

अंत में कह सकते है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल°) का अनुसरण करने के लिए उचित रूप से दिलों को इश्वरीय रूप से भरना चाहिए, अल्लाह और पुनर्जन्म के दिन से मिलने का अपना उद्देश्य और इरादा बनाकर दुनिया और उसकी चीजों का प्यार छोड़ करके अल्लाह की याद के लिए दिल को स्वच्छ करना आवश्यक है।

अल्लाह के पैगम्बर की पैरवी प्रेम और लगाव से

प्रेम के साथ अल्लाह के नबी (सल्ल°) के पीछे चलने का नतीजा यह है कि आप के पैरों की धूल हमारे सिरों का ताज हो। इमानदारी और तहे दिल से उन पर विश्वास रखकर उस का पालन किया जाए और माना जाए। क्योंकि वे मानव-जाति के लिए एक दया होते हुए जीवन के हर पहलुओं में और पूरी करह सम्पन्न व्यक्तित्व है।

निम्न आयत भली भांति दर्शाती है कि आप का हृदय मुसलमानों के प्रति कितना दलायु, उदार और नरम हैः

لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ
حَرِيصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِينَ رَؤُفٌ رَحِيمٌ

"अल्लाह की तरफ से तुम्हारी ओर एक रसूल आया है जो तुम ही में से है। तुम्हारे साथ बहुत दयालु और प्रेम भाव रखता है।" (अत-तौबह, 128)

और यह हदीस भी आप की उम्मत के प्रति दया और उदारता को स्पष्ट करती है। अतः अब्दुल्लाह बिन मसूद से रिवायात है:

आप ने अपने स्वर्गवास से एक महीने पहले हम को खबर दे दी। फिर जब मौत क़रीब आगयी, तो एक दिन हम सब को हज़रत

आयशा के घर इकट्ठा किया। आप की आंखों में आंसू जारी हो गए। आप ने फरमाया:

,,आप का अभिनंदन, अल्लाह आप को आबाद रखे, आप की मदद फरमाये। आप बुलंद करे, रोज़ी दे, नफा दे, हिदायत दे, क़ुबूल करे। मैं तुमको अपने बाद अल्लाह से डरने की वसीयत करता हूँ और उसी के हवाले करता हूँ... ।,,[40]

रसूलुल्लाह (सल्ल०) अपने कार्यों, शब्दों और महान स्वभावों से मानव-जाति पर भेजी हुई दया, मार्ग दर्शन करने वाला एक रहनुमा थे। अल्लाह के सीधे रास्ते पर सब से अधिक गंभीर दर्द और कठिनाइयों को वे अपने कंधों पर उठा कर ले गए। आप की एक ही मज़बूत इच्छा थी कि आप के अनुयायियों को हिदायत वाला जीवन मिल जाए। और इस के आधार पर अल्लाह की स्वीकृति और इनाम प्राप्त करें, इसके लिए आप अपनी की जान को भी खतरों में डाल देते थे।

इस के लिये इतनी कोशिशें और प्रयास करते थे कि उनको कभी-कभी परमात्मा चेतावनी देते थे कि वह खुद को मार सकते हैः

فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَفْسَكَ عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ
اِنْ لَمْ يُؤْمِنُوا بِهٰذَا الْحَدِيثِ اَسَفًا

"ए मुहम्मद, यदि यह लोग मुसलमान न हुवे, तो शायद आप इन के पीछे अफसोस और चिंता कर कर के अपनी जान दे दें।"

(अल-कहफ, 6)

40. तबरानी, अलअवसत, 4, 208, अबू नईम, हिलयतुल औलिया, बैरूत, 1967, जि. 4/168

और अल्लाह तआला ने दूसरी जगह फ़रमाया:

لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَفْسَكَ اَلَّا يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ

"शायद आप इन के ईमान न लाने के गम में खुद की जान खो बैठें।" (अश-शुआरा, 3)

ये आयात साबित करती हैं कि माननीय पैगंबर (सल्ल°) आशीर्वाद, दया और करूणा से प्रेरित होकर किस कदर इच्छा रखते थे कि इस दुनिया के हर एक रहनेवाले इंसान को हिदायत मिल जाये। तथा वह खुद को नरक की आग की पीड़ा से बचा ले।

हम को विचार करना चाहिए कि इस गंभीर दया और अल्लाह के नबी (सल्ल°) के अपने उम्मत के प्रति प्यार के बदले में हम उन्हें क्या दे सकते हैं?

दरअसल, अल्लाह के रसूल (सल्ल°) से हमारे प्यार का आकलन करने के लिए यही मापदंड है कि हम पवित्र कुरआन आउट सुन्नत को हम कितना मानते हैं। अपने जीवन में उन की हालत को किस तरह प्रतिबिंब करते हैं। और कैसे उन की हालत को अपनी हालत में साकार बनाते हैं। तो उन सहाबा की मुहब्बत का क्या आलम होगा जिन्होंने अपने जीवन आप की मुहब्बत और पैरवी में न्योछावर कर दिए।? हमे इन्हीं कसोटियों के आधार पर अपने प्रेम और अनुसरण को नापना चाहिए और उन के हालात किस तरह बदले? हमें अपने गुनाह, गलातियाँ, कमियाँ इसी मापदंड पर नापनी चाइये। जिस तरह हमें अपना शरीर ज़म-ज़म के पानी से धोना चाहिए, इसी प्रकार हमें उन के दयालु जीवन के बुद्धिमान्ता से आध्यात्मिकपूर्ण पुनर्जन्म चाहिए।

अल्लाह तक पहुंचाने का भेद इसी में निहित है कि साफ दिल से उच्च-व्यापी किताब और महान सून्नह के निकट आया जाए। अर्थात रसूलुल्लाह के चरित्र और आप की उच्च जीवन शैली की पैरवी करना। इसी प्रकार हर उस व्यक्ति से प्यार करने में निहित है, जो उनसे प्यार करे। और हर उस से नफरत करना जो उन से नफरत करे।

क्योंकि अल्लाह की मुहब्बत दिलों की ज़िंदगी का कारण है। उनके लिए सलामती और सुरक्षा लेकर आता है। और मुहब्बत और नफरत दोनों चीजें एक दिल में एक ही दिल में एक साथ कभी नहीं रह सकतीं। जो दिल भी एक से खाली होगा, वह दूसरे से भर जायेगा।इन दोनों विरोधी चीजों के बीच उतना ही अंतर है, जितना आसमान की सर्वोच्च चोटी और धरती के न्यूनतम भाग के बीच है।

कितना अच्छा है वो संदेश जो अपनी कविता में कवि- **कमाल अदीब कुर्कचुआगलू** ने उन लोगों को जागरूक करने के लिए दिया है, जो सून्नत और अल्लाह के मैसेन्जर के प्यार से दूर हैं, मोमिनों से आग्रह करता हुवा कहता हैः

,,ओह. हाय, हाय –उस पर जो उन की कृपा से वंचित हुवा।

वह अपनी गफलत से दोनों जहानों के नुक़सान कर बैठा।,,

ओह, हाय, हाय! यदि किसी ने पैगमंबर की दया खो दी है,

और अपनी गफलत के कारण दोनों जहां से दूर हुवा।

ऐ खुदा हम को उन की ऐसी उम्मत बना जो उनके प्यार की कद्र कर सके। क्योंकि वे दान और दया का अपार सागर हैं!..

कितने आश्चर्य की बात है माननीय पैगंबर सदैव उन की भलाई के लिए दुआ कर रहे थे, लेकिन बदले में अपमान और पत्थर की सजा दिया करते थे, तो ज़ैद बिन हारिसा को आखिर कहना पड़ा:

ऐ अल्लाह का रसूल, वे आप को भारी कष्ट देते हैं... लेकिन क्या आप फिर भी उन के लिए बद्आ नहीं करते हैं? -मैं और क्या कर सकता हूँ! मैं सज़ा के लिए नहीं, एक दया के रूप में भेजा गया हूँ... – उन्होंने जवाब दिया।

तो क्या आप की दुआ, यह जवाब और यह प्रतिक्रिया देख कर लगता नहीं कि आप की आत्मा-बलिदान ,करूणा, दया और सहनशीलता एक अप्राप्य ऊँचाई पर हैं? आप एक ऐसे स्तर पर थे, जिसपर कोई दूसरा नहीं है।

मानवता एक मार्गदर्शक के इंतिजार में थी। आप के रूप में उसे सच्चा मार्गदर्शक मिल गया। यै जो उसे सच्चे जीवन के रास्ते को दिखाई और वास्तव में जो पहले मनमानी जिंदगी जी रहा था, आप के नबी मानने के बाद वे उस से अधिक भारी ज़िम्मेदारी में है जो वो आप के नबी बनाये जाने से पहले थे।

इसी दृष्टिकोण के आधार पर आज अधिकांश लोग खुद की शक्ति और अपने नफ़स पर चलते हैं, तो हमें तो अपने जीवन नबी की जीवनशैली से जोड़ने की पहले से कहीं अधिक आवश्यकता है।

वास्तविकता यह है कि इतिहास के पिछले ज़मानों में सब से प्रभावशाली चीज ऐसे उलमा और मोमिनों का मौजूद होना था, जो इंसानियत के लिए अपने आप में आदर्श थे। और जो नबी के सच्चे वारिस और उत्तराधिकारी थे। उन्होंने अपने समाज के सामने बेहतरीन नमूना प्रस्तुत किया।

आज भी यही हाल है। क्योंकि सब से बड़ी हक़ीक़त जो हमारे अंदर चिंता पैदा करती है, जब हम उम्मत के हालात पर नज़र करते हैं, तो उम्मत का ऐसे आदर्श व्यक्तित्वों से वंचित हो कर समय व्यतीत करना है, जिन लोगों का हमने अभी ऊपर ज़िक्र किया।

आज फिर हमें माननीय पैगंबर (सल्ल०) के ऊँचे स्तर पर उन के पीछे चलने के स्तर पर, खास तौर से अल्लाह के प्यार से पुलकित तथा ईश्वर-निष्ठा रखते हुए हमारे स्वयं इतिहास के स्वर्णिम दौर को फिर लौटाने के लिए हमें उसी सिलसिले के नेतृत्व पर उन्हीं लोगों के सच्चे जीवन के उदाहरण के भाव को फिर स्थापित करना होगा।

अर्थात हमें यह जानना होगा कि उन्होंने इस समाप्त होने वाली दुनिया के साथ कैसे व्यवहार किया। और उन्होंने अल्लाह के दिए माल, बुद्धि, समझ और आत्मा को किस प्रकार इस्तेमाल किया, ताकि वे इस रास्ते में सफल हो सकें।

सौभाग्य का युग[41]: उच्च नैतिकता और प्यार के दर्पण

पैगंबर (सल्ल°) का समृद्ध प्रभाव और स्पष्ट शिक्षा और निर्विवाद प्रभाव ऐसे अमृत के रूप में सामने आया कि पहले बर्बर और मानवता की अभिव्यक्ति से अनजान समाज को ऐसे उच्च सभ्यता के स्तर पर पहूँचाया और उस समाज को नैतिकता की ऐसी ऊचाई पर चढ़ाया कि उन को "सहाबा" के नाम पर याद किया जाता है। उन्होंने उन्हें एक ही धर्म, झंडे, कानून, संस्कृति और शासन के तहत एकजुट किया हैं।

इस तरबियत और प्रशिक्षण ने अज्ञानी और अशिष्ट को शिक्षित और शिष्ट, जंगली लोगों को पढ़े लिखे समझदार, और नीच लोगों को अपने प्रभु की श्रद्धा में जीते हुए उच्चतम पवित्र स्थिति में पहुंचा दिया। इसी तरह अपराधियों को और बदमाशों को अब ऐसा बना दिया कि अल्लाह ही से प्यार करते हैं और उसी के अज़ाब से डरते हैं।

सदियों के दौरान समाज के इतिहास के अनुरूप एक भी उल्लेखनीय इंसान का पालन-पोषण नहीं किया जा सका। किंतु अब अल्लाह के पैगंबर (सल्ल°) के आध्यात्मिक प्रभाव के माध्यम से बहुत ही असाधारण आध्यात्मिक प्रभाव स्वीकार किये। और उन्होंने अपने

41. सौभाग्य के युग से प्राय यहां वह युग है, जिसमें रसूलुल्लाह और आप के सहाबा जीवित रहे।

सत्य को दुनिया के चारों कोनों में विचार, ज्ञान और विश्वास की एक मशाल जलायी। रेगिस्तान पर उतरी और लपटी हुई रोशानी मानव जाति के लिए सत्य, सच्चाई और भलाई का प्रमाण सिद्ध हुई। **,,लौ लाका लौ लाका,,** के मुहावरे का रहस्य खुल गया।[42] दुनिया के बनाने का उद्देश्य पूरा हुआ।

अल्लाह के पैगंबर (सल्ल°) के पास प्रशिक्षित लोग एक समृद्ध युग के लोग थे। यह गहरी सोच का युग, सब से नज़दीक परिचय का युग और असली सच और उसको आगे फैलाने का युग था। सब लोग एकेश्वरवाद को आदर्श बना कर अपने दिल से संसार लाभ को निकाल कर अल्लाह की मुहब्बत उस में रखी। यह लोग ईमान की मिठास जान गये। उन्होंने अपनी संपत्ति और आत्मा को सिर्फ एक साधन के रूप में देखना शुरू किया। दूसरों के हित के लिए जीना शुरू किया। मेहनत जीवन प्रणाली बन गयी। उनको ईस्लाम के व्यक्तित्व पर मिलने वाला महान आत्मा-बलिदान दिखाई दिया। अतः वह दिन भी देखा गया कि एक व्यक्ति एक हदीस समझने के लिए एक महीने की दूरी का रास्ता पार कर के गया और बिना समझे इस लिए वापस आ गया, क्योंकि अगला मुहद्दिस अपने घोड़े को क़रीब बुलाने के लिए धोखे का सहारा ले रहा है।

तो अल्लाह के पैगंबर से सहाबा ने क्या-क्या प्राप्त किया? उन्होंने प्राप्त किया:

1. **अल्लाह के पैगंबर का हर हाल में अनुपालन**
2. **अल्लाह की नज़दीकी प्राप्त करना**

42. यह हदीस देखिये जो इस की हक़ीक़त बताती है कि यदि आप न होते तो मैं आसमानों को भी न बनाता। हाकिम, जि. 2/672 - 4228

अतः इन दो चीजों के कारण उन के दिल से हर प्रकार की क्रूरता और दुश्मनी धीरे धीरे समाप्त हो गयी। वे पवित्र हो गए। उन लोगों ने अल्लाह, पृथ्वि और प्रकृति और खुद अपने नफस का नया अर्थ समझा। खुद में अल्लाह के मैसेन्जर की हालत दिखाई देने का उन का *उद्देश्य* था, जैसे छोटी सा दर्पण में सूरज दिखता है।

मदीने में बने हुए छोटे से इस्लामी राज्य की सीमा जो लगभग चार सौ परिवारों पर आधारित था, दस साल के दौरान इराक और फिलस्तीन में पहूँची। माननीय पैगंबर (सल्ल॰) की मृत्यू तक वे फारिस और रोम से लड़ रहे थे। आदरणीय साथियों के हालात, उन के आचरण जीवन-प्रणाली, आराम-सुविधाएँ और घरों की सजावट दस साल पहले जैसे ही हैं। जीवन, भोजन, कपड़ों में आदि का स्तर वही था। वे सदा इस चेतना के साथ रहते थे कि: **,कि इस नफ्स का घर कल क़ब्र हो जाएगा।,** इसलिए अपने नफ्स के लिए इस दुनीया की वस्तुओं के उपभोग में सावधानी से रहते और दीन का आनंद लेते तथा इसी भलाइयों को खुशी में बदल देते और उस को सही रास्ते पर शिक्षा देते थे। वे अपने जीवन को ऐसी स्थिति में रखा करते थे कि अल्लाह उस से खुश हो जाऐं।

वास्तव में इस्लाम का दुनिया में ऐसी तेजी और ऐसी सफाई से फैलने का कारण यह है कि वहां सहाबा के प्रचार के पैरों का निशान है, वे स्वयं इस्लाम के व्यक्तित्व का एक आदर्श उदाहरण थे। सच में आदरणीय सहाबा जो अल्लाह के नबी के मेहनती छात्र थे खुद सच्चे, निष्पक्ष भावना, न्यायपूर्ण आदमी, प्रकाश से भरे हुए असाधारण मूमिन थे, जो अल्लाह के बन्दों को दयालुता और भलाई से परमेश्वर के दास पर देखा करते थे।

उन्होंने खुदा और उस के रसूल की दोस्ती को अपनी अवधारणा का स्रोत बना दिया। इस प्रकार, बिना लिखने-पढ़ने के समाज

संस्कृति की ऊँचाई पर पहूँचा। सारे दिल पूरी तरह उत्तेजित थेः **„अल्लाह हम से क्या चाहते हैं? और अल्लाह हम से कैसे खुश होगा? और रसूलुल्लाह हम को कैसे देखना चाहते हैं?**

उन लोगों ने अपने युग का रास्ता बना दिया। मानवता के लिए समृद्धि के युग का दान दिया था।

वे नफ्स के नुक़सान (अम्मारा)58से छूट गए और अपने स्वयं को नफ्स के अधीन किये बगेर मोमिन बन गये। देहाती बद् फरिश्तों जैसे इंसान बन गए।

इस्लामी कानून की कार्यप्रणाली में अधिकार की मान्य डिग्री प्राप्त, **इमाम कराफी** ने कहा, जिनका निधन (684) ई. में हुवा:

"यदि अल्लाह का रसूल (सल्ल°) किसी भी चमत्कार को नहीं दिखाते, तो उन के शिक्षा पाये हुवे सहाबा-ए-किराम उन की पैगंबरी के सत्यापन का काफी सबूत है।" उन में से हर एक कुरआन का जिन्दा अवतार था। वे अंतर्दृष्टि ,बुद्धिमानता में ऊँचाई और अन्य माननीय गुणों के शीर्ष पर पहूँच गये। वे दिल और दिमाग को एक ही समय में तथा एक ही स्तर पर विश्वास के सुधारता प्राप्त करने के लिए इस्तेमाल कर रहे थे।

उन का ज्ञान गहरा था। प्यार की आग को न बुझने देते और मोमिनों में उमंग जगाए रखते। लोगों को इस बात का ज्ञान देते रहते थे कि इस दुनिया में जीवन एक शाला है, जहां परीक्षाएँ होती हैं। दिल दिव्य महानता और शक्ति के ज्ञान तक पहूँचे। जीवन के सब से मुख्य लक्ष्य अल्लाह के अनुमोदन का प्राप्त किया गया था। दया, भलाई और सत्य के प्रसार करने का महत्व अपने चरम पर पहुंच गया।

इसी कारण उन्होंने चीन, समरकन्द और स्पेन का सफर किया, ताकि भले कामों का हुक्म दे सकें और बुराइयों से रोक सकें। इस

तरह यह जाहिल समाज ज्ञान और शिक्षा का आदर्श समाज बन गया। उनकी रातें दिन में बदल गयीं। जाड़े का मौसम बसंत में बदल गया। उनके सोचने का अंदाज़ बदल गया। अब वे छोटी छोटी चीज़ में विचार करने लगे: जैसे वीर्य से इंसान बनना, अंडे से पक्षी निकलना, मृत बीज से पेड़ उगना इत्यादि। उन्होंने अपने जीवन को व्यवस्थित कर के अल्लाह की पसंद पर डाल दिया। अल्लाह की पहचान और परिचय पर हर प्रकार की कोशिश की जाने लगी।

इन सहाबा के लिए वह क्षण खुशी और प्रसन्नता के होते थे, जब वह अपनी दावत सब इंसानों तक पहुंचाने में सफल हो जाते।

एक सहाबी की तो अजीब ही कहानी है, जिसकी फांसी में मात्र 3 मिनट बचे तो उसने मोहलत देने वाले का शुक्र अदा किया और कहा: **„यानि मेरे पास दीन की दावत के लिए तीन मिनट हैं।„** उसने यह इस तरह कहा कि दावत देने की अत्यंत इच्छा उसके दिल को भरे हुवे थी।

सहाबा हर आयत को अच्छी तरह याद करने और उस पर अम्ल करने की कोशिश करते थे। जीवन के सब से खतरनाक क्षणों में भी वे कुरआन को छोड़ते नहीं थे। एक युद्ध में अब्बाद बिन बिशर ؓ कहते हैं:

"पैगंबर (सल्ल॰) एक जगह उतरे। और फ़रमाया: **"आज की रात हमारी पहरेदारी कौन करेगा?"** तो मुहाजिरीन में से एक आदमी (अम्मार बिन यासिर) और अंसार में से एक आदमी (अब्बाद बिन बिशर) हाज़िर हुवे और कहा: "हम हाज़िर हैं ऐ अल्लाह के रसूल!" तो आप ने फरमाया: **"तो तुम घाटी के मुंह पर चले जाओ।"** और यह लोग एक वादी के एक दर्रे में ठहरे थे। अतः ज़ब यह दोनों घाटी के मुंह पर गये तो अंसारी ने मुहाजिर से कहा: "मैं रात के किस हिस्से में तेरी पहरेदारी करूं? शुरू या अंतिम हिस्से में?

मुहाजिर ने कहा: शुरू के हिस्से में तुम पहरा दो। अतः मुहाजिर सो गया और अंसारी नमाज़ में व्यस्त हो गया। इतने में एक व्यक्ति आया और उसने एक व्यक्ति को खड़े देखा। तो उसे मालूम हो गया कि यह क़ौम का जिम्मेदार है। अतः उसने एक तीर मारा। और अंदर ही छोड़े रखा। फिर निकाला। और रख दिया। लेकिन वह सहाबी ऐसे ही निरंतर खड़े रहे। फिर उसने दूसरा तीर मारा। और अंदर ही छोड़े रखा। फिर निकाला। और रख दिया। लेकिन वह सहाबी ऐसे ही खड़े रहे। तीसरी बार मारा। उन्होंने निकाल कर रख दिया। फिर रुकू और सजदा किया। और फिर अपने साथी को उठाया। और कहा: "बैठो, हमें कोई खतरा है।" तो वह अचानक चोंक कर उठा। जब उस आदमी ने देखा कि इन लोगों ने मेरे खिलाफ तैयारी कर रखी है, वह भाग गया। जब मुहाजिर ने अंसारी पर खून देखा तो कहा कि "अरे अल्लाह, तुम ने मुझे क्यों नहीं उठाया?" उसने कहा:

"मैंने एक सूरह (सूरह कहफ़) पढ़ना शुरू की और मैं अपनी नमाज को पूरा किये बिना काटना नहीं चाहता था। लेकिन मैं ने महसूस किया कि मेरी ओर लगातार तीर चलाए जा रहे हैं, तो मैंने रुकुअ किया, ताकि तुमको बताऊं। खुदा की क़सम अगर मुझे इसका अहसास न होता कि अल्लाह के रसूल ने मुझे पूरी क़ौम की निगरानी का ज़िम्मा दिया है, तो नमाज़ तोड़ने से पहले खुद को खत्म कर लेता।,,[43]

कूरआन धुरी थी जिस के इर्द-गिर्द सहाबा का जीवन घूमता था। उनको इसमें ऐसी लज़्ज़त और आनंद आता था, जैसा किसी अन्य चीज़ में नहीं आता था। उन पर हर आयत ऐसे उतरती थी, जैसे आसमान से दस्तरख़्वान उतरता है। उन्होंने क़ुरआन प्राप्त करने हेतु

43. अबू दाउद, तहारत, 78/198 , अहमद, 3, 344, बैहक़ी, दलाईलुनुबुव्वह , 3/459, ईबन-ए दिशाम, 3, 219, वाकिदी, 1, 397

हर प्रकार की कोशिश की। उसे उन्होंने एक बेहतरीन नमूना बनाया, जिसमें वे रहते थे। वह कितनी बड़ी मिसाल है, जो सहाबा की क़ुरान से मुहब्बत को दर्शाती है। सहाबा में से एक औरत ने अपने शौहर से शादी के महर में नगदी के बजाए उसे क़ुरआन की सूरतों की शिक्षा देने का वादा करवाना चाहा, जो उस ने कर दिया।[44]

ये साहबा रात में गर्म बिस्तर के बजाय नमाज को पसंद करते थे। वे रात की लाली में ज़िक्रुल्लाह (अल्लाह की याद) और कुरआन पढ़ने को पसंद करते थे। अंधेरी रात में उन के घरों के पास राहियों ने उन से मधु – मक्खियों के झुंड की भिनभिनाहट जैसी आवाज में जीर्कुल्लाह की आवाज और कुरआन की तीलावत को सुना।

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वा सल्लम सब से कठिन पाबंदियों में भी उन्हें कुरआन की शिक्षा देते थे। जैसे अनस ﵁ कहते थे:

एक बार अबु तल्हा ﵁ हमारे पैगंबर के पास गए ,उन्होंने पैगंबर स. को असहाब ए– सूफ्फा को कूरआन सिखाते हुए देखा। अल्लाह के पैगंबर की पत्थर की बोझ से झुकती हुई पीठ को सीधे करने की कोशिश किया जो उन पेट से बंधा गया था, ताकि भूख की तकलीफ दबायी जा सके.

उनका काम क़ुरआन सीखना और उसे समझना था। उसे गुनगुनाना और रटना था। (अबू नुऐम, अल हिलयह, जि, 1, 342)

सहाबा ने रसूलुल्लाह को आदर्श और नमूना बनाया। यही कारण है कि अंत में मदीना मुनव्वरा उलमा और हाफिजों से भर गया।

समृद्धि का युग ऐसा अदृत था, जिस जैसा कोई युग नहीं।

44. बुखारी, निकाह, 6/32-35, फ़ज़ाइलुल क़ुरआन, 21, 22, मुस्लिम, निकाह, 76

तो अब आप मुझे बताइए कि अगर सब मनोवैज्ञानिकों, समाजशास्त्रियों, शिक्षाविदों, सामाजिक विद्वानों आदि को दुनिया भर से इकठ्ठा कर दिया जाए तो क्या वे एक ऐसा छोटा समाज बनाने में सफल होंगे, जो इन उक्त गुणों पर आधारित हो? अवश्य ही जवाब ना में होगा। वह इस समाज के क़रीब क़रीब भी नहीं पहुंच सकेंगे। जैसे फाराबी की किताब ,,मदीनतुल फाज़िला,, में जिस में आदर्श समाज के निर्माण का वर्णन किया गया है, वह भी एक कल्पना मात्र है, जो कीड़े मकोड़ों का भोजन बन कर रह गया।

अल्लाह के पैगंबर (सल्ल°) के प्रति प्रेम के निविद गीत

आप का प्रेम और दया एक ऐसी नदी है जो ख़ुदा के प्यार के सागर तक ले जाती है। क्योंकि अल्लाह के पैगंबर (सल्ल°) का प्रेम अल्लाह के प्यार से संबंधित है, उस का पालन अल्लाह के पालन से, उन का अविनय अल्लाह के अविनय से।

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ
وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَاللّٰهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ

"ऐ नबी कह दो कि यदि आप अल्लाह से मुहब्बत करना चाहते हो तो मेरी पैरवी करो। अल्लाह तुम से मुहब्बत करेगा। और तुम्हारे पाप माफ़ कर देगा। वह बहुत क्षमा देने वाला मेहरबान है।" (आलि इमरान, 31)

तौहीद के सूत्र में लाइलाह इल्लल्लाह के बाद **मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह** आता है। एकेश्वरवाद के सूत्र और दुरूद शरीफ (अल्लाह के पैगंबर की शुभकामनाएँ) अल्लाह के प्रति प्यार और निकटता को और भी बढ़ा देते हैं। अपनी ओर से इसी और अगली दुनिया की खुशी तथा सारी आध्यात्मिक जीतें उन के प्यार से प्राप्त हो जाती हैं। अतः दुनिया **ख़ुदा की मुहब्बत और मुहम्मदी प्रकाश** रौशनी प्राप्त करती है।

अल्लाह की जात तक पहुंचने का रास्ता रसूल की मुहब्बत से हो कर गुज़रता है।

सब विशेषताएं जैसे इबादत में आध्यात्मिक्ता, संबंधों में सूक्षमता, नैतिकता में दयालुता, ज़बान की चंकता और व्यवहार की सुन्दरता, सोच और विचार में गहराई तथा चरित्र में परिपक्वता सब आप की मुहब्बत की परछाइयां हैं।

मौलाना जलालुद्दीन रूमी (रहमतुल्लाही अलैहि) ने कैसी अच्छी बात कह दी है:

"आ जा, ए आत्मा! असली पर्व मुहम्मद रसूलुल्लाह से मुलाक़ात है। क्योंकि जगत का प्रकाश आपके चेहरे की इसी रोशनी से निकलता है।"

इसलिए अल्लाह के रसूल (सल्ल°) के मार्ग पर चलना अल्लाह के प्यार तथा स्वीकृति प्राप्त की जरूरी शर्त है। यानि जब तक मोमिन अपनी सेवा और कार्य में माननीय पैगंबर (सल्ल°) की रोशानी दिए हुए मार्ग पर नहीं चलता तो **,कामिल-इन्सान,** (सही आदमी) जो इस्लाम को अपना आदर्श समझता हो, नहीं होसकता। इस के अलावा शांति और खुशी जो धर्म देता है वह प्राप्त कर नहीं सकेगा। क्योंकि इस्लाम में पाया हुआ **कामिल-इंसान** के लिए अल्लाह के माननीय पैगंबर (सल्ल°) के व्यक्तित्व को सभी मोमिनों के लिए एक नमूना बनाया।

तब हमें जानने की जरूरत है कि यह आज्ञाकारिता जब इतनी महत्वपूर्ण है, कि अल्लाह ने भी इसे अपनी आज्ञाकारिता के लिये प्रथम शर्त क़रार दी है, तो यह आज्ञाकारिता कैसे होगी?

निस्संदेह यह महान भावना अल्लाह के रसूल (सल्ल°) के साफ प्यार और उस के दिल से मुहब्बत करने से शुरू होता है। दरअसल

अल्लाह के रसूल (सल्ल°) के पीछे चलने के मामले में जो ,उस्वा ए हसना, (सब से अच्छा नमूना) **उच्च-व्यापी** खुदा स्वयं ही पवित्र आयतों में बताता हैः

,,... जो कुछ पैगम्बर तुमको दे, उसे लेलो। और जिस से रोक दे उससे रुक जाओ और अल्लाह का डर रखो। निश्चय ही अल्लाह का अजाब बहुत कठोर है।,, (अल-हश्र, 7)

और अल्लाह तआला फरमाता है:

,,ऐ ईमान वालो, अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा करो और अपने अमल को व्यर्थ मत करो।,, (मुहम्मद, 33)

और अल्लाह तआला फरमाता है:

,,जो अल्लाह और रसुल की आज्ञा का पालन करते है,ऐसे ही लोग उन लोगों को साथ है जिनपर अल्लाह की कृपा दृष्टि रही है, वे नबी, सिद्दीक, शहीद और अच्छे लोग हैं। और वे कितने अच्छे साथी है।,, (अन-निसा, 69)

और पवित्र कूरआन में सर्वशक्तिमान अल्लाह ने उम्मत के लिए आदेश और निर्देश जो नीचे भेजा, अल्लाह के रसूल (सल्ल°) के दिल के सौंदर्य का एक हिस्सा है। दर असल, दिल से जो रसूल (सल्ल°) के आत्मा को प्राप्त कर सकते हैं उतने ही मोमिन के सामने कूरआन के भेद खुल जाते हैं। तो यदि हम सहाबा की तरह इस आत्मिक आंसर में प्रवेश कर सकते, तो हम भी इसके अदृत भेदों को जान सकने में सफल होते। अल्लाह के रहस्यों और प्रकाशमय सौंदर्य को देखते।

अगर उन के साथियों की तरह हमें इस दुनिया में जाना नसीब हो और हमें वहाँ दिव्य सुंदरता, आगमन और ज्ञान और अक़्लमंदी प्राप्त करने की तैफ़ीक़ मिले यानि यदि उन के आत्मा के अनुकूल वातावरण में जाना नसीब हो तो हमें भी उनकी आत्मिक दुनिया का

सौंदर्य देखने का सौभाग्य मिले। और आप पर हमारे लिए अपनी जान माल और सारा अस्तित्व न्योछावर करना आसान हो। और हम भी परवानों की भांति आप पर अपना सबकुछ न्यौछावर करदें। जैसा कि यह इबारत कहती है:

"रसूल (सल्ल°) के लिए मेरे माँ, बाप, संपत्ति और जान कुरबान करने के लिए तैयार हूँ..!"

माननीय पैगंबर (सल्ल°) का महान कृति आदमी के प्यार का पात्र और भलाई का स्रोत होता है। जिन्हों ने आप से शिक्षा पायी वह जानते हैं कि भावना का कारण यह है मुहम्मद के नूर से सारा ब्रह्मांड मुहम्मद मुस्तफा (सल्ल°) के भावना के नूर के लिए बना गया है। सारा ब्रह्मांड उन के सम्मान में और उन के संदेश के गुणों में बनाया गया है। उन्हें अल्लाह के यहां मेरे हबीब,[45] जैसे शब्दों से सम्मानित किया गया है।

अल्लाह और रसूल (सल्ल°) के प्रति ईमानदार-प्यार किये हुए मोमिन खुशक़िस्मात है। और इसी का प्यार उन के दिलों में अन्य सभी प्रकार के प्रेमों से अधिक है।..

बुद्धि की तुलना में भावनाओं से और जज़्बात से मुहम्मद के अधिक निकट आया जा सकता है।

रबीउल-अव्वल का आसमान इस कायनात और मानवता के लिए सम्मान और गौरव के तौर पर खुला।

जैसे हमें स्रोतों से पता है अल्लाह के मैसेन्जर (सल्ल°) की दूध पिलाने वाली माताओं में से एक खुशक़िस्मत माता सुवैबा नामी औरत थी। यह औरत आप के चचा और अल्लाह के पैगंबर के दुश्मन की

45. तिर्मिज़ी, मनाकिब, 1/3616, दारमी, मुक़द्दमा, 8, अहमद, 6/241, हैसमी, 9/29

अबु लहब की बांदी थी। जब इस महिला ने उबु लहब को भतीजे के जन्म की सूचना दी, तो उसने यह शुभ समाचार प्राप्त होने से खुदश हो करके उन को छोड़ दिया। (हलबी, I, 138)

और यही खुशी भी जो केवल जन्मता के आधार पर थी, उस पर से प्रत्येक सोमवार की रातों में अज़ाब के कष्ट हल्का करने के लिए काफी हो गयी।

अब्बास ﷺ ने यही बात कहते हुवे बताया:

"भाई अबू लहब की मृत्यू के पूरे एक साल तक ख्वाब में नहीं देखा। उसके बाद मैं ने उसे एक सपने में देखा कि वह परेशान है। मैंने उस से पूछ लिया तो उसने जवाब दिया:

"मुझे केवल हर सोमवार को ढील दी जाती है।" वो इसलिये कि मुहम्मद (सल्ल°) इसी दिन पैदा हुवे। और आप के शुभ जन्म की सुवेबा ने उसे खुशखबरी दी: "कि आमना ने उसके भाई अब्दुल्लाह के घर लड़के को जन्म दिया है।" यह सुन कर उसने सुवेबा को मुक्त कर दिया। इसका उसे लाभ हो रहा है। जैसा कि उसके भाई अबू तालिब को भी रसूलुल्लाह का बचाव करने का लाभ मिला कि वह सब से हल्के अज़ाब वाला होगा। (सुहेली, अल रौज़ अल अंफ, 1, 273)

एक दूसरी रिवायात में अबू लहब कहता है:

"तुम्हारे पास से जाने के बाद मुझे कोई भलाई नहीं मिली, इतना ज़रूर है कि मुझे सोमवार को पानी अवश्य पिलाया जाता है। क्योंकि मैंने सुवेबा को आज़ाद किया था।"[46]

इब्ने जज़री ने भी कहाः

46. इब्ने कसीर, अलबिदायह, अल काहिरा, 1993, जि. 2/277, बैहक़ी, सुनन ए कुबरा, 7/162, इब्ने साद, 1/108-125

“अगर पैगंबर के अबू लहब जैसे दुश्मन की पीड़ा केवल रिश्तेदारी की भावना से हल्की हो जाती है, जो अल्लाह के पैगम्बर के जन्म से खुश हुआ, तो इस के बारे में विचार करना है कि अल्लाह की कैसी दया, कृपा उस के साथ होगी, जो पैगंबर के जन्मदिन में अपने दिल खोलते और खर्च करते हैं। अल्लाह के रसूल के पैदाइश के महीने में आध्यात्मिक चर्चा में भावना को ऊर्जावान करना और पैगंबर के उम्मत को खाना खिलाना चाहिए, गरीब , अकेले, यतीम और लाचार लोगों का परोपकार करना, दुखी दिल को दया से प्रसन्न करना, स्वयं भी क़ुरआन पढ़ना और इस के बारे में दूसरों से भी करवाना है ताकि इसी धन्य महीने से लाभ मिले।“

सहाबा का अल्लाह के नबी के लिए प्यार

सहाबा ने आप से ऐसी बेमिसाल मुहब्बत की थी कि उनके प्यार कि गहराई इतनी थी कि जुदाई ना काबिले बर्दाश्त थी। ऐसा प्यार और मुहब्बत, जिसकी कल्पना नामुमकिन है, सिर्फ खुदाई मुहब्बत और प्रेरणा से ज़ेहन में लाई जा सकती है।

इस तरह सहाबा इकराम ने अल्लाह के नबी के चारों तरफ अपने इस प्यार के सहारे एक मज़बूत वफादारी का बंधन बनाया। जैसे वे इश्क़ और प्रेम की एक तरंग हैं, और आकाश का चमकदार सितारा हैं। हर सहाबी के अंदर से यही आवाज़ आती: **“रसूलुल्लाह ऐसा ही किया करते थे।”** वह उसी रास्ते पर चलते थे जिस पर हुजुर चले थे, वहां रुकते थे जहाँ वह रुके थे और उसी गुलाब को सूंघते थे, जिसे उन्होंने सूंघा था, केवल इसलिए कि उन्होंने यह सारे काम किये थे।

सहाबा ए किराम की पैगम्बर से बेपनाह प्रेम और स्नेह की बहुत लंबी दास्तान हैं. उनमे से कुछ उद्धरण स्वरुप निचे दिए गए हैं! हज़रत आयशा पैगम्बर की खूबसूरती के बारे में फरमाती हैं:

"मिस्र के लोग यदि उनकी सुंदरता के बारे में सुना होता तो

यूसुफ के लिए सौदेबाजी में वे एक दीनार खर्च नहीं करते।

जुलेखा पर जलने वाली औरतें यदि उन्हें देख लेतीं।

तो हाथ नहीं, बल्कि अपने दिलों को काटने को तरजीह देतीं ... "

अतः अल्लाह के पैगम्बर जो एक हैसियत से बन्दे थे, तो दूसरी हैसियत से आप इंसान थे। जैसे कलिमा ए शहादत इसका उल्लेख करता है, किंतु आप सीरत के एतिबार से पैगम्बरों में सुबसे उपर और सरदार-ए-अम्बिया हैं। महान अज़ीज़ महमूद हुदाई अपने अनुभव को रहस्मयी अंदाज़ में काव्यात्मक रूप देते हुए कहते हैं:

ब्रह्मांड एक दर्पण है, जिसमे सारी सच्चाई है, और मुहम्मद एक ऐसा दर्पण है जिसमे आप अल्लाह को देख सकते हैं।

पवित्र पैगम्बर मुहम्मद केंद्र हैं खुदाई प्यार और स्नेह के, और यही पाठ जो प्रेम का है सारी दुनिया पढ़ रही है, और यह अपने चरम सीमा तक पहुंचा है। जब कोई भी व्यक्ति मुहम्मद को मानना या उनपर यकीन करना शुरू करता है तो वोह अपने हृदय में एक खुबसूरत एहसास को जन्म देता है और अपने रूह को पाक और साफ पता है और यह प्रतीत करता है के वह उनमे से है और यही उनका प्रेम भाव है। दोनों जहान आप (सव) के लिए बनाया गया था/एक अभिव्यक्ति का अर्थ हमें सोचने पे मजबूर करता है, 'यह ब्रह्माण्ड मैं नहीं बनता अगर यह तम्हारे लिए नहीं होता' **मौलाना रूमी** इसमें पैगम्बर के तरफ इशारा करते हैं:

दोनों संसार एक दिल और ह्रदय के कारण पैदा किये गए।[47] **अतः आप को "लौ लाका लौ लाका, लमा खलक़्तुल अफलाक" में गहन विचार कीजिए।**

इसी से स्पष्ट होता है कि रसूलुल्लाह की मुहब्बत इंसान को दोनों जहानों में सम्मान देने में सब से प्रभावशाली चीज़ है। इसी कारण अल्लाह के रसूल की मुहब्बत से सहाबा ने बड़े बड़े मुकाम अर्जित किये।

नीचे कुछ और उदाहरण हैं जो सहाबा के बेजोड़ प्रेम को दर्शाते हैं:

एक बार हिजरत के वक़्त यात्रा में, जो सोर गुफा की ओर थी, हज़रत अबू बकर एक समय मुहम्मद के पीछे चलते और दुसरे ही पल हुजुर के आगे चलने लगते। पैगम्बर समझ गए और पूछा:

"ऐे अबू बकर तुम ऐसे कभी आगे और कभी पीछे क्यों चल रहे हो?"

अबू बकर ने जवाब दिया की:

"जब मुझे याद आता है कि दुश्मन पीछे से तलाश करते हुवे आ सकते हैं तो मैं आपके पीछे आ जाता हूँ और जब मुझे लगता है की हमलावर आगे से घात लगाए हुवे बेठे हो सकते हैं तो मैं आपके आगे आ जाता हूँ।" तो आप ने फ़रमाया:

"ऐे अबूबकर, यदि कोई चीज़ होती तो मैं तुम्हारी रक्षा कर सकता।" तो अबूबकर ने फरमाया:

47. क़ल्ब शरीर का अंग है, फुआद भीतर की आत्मा है और लुब्ब (अक्ल) जौहर है।

"खुदा की क़सम, आप को कोई तकलीफ पहुंचेगी, तो मैं आप के लिए ढाल बन जाऊंगा।" (हाकिम, मुस्तदरक, 3 -7/4268)

जब वोह आखिर में गुफा तक पहुंचे, तो अबू बकर ने हुजुर से कहा: "अल्लाह के रसूल आप बहार इंतज़ार करें। जब तक मैं भीतर जाकर गुफा को साफ न कर लूं। कोई कष्टदायक चीज़ होगी तो आप से पहले मुझे लगेगी"। अतः उन्होंने ध्यानपूर्वक गुफा को देखा और उसमे जो भी छेद थे, एक के बाद एक अपने कपडे की मदद से बंद करते गए और अंत में उन्होंने अपनी चादर उतार दी और छेद को बंद कर दिया, अब आखिर में एक छेद बच गया तो उन्होंने अपनी एड़ी से उसे बंद किया। फिर रसूलुल्लाह को अंदर बुलाया। जब सुबह हुयी तो आप (सव) ने पूछा :

"ऐे अबू बकर तम्हरा कपड़ा कहां है?" अबू बकर ने सारी दास्ताँ सुनाई जो शाम में घटित हुई थी। और यह अदा अल्लाह के नबी को इतनी पसंद आयी कि बेसाख्ता आपका हाथ दुआ के लिए उठ गया और उन्होंने अबू बकर के लिए अल्लाह से दुआ की।[48]

एक दूसरे दृष्टिकोण ऐसे वह मिसाल भी कितनी खूबसूरत है जिसमें एक औरत: सुमैरा बिन्त क़ैस का हुजुर (सव) के प्रति समर्पण दिखता है, जिसके खानदान के पांच सदस्य पति, पिता, और दो बेटे और एक भाई जंग-ऐ-उहद में शहीद होते हैं। और उस दिन मदीने में यह अफवाह सुन कर कोहराम मच जाता है कि "मुहम्मद शहीद हो गए हैं!" पूरे मदीने में शोर हो जाता है और इस अफरातफरी की गूंज आकाश तक थी। हर आदमी सड़कों पर जमा था, इस उम्मीद में कि कोई शहर में आने वाला खबर देगा। जबकि सुमैरा, एक अंसारी औरत, जिसे यह खबर मिली थी कि उसका पति, दो बेटे और पिता

48. इब्ने कसीर, बिदायह, 3/222 -223, अली कारी, मिरक़ात, बैरूत 1992, 10/381, अबू नईम, हिलयह, 1/33

सभी जंग-ऐ-उहद में शहीद हो गए हैं, वह ज्यादा चिंतित नहीं थी, उसकी असल चिंता हुजुर (सव) की सलामती थी। वह सब से यही पूछती कि **"क्या रसूलुल्लाह ठीक हैं?"** वह बार बार यही दोहरा रही थी। "अल्हम्दोलिल्लाह वोह जिंदा हैं और ठीक हैं", आने वाले सहबा ने जवाब दिया, "और जैसा आप लोग चाहते थे वैसे ही हैं"। "मेरे दिल को तब तक सुकून और चैन नहीं मिलेगा जब तक मैं उन्हें देख न लूं. मुझे अल्लाह के पैगम्बर का दीदार करवाओ" उसने कहा और अब तक वह घबराई हुई थी। जब उसने अपने प्यारे नबी (सव) को देखा, तो बहादुर सुमैरा उनके तरफ बढ़ी और कहा:

"ऐ अल्लाह के नबी, मेरे पिता आपके लिए कुर्बान हो गए! जब तक आप हयात से हैं, मुझे किसी भी किस्म की कोई परेशानी नहीं है और मुझे कोई चिंता नहीं"। वह यह कहते हुवे अपने दोनों बेटों को एक ऊंट पर बिठा कर मदीने की ओर चल पड़ी। (देखिए: इब्ने हिशाम, 3/51; वाकिदी, जि 1, 292, हैसमी, 6, 115)

अनस इब्न मालिक फरमाते हैं:

"एक आदमी अल्लाह के नबी के पास आया और पूछा: "क़यामत कब आएगी?" **"और तुमने क़यामत के लिए क्या तैयारी की है?"** इस प्रश्न पे पैगम्बर ने उल्टा प्रश्न किया। तो उसने जवाब दिया: "अल्लाह और उसके रसूल की मुहब्बत" तो अल्लाह के रसूल ने फरमाया: **'तो तुम उनके साथ रहोगे जिससे तुम मुहम्मत करते हो।'**

हज़रत अनस फरमाते हैं:

"इस्लाम में प्रवेश करने के अलावा, कोई भी चीज़ हमारे लिए इतना कीमती और खुशगवार नहीं है जितना के अल्लाह के नबी के शब्द 'तुम उनके साथ होगे जिन्हें तुम प्यार करते हो'। और मैं खुद

भी, अल्लाह, उनके पैगम्बर (सल्ल°), और अबू बकर और उमर को प्यार करता हूँ, हांलांकि मैं वह नहीं कर सकता जो उन लोगों ने अंजाम दिया है, मैं उम्मीद करता हूँ कि मैं उन लोगों के साथ हूँ" (मुस्लिम, बिर्र, 163)

इसमें शक नहीं, कि हर एक व्यक्ति जो अल्लाह के नबी के वायदा में यकीन रखता है, वह हकीकत में अपने दिल को पैगम्बर के प्यार और प्रेरणा कि रौशनी में सवारने का काम करता है।

पैगम्बर मुहम्मद के निधन के समय, सहाबा इकराम कि हालत दुःख के बुझते हुए मोमबत्ती की लौ की तरह हो गयी थी। उस दिन खास मित्र से जुदाई से, दिल अचानक लालसा की आग से झुलसने लगा था. और सहाबा बेहाल हो रहे थे। यहाँ तक की हज़रात उमर भी कुछ समय के लिए बेहोश हो गए, और बड़े ही दुःख की घडी से गुज़र रहे थे, आख़िरकार हज़रत अबू बकर खड़े हुए और लोगों को शांत किया और दिलासा दिया। उनके दोस्त जो उन्हें बहुत प्यार करते थे, एक दिन हुजुर (सव) को न देखें, यह बर्दाश्त नहीं कर सकते थे, अब वह पैगम्बर को ज़िन्दगी में कभी नहीं देखने वाले थे. बहुत लम्बे समय तक के लिए इस दर्द को सहन करने में असमर्थ थे, अब्दुल्लाह इब्न ज़ैद, जिनका दिल टूट चूका था, अल्लाह क सामने हाथ उठा कर गिड़गिड़ाने लगे:

"अल्लाह मुझे अँधा कर दे! मैं उन्य की कोई चीज़ न देखूं पैगंबर मुहम्मद के बाद, जिन्हें मैं सबसे ज्यादा प्यार करता था!" उनकी दुआ, जिसमे जार व क़तार आंसू बह रहे थे, दुआ कुबूल हो गयी और वह उसके बाद अंधे हो गए।[49]

49. कुर्तुबी, जामेअ, बैरूत, 1985, 5/271

उसके बाद, जब भी हज़रत **अबू बकर** पैगम्बर की कोई भी हदीस कहते तो उन्हें याद कर के उनके आँखों में आंसू आ जाते, उसके बाद वह कुछ कह नहीं पाते थे। अबू हुरेरा उनकी हालत बयान करते हैं: "अबू बकर एक बार मेम्बर पर चढ़े और कहा:

'जैसा के आप जानते हैं, अल्लाह के पैगम्बर पिछले साल यहीं खड़े हुए थे जहाँ मैं आज खड़ा हूँ' उन्होंने रोना शुरू कर दिया, और लगातार रोये जा रहे थे। उन्होंने दोबारा यही कहा और फिर रोने लगे। उन्होंने तीसरी बार कोशिश की, तब जाके कहीं उनके आंसू रुके। (देखिये: तिर्मिज़ी, दअवात, 105/3558, अहमद, 1, 3)

बावजूद इसके कि उनकी ज़िन्दगी पैगम्बर के साथ गुजरी, अबू बकर हमेशा उनको याद करते रहे। और उनके निधन के बाद, उनकी लालसा और बढ़ गयी, हुजुर के साथ होने और उनके पास जाने की। **हज़रत आयशा** अपने पिता की उत्तेजना पैगम्बर से मिलने की बताती हैं, जब वह अपने मौत का इंतज़ार कर रहे थे:

"मेरे पिता हज़रत अबू बकर, जब अपने निधन के करीब थे तो पूछा: 'आज कौन सा दिन है?' 'सोमवार', हमने कहा।

'अगर मेरी मृत्यु आज रात होती है', तो उन्होंने कहा, 'मेरे दफ़न के लिए कल का इंतज़ार न किया जाये...मेरे लिए सब से अच्छा वक़्त वह है जो अल्लाह के नबी (सल्ल°) के करीब गुज़रे।'

लेकिन मंगल की शाम तक आप का निधन न हुवा और सुबह होने से पहले दफन कर दिया गया। (बुखारी, जनाइज़, 94, 70)

सहाबियों में से जो बीमारी में मुब्तला रहे होंगे, वो बहुत लम्बे समय से अपने प्यारे पैगम्बर (सल्ल°) से मिलना चाह रहे होंगे, अब वह अपने मृत्यु बिस्तर पर थे, और उनके द्वारा अपना सलाम और दुरूद दिल के सुल्तान को भेज रहे होंगे। मुहम्मद इब्न मुन्क़दिर,

उनमे से एक थे, जाबिर के पास गए, एक सहाबी जो अल्लाह के पैगम्बर के प्यार में डूबे हुए थे, अपने बीमारी के आखरी वक़्त में महसूस किया कि उनकी मृत्यु क़रीब आ गयी थी, जाबिर जो अल्लाह के नबी (सल्ल°) से मिलने के आस में थे, वह उनको खुश करने के लिए अनुरोध करते हैं:

"ऐ जाबिर, अल्लाह के पैगम्बर को मेरा सलाम पहुँचाना....."
(इब्ने माजा, जनाइज़, 4)

सहाबा ए किराम, जो अल्लाह के नबी पर मर मिटने वाले थे, वह गर्व महसूस करते थे, जब उन्हें दोबारा अल्लाह के रसूल का ज़िक्र सुनाया जाता। **बरा इब्ने आज़िब** अपने पिता के भीतर के इच्छा को बताते है कि जब भी उन्हें अवसर मिलता अल्लाह के पैगम्बर के बारे में सुनने का वह सुनते थे, अतः वे कहते हैं:

"अबू बकर सिद्दीक ने मेरे पिता से तेरह दिरहम में एक ऊंटनी खरीदी थी, और फ़िर आज़िब से विनती की..."

'बरा से कहो अगर हो सके तो यह मेरे पास पहुंचा दे' तो आज़िब ने कहा:

'बिल्कुल नही', मेरे पिता ने कहा: 'जब तक आप मुझे मक्का से मदीना की हिजरत के बारे में जो आप ने अल्लाह के नबी के साथ अच्छा मामला किया था, बताएं, जब दुश्मन आप लोगों के पीछे पड़े थे!' अबू बकर ने फिर पूरी दास्तान इस तरह सुनायी:

'हमने गुफा छोड़ा और आगे बढ़ने लगे। हम पूरी रात और अगले दिन चलते रहे। दोपहर आया, मैंने आस पास देखा कि कोई छाया मिल जाये। पास ही मुझे एक चट्टान दिखा छाया के साथ। मैंने जल्दी से छांव के नीचे ज़मीन को बराबर किया और अल्लाह के पैगम्बर के बैठने का इन्तेजाम किया। '**ऐ अल्लाह के नबी,**

मेहरबानी कर के थोडा आराम केर लें, मैंने कहा।' अल्लाह के पैगम्बर ने आराम करने से मना कर दिया।

मैंने चारो ओर देखा कि कोई आ तो नही रहा। मैं क्या देखता हूँ कि एक चरवाहा है, जो भेड़ों को उस चट्टान कि तरफ ला रहा था। मेरी तरह वह भी छांव की तलाश कर रहा था। 'तुम किसके चरवाहे हो?' मैंने उससे पूछा। उसने मुझे एक नाम बताया जो कुरैश से था जिसे मैं जानता था। क्या भेड़ दूध देती है? मैंने उसके बाद आगे पुछा। 'हाँ' उसने जवाब दिया। क्या तुम हमें थोडा दूध दोगे?[50] मैंने उससे पुछा। 'हाँ ज़रूर उसने ख़ुशी से कहा।' फिर उसने झुण्ड में से एक भेड़ को पकड़ा। मैंने उससे कहा कि अच्छी तरह हाथ धो ले ओर भेड़ के थन को भी। उसने अपने हाथ को अच्छे से रगड़ कर धोया, दूध निकलने से पहले, ओर फिर दूध मेरे हवाले किया।

मेरे साथ एक चमड़े का मिश्केज़ा था, जो हुजुर के लिए था, ओर यह मिश्केज़ा जिसे मैंने एक कपडे से ढाका हुआ था, मैंने दूध में थोडा पानी मिलाया, जिससे इसे थोडा ठंडा किया। फिर मैंने इसे अल्लाह के नबी के सामने पेश किया। आप (सअव) अभी झपकी से जगे थे। 'ऐ अल्लाह के नबी, मेहरबानी करके आप थोडा दूध ले लें', मैंने कहा: उन्होंने दूध पिया। तब जा कर मुझे कुछ सुकून मिला। फिर मैंने कहा "ऐ अल्लाह के रसूल, प्रस्थान का समय हो चुका है।" आप

50. अरबों में यह आम चलन था कि वे बकरियों और ऊंटनियों का दूध पीने से किसी यात्री को मना नहीं करते थे। अरब उनके चरवाहों को इस बात का विशेष रूप से पाबंद बनाते थे कि किसी को दूध के लिए मना न करें। इसी संदर्भ में अल्लाह के रसूल का यह इरशाद है:
"तीन लोग ऐसे हैं जिनसे अल्लाह क़यामत के दिन बात नहीं करेंगे। एक वो शख्स जिसने किसी मुसाफ़िर को अपने पास बचा हुवा पानी देने से मना किया। दूसरा वो है जिसने सामान पर झूठी क़सम खायी। तीसरा वह है जो किसी इमाम से बैअत करे, यदि वह उसे दे तो वफ़ा करे और अगर न दे तो बेवफाई कर दे।" (अबू दाऊद, बुयूअ, 60/3474)

ने फरमाया: "हां"। फिर हम चले। लोग हमें ढूंढते रहे। घोड़े पर सवार सुराक़ा बिन मालिक बिन जुअशम के अलावा हमें कोई न पा सका। मैंने कहा "यह तलाश करने वाला आ गया, ऐ अल्लाह के नबी" तो आप ने फरमाया:

"चिंता न कीजिये, अल्लाह हमारे साथ है। (तौबह: 40)**"** (बुखारी, असहाबु नबी, 2, अहमद, जि, 1, 2)

सहाबा ए किराम अल्लाह के नबी से बहुत प्यार करते और उनका आदर करते थे, उनमे से कुछ **अपने बाल सिर्फ इसलिए नही कटवाते और न उनमें कंघी करते थे क्यूंकि अल्लाह के नबी ने उन्हें छुवा था।** (अबू दाऊद, सलात, 28/501)

प्यार का सचमुच एक अनोखा प्रदर्शन, कुछ ऐसे घटनाएँ हैं जो महिला सहाबियात अपने बच्चों को अल्लाह के रसूल (सल्ल°) से प्यार करना सिखाती थीं; महिला अपने बच्चों को डांटती थीं, अगर वह ज्यादा दिनों तक अल्लाह के नबी से नही मिलते थे। उनमे से एक हुजैफा थे, जिनको उनकी माता ने फटकारा था। क्यूँकि वह कुछ दिनों से अल्लाह के पैगम्बर से नही मिले थे। **हुजैफा** खुद याद करते हुवे कहते हैं:

"मेरी माँ ने मुझ से पुछा कि पिछली बार मैं कब अल्लाह के नबी से मिला था. 'कुछ दिन हुवे हैं।" मैंने उनसे कहा: उन्होंने मुझ से कहा: "मुझ से दूर हटो"। और मुझे डांटने लगी। 'तुम उत्तेजित मत हो', मैंने कहा. 'मैं अल्लाह के नबी के पास जाऊंगा और मग़रिब की नमाज़ उनके साथ अदा करूँगा, और उनसे कहूँगा के वह मेरे और आपकी माफी के लिए दुआ करें.' अतः मैं नबी के पास और आप के साथ मग़रिब की नमाज़ पढ़ी। आप लगातार नमाज़ पढ़ते रहे। यहां तक कि ईशा पढ़ कर फ़ारिग हो गये। मैं आप के पीछे पीछे हो गया। आप ने मेरी आवाज सुन ली। फिर फ़रमाया:

"यह कौन है, हुज़ैफा?" मैंने कहा: "हां"।

"कैसे आना हुवा?" अल्लाह आप की और आप की माँ की मग़फ़िरत फरमाये।.." (तिर्मिज़ी, मनाकिब, 30 - 3781, अहमद, जि, 5, 391)

हज़रत बिलाल, पैगम्बर की मस्जिद के खास मोअज्जिन और आप की मस्जिद के बुलबुल थे। उनकी हालत कुछ अलग ही थी। एक बार जब हुजूर दुनिया से चले गए, उन्होंने अपनी ज़बान ही खो दी; यहाँ तक कि कोई तेज़ चाकु भी उनके होठ को अलग नही कर पाया। मदीना के सारे अत्याचार आप की जुदाई के आगे उनकी आँखों में छोटे थे। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल॰) के समय के अजान की मीठी यादों को याद करते हुए, खलीफा अबू बकर, कई बार बिलाल से ख्वाहिश करते थे पुराने समय की याद ताज़ करने की खातिर अज़ान सुनाने के लिए, इसके बावजूद परेशान बिलाल मना कर देते थे।

"अगर आप पूछें मैं क्या महसूस करता हूँ, अबू बकर, मैंने हुजुर के मृत्यु के बाद सारी ताक़त खो दी है अजान कहने की... इसलिए मेहरबानी कर के मुझे मेरी हालत पर छोड़ दें" परन्तु अबू बकर वचनबद्ध थे पुराने समय के अजान को दोबारा सुनने के लिए।

"यदि वे नबी का नुकसान सह रहे हैं, तो तुम चाहोगे कि उम्मत अपने मुअज्जिन से भी वंचित हो जाये?"

बहुत अनुरोध के बाद, आखिरकार बिलाल फज्र के समय मीनार पर चढ़े। दुखी और आँखों में आंसू लिए, फज्र की अजान कहने के लिए; भावना से भरे हुवे। लेकिन वह असफल रहे, वह अजान नही कह पाये। इसके बाद अबू बकर ने कभी जोर नही दिया।

हज़रत बिलाल उसके बाद ज्यादा दिनों तक मदीना में नही रहे, एक शहर जहाँ हर जगह, हर कोने में अल्लाह के रसूल (सल्ल°) की यादें बसी हुई थी, उसी सुबह फज्र की नमाज़ के बाद, दमिश्क के लिए रवाना हो गए।

अपने प्यारे नबी के साथ मिलने की चाह में, वह हमेशा लड़ाईयों में आगे रहते, लगातार एक के बाद दूसरा युद्ध लड़ते, लेकिन उनकी चिंता यह थी कि उन्हें शहादत नही मिली। साल बीतते गये। उधर प्लेग ने दमिश्क को बर्बाद कर दिया था, पचीस हज़ार ज़िन्दगी तबाह हो गयी थी, खुदाई कहर बढ़ता जा रहा था, बिलाल आखरी साँस ले रहे थे, उनका दिल जुदाई से झुलस गया था।

एक दिन बिलाल सपने में अल्लाह के पैगम्बर को देखते हैं:

"कब तक यह दूरियां रहेगी, बिलाल?" हुजुर उनसे दुःख के साथ कह रहे थे. **"क्या बहुत समय नही हो गया है मुझे मिले हुए?"** परेशान बिलाल फ़ौरन उठ गये. बिना किसी देरी के, वह वहां से सवार हो कर चले।, इस बार पैगम्बर की कब्र की मदीने में ज़ियारत की। जैसे ही उन्होंने अपनी आंखें कब्र पर डाली, आंसू जारो कतार बहने लगे, हसन और हुसैन पहुँच गए. पैगम्बर के नवासे को देख कर प्रफुल्लित हो गए, जो उन्हें संजोया करते थे। बिलाल ने उन्हें गले लगा लिया।

"हम आपकी अजान सुनना चाहेंगे, बिलाल", उन्होंने दरख्वास्त की।

उनकी मर्ज़ी के आगे बिलाल झुक गये. उनकी अजान ने मदीना को हिला दिया। जब वह अशहदु अन्न मुहम्मदन रसूलुल्लाह पर आये तो सारे मर्द औरत शहर के अपनी गलियों में आ गये और मस्जिद में आने लगे, सोचा कि अल्लाह के नबी दोबारा जिंदा हो गए हैं। जब से

मुहम्मद (सव) की वफात हुई थी, मदीना के निवासी कभी एक दिन में इतना आंसू नही बहाए थे।[51]

इस महान सहाबी, नबी के सच्चे भक्त, का दमिश्क में निधन हो गया। वे साठ साल के थे। उनकी देहांत से ठीक पहले, ऐसा कहा जाता है कि प्रसन्नतापूर्वक उन्होंने कहा,

"कल, अल्लाह जब चाहेंगे, मैं अपने दोस्त अल्लाह के पैगम्बर और सहाबियों से मिलूंगा।"

उनकी पत्नि अपने पति बिलाल के निधन की सुबह रो रही थी और हाय अफसोस कह रही थी, किंतु उस समय बिलाल ख़ुशी ज़ाहिर कर रहे थे, और बड़बड़ा रहे थे, "वाह रे खुशी...." (ज़हबी, सियरु आलामिन नुबला, 1, 359)

अत्यंत प्रेम सहाबियों का अल्लाह के पैगम्बर के लिए हदीस की रिवायत में भी देखा जा सकता है। जब वे लोग अल्लाह के रसूल से कुछ रिवायात करते तो उन लोगों के घुटनों में कपकपी हो जाती और रंग फीका पड़ जाता कि अनजाने में कोई गलती न कर बैठें। अब्दुल्लाह इब्न मसूद, एक बार, जब वह पैगम्बर का उदहारण दे रहे थे तो थरथराने और कांपने लगे थे। इनकी इस कमजोरी को मानते हुए, अल्लाह के नबी का उदहारण देने के बाद, कुछ सहाबी फ़ौरन एह अंदाज़ा लगाते थे कि, "या तो उन्होंने यह कहा है या इस तहर ही कुछ कहा है" (इब्ने माजा, मुक़द्दमा, 3)

वह इतने महान पैगम्बर थे कि जिस दिन आप का देहांत हुवा, तो वो लकड़ी रोने लगी, जिस का सहारा लेकर आप धर्मोपदेश दिया करते थे। अपने सामने चश्मा उबला ताकि आप के साथी उससे प्यास

51. इब्नल असीर, असदुल गाबा, 1/244 - 245, ज़हबी, सियरु आलामिन नुबला, बैरूत, 1986, 1/357 - 358

बुझा सकें। रोगी, जो उनके पिए हुए वुदू को पीता है, ठीक हो जाता है। वह जो उनके साथ खाते हैं वह अच्छी बातें सीखते हैं।[52] उनके बाल और दाढ़ी के बालों को मस्जिदों में रखा गया है, उनकी प्यारी सी यादगार के रूप में।

दुनिया के बादशाह, पुर्नजागरण के दिन..

पापियों के लिए सिफारिशी है,

जो रोया उम्मती, उम्मती (मेरी उम्मह, मेरी उम्मह) वह आप हैं,

प्रशंसा का झंडा उनके हाथ में थमाया जाएगा।

सारे नबियों के सरदार हैं,

हाथ जो खोलेगा पहली बार, स्वर्ग का दरवाज़ा, आप का हाथ है।...

इस दृश्य को **शेख ग़ालिब** ऐसे चित्रित करते हैं:

अनंत काल के मंच पर, आपका खुतबा पढ़ा जायेगा

आखरी न्याय के दिन, आपका फैसला रखा जायेगा

तुम्हारा गुल्बंग, पाक आगमन, सिंहासन पर मनाया जायेगा,

आपका पवित्र नाम दर्ज है स्वर्ग और ज़मीन पर

आप अहमद हैं, आप महमूद हैं, आप मुहम्मद है

आप पर दुरूद और सलाम हो ऐ मेरे सरदार

आप खुदा की ओर से समर्थित सुल्तान हैं।

52. इन जैसे अन्य मोअजिज़ों हेतु देखें: बुखारी, मनाकिब, 25

अल्लाह के नबी (सल्ल॰) के लिए सहाबा के बाद प्यार का झरना

अल्लाह के नबी (सल्ल॰) के लिए प्रेम, स्नेह और उनसे लगाव संसार में फैलता रहा, और उसी उत्साह से जैसे सहाबा के काल में था, और यह प्रवाह जिसकी चाह सागर से मिलने की है, और इसकी प्राप्ति जो दोनों जहान की सुख और शांति है संभव है केवल होश में पैगम्बर के साथ प्रेम का भाव रखने से।

अल्लाह के पैगम्बर (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि उनके चाहने वालों का अंत आखरी समय तक नहीं होगा:

"मेरे उम्माह में से जो मुझे प्यार करते हैं, वह उनमे से हैं जो मेरे बाद आयेंगे. वोह मुझे देखने के लिए अपने परिवार और अपने जानने वालों को तैयार कर रहे होंगे।" (मुस्लिम अल जन्नह 12, हाकिम, जि, 4 - /6991-95)

अल्लाह हमें भी उनमें शामिल कर, जिनके बारे में इस हदीस में प्रशंसा की गयी है। आमीन.....

यह मिसाल अच्छे से स्पष्ट करती है कि रसूलुल्लाह की मुहब्बत आप के सहाबा और आशिक़ों के दिलों में हर परेशानी और संकट के समय सीमाओं से बढ़ जाती थी। अब्दुल्लाह इब्न मुबारक बयान करते हैं कि:

"मैं इमाम मालिक के बगल में था, जब वह अल्लाह के पैगम्बर कि कोई हदीस सुना रहे थे। लेकिन उनके चेहरे में वह दर्द साफ़ झलक रहा था। और यहाँ तक कि कांपने लगे, लेकिन उन्होंने अल्लाह के रसूल के कलाम को जारी रखा। जब सबक ख़तम हुआ और विधार्थी इधर उधर चले गए तो मैंने उनसे कहा:

'अबू अब्दुल्लाह......मैंने कुछ बड़ा अजीब देखा आपमें आज.'

'हाँ' उन्होंने उत्तर दिया. '**एक बिच्छु कहीं से आया और मुझे सौलह बार डसा सबक के दौरान. लेकिन मैं अल्लाह के नबी के प्रति श्रद्धा और अकीदत के कारण से मैं बाहर नहीं आ पाया.**'[53]

पैगम्बर के आदर के खातिर, उस ज़मीन पर जिसपर वह चलते थे, इमाम मालिक ने कभी उंट और घोड़े की सवारी नहीं की; न उन्होंने कभी जूते पहने। कभी भी कोई व्यक्ति उनके पास आता किसी हदीस के बारे में पूछने, रहमतुल आलमीन के सम्मान में, वह सबसे पहले वुज़ु करते, अपने सिर पे अमामा बांधते, इतर लगाते, और एक ऊँची जगह पर बैठते, तब जाकर किसी आने वाले को कुबूल करते। अल्लाह के नबी के वकार में वह खुद को रूहानी तौर पे तैयार करते।, और यह भी ध्यान रहे कि सुनने वाले भी इसी तरह पेश आयें. इमाम साहब हमेशा धीमी आवाज़ में बोलते थे जब आप रौज़ा में होते थे, वह जगह जो सिंहासन (मैम्बर) और अल्लाह के नबी के कब्र के बीच में था, जो मदीना की मस्जिद के अंदर है। **अबू जफ़र मंसूर** ने, जो उनके बाद खलीफा हुए, आवाज़ ऊँची की तो आप ने कहा:

"ख़लीफ़ा, इस क्षेत्र में आप अपनी आवाज़ नीची रखें। अल्लाह चेतावनी देते हैं कि यहाँ कोई अपनी आवाज़ ऊँची न करे। अल्लाह के नबी कि उपिस्थिति में, आउर यह चेतावनी सहाबा के बारे में आई है जो तुलनात्मक रूप से हम से कहीं अधिक गुणी है।"

इमाम मालिक, दोबारा, माफ कर दिया मदीना के अमीर को जो उनके अनुचित मुसीबत का कारण बना था, यह कहते हुवे कि:

"मैं शर्मिंदगी महसूस करूँगा कि महशर में अल्लाह के नबी के एक पोते से झगड़ा करूं।"

53. मनावी, फैज़ुल क़दीर, बैरूत, 1994, 3/333, सुयूती, मिफ्ताहुल जन्नह, 52

उल्लेखनीय उम्मतियों में से जिन्होंने अल्लाह के नबी के प्रेम में खुद को न्योछावर कर दिया, **सय्यद अहमद यसावी**, अपने प्यार का इज़हार इस तरह करते हैं जब वे तिरेसठ साल के हुए, जिस आयु में अल्लाह के पैगम्बर का देहांत हुआ था, आइंदा के लिए घूमना फिरना पूर्णतः छोड़ दिया और अगले दस साल तक जब तक जीवित रहे, अल्लाह के दीन में लगे रहे।

हदीस के एक महान विद्वान **इमाम नववी** ने इसी तरह अपनी ज़िन्दगी में कभी तरबूज नहीं खाया, इसका मुख्य कारण यह था कि वह नहीं जानते थे कि अल्लाह के नबी ने इसे कैसे खाया था। और जब आप ने खाया, तब भी इस डर से कहीं एक चीज़ अल्लाह के रसूल ने की और वह न कर पाएंगे।

एक सुल्तान मील का पत्थर साबित हो सकता है अल्लाह के नबी के असलियत को बताने के लिए, वह युसूफ **सुल्तान सलीम प्रथम** से मालूम चलता है, संयोग से दुनिया के सम्राट, जो ज़मीन पर सबसे बड़ी चीज़ है, अपने इस भावना को काव्य रूप देते हुए अपनी नजदीकी जो अल्लाह के हबीब और उसके पैगम्बर से थी बताता है:

दुनिया का बादशाह होना, जो लड़ाई झगड़े में व्यस्त होता है, ठीक है,

लेकिन एक गुरु का शिष्य होना इन सब चीजों से बेहतर आउट उच्चतम है.....।

और वे इन वाक्यों और काव्य पंक्तियों के माध्यम से अल्लाह के द्वार के करीब होने और उस से नज़दीक होने का अपना शौक़ और इच्छा व्यक्त कर रहे हैं।

पहले ज़माने में एक रिवाज़ था, काव्य या अवतरण पत्थर पर खुदवाने का। यह बताने के लिए कि अल्लाह ने कैसे ब्रह्माण्ड की

रचना की अपने प्यारे मुहम्मद के लिए। किसी उस्मानी बादशाह की माता सय्यदा बज़्मे आलिम ने पत्थर पर लिखा था:

प्रेम जो था अल्लाह का, मुहम्मद के लिए, उसके प्रदर्शन हेतु आप का जन्म हुआ,

मुहम्मद के बिना.....प्रेम सूना है

इसी के प्रदर्शन से यह कायेनात बनी..

और बज़्मे आलम अल्लाह तक पहुंची।

बगदादी कवि फुज़ूली, चित्रित करते हैं अपने रचित कसीदा "पानी" में:

मत डाल ऐ आँख पानी उस आग पर जो तुम्हारे प्रेम में मेरे दिल के भीतर जल रही है।

इसका शोला इतना तेज़ी से बढ़ रहा है, इसका कोई बचाव नहीं है पानी में,

मेरी आंख हैरान है। वह नहीं जानती कि आसमान का रंग नीला कहाँ से हुआ,

क्या मेरे आंसू आसमान में घुस गए हैं या यह वाकई रंग है आसमान का?

बग़ीचे में पानी देने से माली परेशान न हो और एक ही बार में पानी देकर इसे बर्बाद कर दे

क्योंकि एक गुलाब भी उसके चेहरे की तरह कभी नहीं खिलेगा, चाहे हजारो बार पानी पर पानी दें,

मेरे दोस्तो। अगर मैं आप के मुबारक हाथों को चूमें बिना मर जाऊं

तो मेरी कबर को प्याला बनाकर उनको पानी पेश करना। उनका हाथ चूमने का अवसर मिल जाएगा मुझे।

पानी आप के पैरों की गुबार चूमने के लिए अनंत काल से चल रहा है। आप के इश्क़ में कभी इस चट्टान से टकराता है, कभी उस से।

एक काव्य रचना जो सुलेमान चिल्पी की है, उस में वह मानते हैं कि सूर्य भी मुहम्मद (सव) के चारों ओर ऐसे ही चक्कर और परिक्रमा कर रहा है, जैसे परवाना घूमता है। अतः कहता है कि: **"मुहम्मद रौशनी हैं, जिनके इर्द गिर्द सूर्य परिक्रमा करता है।"**

जहां तक उस्मानी सुल्तान अहमद खान की बात है, तो उन्होंने हुजुर के पदचिन्ह को अपनी पगड़ी पर नक़्शा बना लिया, और इससे जो प्रेरणा उन्हें मिली है, उसे कविता के रूप में प्रस्तुत करते हैं:

ऐ काश, मैं अपने सिर पर उठाए हुवे हूँ एक ताज की तरह,
अल्लाह करे यह हुजुर के पाक कदम हों।
पैगम्बर के बगीचा के, वह एक गुलाब हैं
ऐ अहमद, उस गुलाब के तलवों से गौरवान्वित हो और चलता रह।

एक ऐसी ही प्रेम भावना अज़ीज़ महमूद हुदायी प्रकट करते हैं:

आपका आना एक दया है, एक सुखद अनुभव है ऐ रसूलल्लाह
प्यार करने वालों के लिए पैगम्बर की दृष्टी एक इलाज है, ऐ रसूलल्लाह
हुदायी के लिए हिमायत करें। आंतरिक या बाहरी,
खड़ा है आपके दरवाज़े पर एक गुलाम जो दुर्दशा में है। ऐ रसूलल्लाह

ज़ियारत के दौरान, जब मदीना थोड़ी दूरी से दिख रहा था, कवी नाबी दुखी हो गए एक सिफा सलार को देख कर, जो अनजाने में अपनी पांव को पाक रौज़ा की तरफ किये हुए था. उनसे रहा नहीं गया, पैगम्बर कि शान में कविता लिखने लगे:

आदर से पेश आना; यह अल्लाह के महबूब कि ज़मीन है,
खुदाई बिंदु का दृश्य, यह पैगम्बर कि जगह है,
इस पाक ज़मीन में आओ तो नबी का एहतराम करो,
इस जगह को नबी भी चूमते हैं। पवित्र फरिश्ते यहां आते जाते हैं।

इस पवित्र प्रेरणा के फलस्वरूप जो सीधे नबी के दिल से निकली थी, अल्लाह के चमत्कारी संकेत के साथ, रव्दः के मुअज्जिन ने उस कविता को फज्र नमाज़ के दौरान मीनार पर चढ़ कर बुलंद आवाज़ में पढ़ा। नाबी, बहुत भावुक हो गए, और आँखों में आंसू लिए मस्जिद में दाखिल हुए।

सय्यद मुहम्मद असद, जो शेखों में से एक हैं, जो अपने रचना के माध्यम से वर्णन करते हैं कि पैगम्बर कि प्रेम कि आग में वह कैसे जल रहे हैं:

आपकी मंत्रमुग्ध कर देने वाली उपस्थिति ने, मेरे प्यार, वसंत में आग लगा रही है,

आग है गुलाब, बुलबुल आग है, बाली आग है, मिट्टी आग है, कांटा आग है।।

आशिक़ों का सारा वजूद जल रहा है एक किरण से जो सूरज की भांति आपके चेहरे से आ रही है,

आग है ज़बान, आग है दिल, और आंखें भी जो रोये आपकी प्यार से....आग में हैं।

यह कैसे संभव है कि जीवन के में इतनी आग से घिरे हुवे प्यार के शहीदों को स्नान करवाया जाए?

शारीर आग है. कफ़न आग है, शहीद के नहाने का पाक पानी आग पर है।

एक दिल को छु लेने वाले कवी जो पहले इसाई थे और बाद में इस्लाम से गौरवांवित हुए यानी यमान ददा जब उन्होंने मुहम्मद की रूहानी रौशनी को अनुभव किया, और एक भावुक श्रद्धालु हुए पैगम्बर मुहम्मद के, अपनी एक सुन्दर कविता के द्वारा भावना को प्रकट करते हैं:

मुझे कोई दर्द महसूस नहीं होगा अगर मैं झुलसते रेगिस्तान में प्यासा रहूँ. मेरी आखरी साँस चल रही हो
मैं महासागर में कोई गीलापन महसूस न करूँ, अगर मेरे दिल में ज्वालामुखी भी फटे,
अगर आसमान से ओले बरसे, मैं अपने उपर शीशे का कवच महसूस करूँगा
आपकी सुन्दर उपस्थति के लिए, ए पैगम्बर, मैं प्रजव्लित हो सकता हूँ

आपकी कि गोद में आपकी प्यार के साथ, इससे ज़यादा उत्साह और क्या होगा
आपके घर में मरना, मेरे आका, यह सच है कि यह संभव नहीं है?
वे आपकी प्यार में मरना सुरक्षित महसूस करेंगे किसी भी नुकसान से, जैसे मेरी आंखें रास्ता दे रही हो,
आपकी सुन्दर उपस्थति के लिए ,ए पैगम्बर, मैं प्रजव्लित हो सकता हूँ

इस टूटे हुए दिल, के साथ मैं खली हूँ, सिर्फ आप हैं जो इस से नजात दिला सकते हैं'

आग से झुलसे हुए, मेरे होंठ आपका नाम बुदबुदा रहा है आपके सिंहासन के पास,

इस गरीब को धन्य कर दें जब आपका दिल चाहे मेरा दिन बना दें

आपकी सुन्दर उपस्थिति के लिए , ए पैगम्बर, मैं प्रजव्लित हो सकता हूँ

कमाल अदीब कुर्क्कुओग्लु उत्साह और प्रसन्नता के साथ पैगम्बर की मेराज की यात्रा को बताते हैं:

मेराज कि रात आपके चेहरे को देखने का आकाश को भी गौरव मिला।

ज़मीन को धन्यवाद् कहने आकाश तुरंत सजदे में गिर गया।

जिब्रईल हर शाम रोमांचित होकर इहराम पहनते हैं।

ताकि हरम और मस्जिद ए नबवी में आप के दरबार पर हाज़िर हो।

जो भी एक बार देखता, चिल्लाता 'अल्लाह अल्लाह', उम्मीद में

उसका दिमाग खो गया, दोबारा उनका चेहरा देखने के लिए तमन्नाएं करने लगा

यह खूबी थी अल्लाह के पैगम्बर में कि हर कोई उन्हें अपना रहनुमा स्वीकार कर लेते और उनके अनुयायी हो जाते जो उन्हें अदभूत व्यक्तित्व बना देता। जिस प्रकार आसमान में तारे हैं। सहाबी, जो सच्चाई के साथी थे और सच का साथ देने वाले इस अच्छाई को

इस हद तक प्राप्त कर पाए क्यूंकि उनके पास आप (सव) की रौशनी थी। जितना आप के करीब होते गये, वह सहाबा उतने ही ऊंचाइयों पर चढ़ते गये।

हम उनसे कितना प्यार करते हैं, इसको हम, अब्दुल्लाह इब्न ज़ैद, बिलाल हब्शी, इमाम नववी, सय्यद अहमद यसवी और इनके जैसे सहाबियों और बुजुर्गों की अंतरात्मा से नाप सकते हैं। जिस तरह से सहाबियों ने उनसे मोहब्बत की थी, हमें भी उन्हीं के तरह उनसे प्यार करना चाहिए, जैसाकि हम उनकी उम्मत में से हैं और अपने अंदर आध्यात्मिक पुर्नजीवन प्राप्त करना चाहिए, अपनी रूह को जगाना चाहिए।

यह प्रतिष्ठित मुसलमान जिनके बारे में ऊपर बयान किया गया है, बेशक, उनका स्थान बहुत उपर है, सितारों कि तरह. लेकिन क्या चीज़ उन मुसलमानों के दिलों में है जिससे वे आसमान के सितारे हैं और वह उनका अल्लाह के नबी के लिए प्यार है।

प्यार, जैसा की हम जानते हैं यह बिजली के लहर की तरह होता है दो दिलों के बीच। एक सच्चे अनुयायी के लिए यह महत्वपूर्ण है कि उसका दिल इस क्षमता को हासिल करे। आघात समकालीन मानव जाती इस दिल की क्षमता को खो चुकी है, दुर्भाग्यपूर्ण ढंग से इससे और कई क्षमताएं नष्ट हो गयी हैं। और इसका कारण अहंकार है; और सांसारिक और अहंकारी कोई भी आत्मा को पुनर्जीवित करने में सक्षम नहीं है।

रूहानी या सच्चा प्यार तक पहुँचने के लिए उसके रूपक का सहारा लिया जा सकता है, मजनू जो अपने आका तक पहुँचने के सफ़र में जो लैला के साथ शुरू हुआ था, संभवतः एक व्यायाम था परिपक्वता के लिए, और इसे क्षमता प्राप्त हुई सच्चे प्रेम के लिए, जो

मानव जाती आज हताश है, को ज़रूरत है. सभी बुरे, अतियाचार और प्यार की कमी की वजह से इतने बड़े पैमाने पर संकट है.

एक प्यार की महानता प्रेमिका के लिए बनाया है, जब ज़रूरत पड़ी बलिदान के द्वारा मापा जाता है, और जोखिम लिया जाता है. एक सच्चा प्रेमी अपना जीवन कुर्बान कर सकता है, यदि आवशयकता पड़े, यहाँ तक के बिना सोचे हुए बलिदान देना है; बल्कि वह शांति से चलता है, जैसे कि क़र्ज़ उतरने जा रहा हो. वह जो सच्चे प्यार को नकारते हैं और इसमें खुद को विलीन करने में असमर्थ होते हैं, वह आसानी से परिपक्वता को नहीं पहुँचते, अपने अहंकार के चलते स्वयं को इससे अलग रखना पसंद करते हैं, उनके दिल लुट जाते हैं और कचरे के रास्ते पर बिछते हैं।

इंसान का उस अमानत को उठाना जिसे कोई पहाड़ तक न उठा पाया। और जिसके लिए प्रथम शर्त सच्के प्यार तक पहुँचने में है. केवल सच्चे प्यार में संघर्ष और लड़ाई आदमी की आत्मा को पिघला सकता है और उसे संवार सकता है. एक परिपक्व आदमी, प्रेरणादायक अनुकार्नियता से एक उदाहरणीय चरित्र प्राप्त करता है, जिसमे अपनी आत्मा को बुरे से पवित्र करता है, और उसका दिल स्वर्ग के बाग़ में बदल जाता है, जिसमे खिड़कियाँ खुली होती हैं खुदाई चीज़ों को देखने के लिए।

अल्लाह तआला फरमाता है:

"मैंने अपनी रूह से उसमें साँस फूंकी", (अल-हिज्र, 29)

अल्लाह तआला अपने उस शानदार जौहर से, जो उसने इंसान को अता फ़रमाया है, याद दिला रहे हैं कि जब यह जौहर और वह इंसानियत इंसान इस को मुकाम तक पहुंचाने में सक्षम होते हैं, इश्क़ और मुहब्बत का परिणाम है, तो उसका दिल उसके सामने इस

कायनात के कई रहस्य खोलना शुरू करता है। और अल्लाह की वास्तविक शक्तियां प्रकट होना आरंभ होती हैं, जिन्हें इंसान, वस्तुओं की हक़ीक़तें और कायनात कहा जाता है।

जब कोई परिपक्वता के स्तर तक पहुँचता है, तो उसके और अल्लाह के बीच के गफलत के पर्दे उठने लगते हैं। उसे **"मौत से पूर्व मौत"** से खुश होने वाले का नसीब मिल जाता है। दुनिया, जो अब तक लुभाती थी, चका चोंध लगती थी, उसका प्रेम अब दिल से निकल जाता है। रूह, अब, अपने बनाने वाले के करीब आती है और वह इस उत्साह का लुत्फ लेता है।

वह लोग जिन्होंने सच्चा प्रेम नहीं चखा है वह इंसान के अंदर मौजूद वेह्शी दायरों को तोड़ने में असमर्थ रहते है। ईस से हमारी मुराद नफ़्स की ख्वाहिश है। वे फरिश्तों की दुनिया की ओर कदम बढ़ाना बिल्कुल नहीं जानते। वह जो नहीं जानते है कि कैसे प्रेम करते हैं, उसका दिल बंजर जमीन की तरह है। प्रेम ज्ञान का निवास है, दरअसल यह अस्तित्व में होने का कारण है।

बेशक अल्लाह की रहमत जिसने मानवता को उसके निचले स्तर और दुर्दशा से शिखर पर पहुंचाया, वह आप (सअव) का व्यक्तित्व है। उसके माध्यम से ही मानव को उसके अस्तित्व में आने का कारण मालूम हुआ। आप ना होते तो यह कायनात न बनाई जाती। आप ने इंसानियत के सामने एक बेहतरीन आदर्श बन कर एक नमूना प्रस्तुत किया।

पैगम्बर (सव) सरे ब्रह्माण्ड के आंखों की ठंडक हैं और इसके अस्तित्व में आने के कारण हैं. वह मार्गदर्शक हैं मालिक और नौकर के मिलन के। एक उत्कृष्ट आचरण के मालिक, उनकी आखरी साँस तक, प्यारे अल्लाह के नबी सबसे अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करते हैं

एक सच्चे प्रचारक होने का। आप अल्लाह की बन्दगी में हम सब के लिए बेहतरीन नमूना हैं।

संक्षेप में कहा जाता है कि आप दया और प्यार ऐसा सागर थे, जो समूचे संसार को शामिल है। इस ब्रह्माण्ड में उनके लिए दर्द दिल हमेशा के लिए उनके प्यार के साथ जलता रहेगा, हवा में हर एक साँस उनसे मिलने की प्रतीक्षा में कड़वे घूंट भरता रहेगा।

और उसकी मुहब्बत धीरे धीरे हमेशा ज़ाहिर होगी, जब इसी चीख के साथ दिल की गर्मी बढ़ेगी:

"ऐे पैगम्बर, मैं आपके लिए जल रहा हूँ, आप अपने सौंदर्य के माध्यम से मुझे गौरव प्रदान करें"

यह प्यार जो आध्यात्मिक आकाश के चमकते हुए सितारे के द्वारा पेश किया गया उनमे **बहाउद्दीन नक्शबंदी**, **युनुस अमरा** और **मौलाना रूमी** भी हैं। इसी प्यार के साथ मौलाना रूमी ने कदम बढाया सच्चे और अनंत ख़ुशी की प्राप्ति के लिए; एक ख़ुशी जो अनंत से मिलती है, और जो सर्वोच है। जैसा की उन लोगों ने अनंत काल की ओर जो दूरी तय की है वो इस तरह के समाप्त होने वाले शरीर के चुंगल से दूर फिसल जाता है, और कोई भी चीज़ अनंत के अलावा उन्हें शोभा नहीं देती।

आखिरकार, कैसे असली ख़ुशी, हमेशा हमेश के लिए, मरने वाले के साथ मिश्रित होकर, अस्थायित्वा के साथ पीड़ित होकर सुखद अनुभव के प्राप्ति हेतु हमें प्रेम और स्नेह को इसकी वास्तविक मंज़िल पर छोड़ना पड़ता है, अत: इसके प्राप्ति का यही मार्ग है। **मौलाना रूमी** के शब्दों में, उनकी ख़ुशी के स्रोत का पता चलता है:

"जितने समय तक मैं जिंदा हूँ, मैं कुरान की सेवा करूँगा, मुहम्मद के रास्ते की धूल हूँ, मैं उस व्यक्ति और उसके शब्दों से दूर हूँ, जो मैं कह रहा हूँ उसके अलावा कुछ कहते हैं।"

उनका अल्लाह के नबी के रास्ते के धुल बने रहने, और सहजता से उनके द्वारा बताये गए पदचिन्हों पर सारी ज़िन्दगी चलने का मतलब यही है कि अपनी पूरी उम्र और जीवन आप के और सुन्नत के पीछे और उसके अनुसार कर दे।

एक अन्य तरीका जो हमें उनसे मिलाता है और बांधे रखता है वह बेहतरीन अध्यात्मिक दुरूद और सलाम भेजने का है, जिससे हम दिल से अल्लाह के रसूल से जुड़े रहें।

ज़रूरी है कि यह हमारी ज़बान पर चलता रहे और हम उसे दोहराते रहें। बेशक यह हमारे दिल को उनसे जोड़ेगा और अपने भीतर उनके प्यार को प्रेरित करेगा।

रसूलुल्लाह की खिदमत में बेहतरीन दुरूद और सलाम

पवित्र कुरान में, अल्लाह, पैगम्बर की ज़िन्दगी की प्रतिज्ञा पर उन्हें महिमा भेजता है. सर्वशक्तिमान अपने बाद उनके महान नाम को दर्शाता है, अल्लाह के नबी को मानने के लिए आवश्यकता है कि उस से पूर्व एक अल्लाह का सच्चा सेवक होना। अल्लाह ने उनको चेतावनी दी जो उसके हबीब के उपस्थिति में आवाज़ उठाए। उनका नाम दूसरों की तरह लेने पे चेतावनी दी। और आगे, सर्वशक्तिमान ने कहा कि उसने और फरिश्तों ने उनपर दरूद भेजे हैं। और यही हुक्म उम्मत को भी किया इस आयत के अनुसार:

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَآ

اَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيماً

अल्लाह और उसके फरिश्ते नबी पर दुरूद भेजते है। ऐ ईमान वालों तुम भी उन पर खूब दुरूद और सलाम भेजो। (अल अहज़ाब- 56)

निम्नलिखित उबय्य इब्न कअब द्वारा कहा गया है:

"रात के तीसरे पहर में आप अपनी नींद से बेदार हो जाते और कहते:

'अल्लाह को याद करो ऐ लोगो अल्लाह को याद करो! पहली फूंक जो ज़मीन को तहस नहस कर देगी। फिर इसी तरह दूसरा फूंका जायेगा. मौत आएगी पुरे तीव्रता के साथ; मौत आएगी पूरी तीव्रता के साथ......' 'मैंने बहुत दुरूद भेजा, अल्लाह के रसूल' ने फ़रमाया/ 'कितनी बार मुझे यह पढनी चाहिए? **'तुम जितनी बार चाहो'** आपने जवाब दिया। 'क्या यह सही है अगर मैं अपनी प्रार्थना का एक चोथाई भाग इस पर खर्च करूँ?' मैंने दोबारा पूछा। **'तुम्हारी जितनी मर्ज़ी हो उतना करो'** उन्होंने सलाह दी। 'लेकिन यह तम्हारे लिए अच्छा होगा अगर तुम ज्यादा बख्शो'। 'मैं तो अपने प्रार्थना का आधा समय दूंगा', प्रस्ताव रखा। **'जैसी तम्हारी इच्छा...लेकिन अच्छा है अगर तुम ज्यादा बख्शो'**, उन्होंने कहा। 'कैसा रहेगा अगर मैं अपना दो तिहाई समय दूं?' **'तम्हारी इच्छा...लेकिन अच्छा है अगर तुम ज्यादा करो'** मैंने पूछा

'कैसा रहेगा अगर मैं अपने पूरी प्रार्थना में सलवात ए शरीफा भेजूं?'

'अगर तुम ऐसा करते हो', अल्लाह के नबी ने जवाब दिया, 'तब अल्लाह तम्हें सारे मुसीबतों से छुटकारा देगा और तम्हारे पापों को क्षमा कर देगा" (तिरमिज़ी, क़यामत, 23/2457)

इसलिए पैगम्बर के मानने वालों का एक सतत मन्त्र के रूप में सलावत'उस-शरीफा को गले लगाना अमल रहा है, उनके लिए यह साधन है अनुयायी के दिलों में पैगम्बर के लिए प्यार बढाने का। उचित तरीके से पैगम्बर मुहम्मद (सव) को मानते हुए और सब से उत्कृष्ट उदाहराण जो उन्होंने पेश किया है निसंदेह यह कुरान और सुन्नत की वास्तविकता की सही समझ से आता है, यह तभी संभव है जब आप पैगम्बर की अनुकर्णीय नैतिकता को करीब से देखें, और उनके दिल की गहराई में झांकें।

हर व्यक्ति अपने आवश्यक विशेषता का वर्णन करने में असफल रहा है; उनके विशाल नैतिकता और स्वभाव समझ से परे है। बुद्धिमान, वे अध्यात्मिक सुल्तानों, यहाँ तक कि जिब्रील अमीन, सबने उनके रास्ते को सम्मान के साथ स्वीकारा है, उनके दरवाज़े पर हाथ फैलाया है।

दूसरे दृष्टिकोण से प्रार्थना के शिष्टाचार के अनुसार जैसे इस्लाम ने सलाह दी है, सभी प्रार्थनाएं अल्लाह की प्रशंसा और उनपर महिमा, और अल्लाह के नबी पर दरूद से ही शुरू हो और उसी पर समाप्त हो। क्योंकि एक स्थापित दृढ विश्वास है कि अल्लाह तआला कभी ऐसी दुआ अस्वीकार नहीं करते, जो संछेप में, यह एक प्रार्थना और दलील है सर्वशक्तिमान के लिए; संछिप्त कारण यह है कि क्यूँकि प्रार्थना सजी है इसके साथ, दोनों शुरू और अंत में। यह कहा जाता है कि दोनों के बीच व्यक्तिगत प्रार्थना अल्प मात्र में, जिसको स्वीकार किया जाना अच्छी तरह सुनिश्चित है। "एक प्रार्थना और दुआ जो आसमान और ज़मीन के बीच लटकी रहती है," उमर कहते हैं:

"और यह अल्लाह तक नहीं उठाई जाती, जब तक अल्लाह के नबी पर दरूद नहीं भेजा जाये." (तिरमिज़ी, वितर, 21/486)

दरअसल, अल्लाह के नबी ने एक आदमी को देखा, नमाज के बाद, प्रार्थना कर रहा था बिना अल्लाह के रसूल पर दुरूद भेजे, तो आप ने कहा **"इसे जल्दी पूरी करो"** वो आदमी आप के पास पहुंचा। नबी ने उसको बुला कर सलाह देने से पहले टिपण्णी कि:

"प्रार्थना करना हो तो सबसे पहले अल्लाह की तारीफ करो और अल्लाह के नबी पर दरूद भेजो...और उसके बाद जिस तरह ख्वाहिश हो, कहो" (तिरमिज़ी, दअवात, 64/3477)

प्रार्थना में तवस्सुल के आश्रय का महत्व, एक साधन के रूप में पैगम्बर के नाम का महत्व के मामले में इब्ने अब्बास निम्नलिखित घटना याद करते हैं:

"एक लड़ाई जारी थी। ख़ैबर के यहूदी और गतफान के कबीला के बीच, जहाँ यहूदी बुरी तरह हारे। अंत में प्रार्थना की:

'आका हमने जीत मांग रहे हैं उस अशिक्षित नबी के वसीले से जिनकी उपस्थति आखरी वक़्त में आपने मंज़ूर की थी', जिसके बाद उन लोगों ने गतफान को हमेशा हरा दिया था। फिर जब आप ने नबी होने का ऐलान किया तो यह मुकर गए। जिसपर अल्लाह घोषणा करता है:

और यह लोग इस से पहले काफिरों के विरुद्ध आप के नाम के सहारे से युद्ध में विजय प्राप्त करते थे। फिर जब उनके पास वह आ गया, जिस को यह जानते थे, तो इनकार कर दिया। अल्लाह की लानत हो ऐसे काफिरों पर। (बक़रा, 89, कुर्तुबी, जि, 2/27, वाहिदी, पे. 31)

पैगम्बर को संबोधित करते हुए अल्लाह भरोसा दिलाते हैं:

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيهِمْ

وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُونَ

ऐ पैगंबर, आप की उम्मत जब तक आप इन के अंदर हैं, या इस्तिगफार करते रहेंगे, अल्लाह उनको अज़ाब और सज़ा नहीं देगा। (अनफाल: 33)

इस दिव्य आश्वासन भी गैर विश्वासियों के सम्बन्ध में पता चला था. जबकि उन्हें विशेसधिकार दिया गया है, केवल वे पैगम्बर के शारीरिक निकट थे, विश्वासियों का आशीर्वाद समझ से बहार और

आगे है; विशेष रूप से वे लोग न सिर्फ अपना विश्वास पक्का प्रदान करते थे असाधारण व्यक्तित्व पर, बल्कि इसके अलावा उनके विश्वास के अन्दर वे उनके प्यार का एक हिस्सा भी प्राप्त करते थे। शब्द, यहाँ शक्तिहीन है। संदेह से परे, दुनिया कि ख़ुशी और बाद के महानता कि सीढियाँ संभव है, अनुयायी कि प्रेम कि गहराई में, जितना पैगम्बर के प्यार में दिल डूबता है।

यह सच है कि मोमिन का दिल यदि रसूल की मुहब्बत का एक मर्तबा और दर्जा भी पा ले, तो अवश्य ही यह मात्रा आख़िरत में उसके दर्जे को ऊंचा करेगी। और दुनिया की खुशी और प्रसन्नता को बढ़ाएगी।

तो उन पर शांति और दुरूद भेजना न भूलें। आपके लिए भी उनकी हिमायत की ज़रूरत है क़यामत की घड़ी में!

चौथा भाग

- दिल और मन के लिए सुबसे बड़ी ज़रूरत है एक अनुकरणीय चरित्र
- हम रसूलुल्लाह से कितनी मुहब्बत करते हैं?

दिल और मन के लिए सुबसे बड़ी ज़रूरत है एक अनुकरणीय चरित्र

इंसान को इंसान बनाने वाली चीज खुदा का प्रशिक्षण है।

अल्लाह तआला ने ज़मीन और आसमान बनाया है मनुष्य की सेवा के लिए।[54] और फिर मनुष्य को अल्लाह के समक्ष गैर जिम्मेदाराना तरीके से भटकने के लिए नहीं छोड़ा है।[55]

और अधिक अस्पष्ट रूप से, सर्वशक्तिमान दोनों मनुष्य और ब्रह्माण्ड दोनों को निर्देशित करते हैं अपने परमात्मा कानूनों के माध्यम से, जिससे परीक्षण के इस जीवन में स्वतंत्रता और ज़िम्मेदारी के बीच एक अच्छा संतुलन स्थापित हो। निम्न आयत में इसी तथ्य को अल्लाह स्पष्ट करता है:

وَالسَّمَآءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيزَانَ

और आसमान को ऊपर उठाया और तराजू स्थापित की। ताकि तुम संतुलन में गड़बड़ न करो। (अर-रहमान 7)

54. अल-जासियह: 13
55. अल कियामह: 36

इसका मतलब यह है कि आदमी को ब्रह्माण्ड में प्रचलित एक संतुलित लय में होना चाहिए। तो जैसा कि विशाल अनुपात के इस ब्रह्माण्ड में थोड़ा बहुत भी असंतुलन नहीं है, ठीक इसी तरह सर्वशक्तिमान की आज्ञा का पालन करने हेतु इस यात्रा में मनुष्य को भी कम से कम विषयांतर नहीं होने देना चाहिए। केवल वे लोग जो इस संतुलन को अपने जीवनकाल के लिए ध्यान से देखते हैं और यह इस गुण के कारण बुद्धिमान हो जाते हैं, केवल वही लोग दोनों जहान में खुश रहते हैं। लेकिन वे जो असंतुलित जीवन यापन करते हैं, गुजरी इच्छाओं और अकाल्पनिक ख़ुशी को लगाम देकर, रहस्य से अनभिज्ञ है जो आ रही है और फिर चली जाती है उनके जीवन से, वे उस को जीने और उसको समझने में असमर्थ है, अफसोस कि उनकी ज़िन्दगी गहरे लालच में गुजरती है। अज्ञान के भंवर, उनके भविष्य के लिए एक प्रस्तावना, एक अशुभ कल और आख़िरत में इससे भी बड़ी निराशा लेकर आते हैं।

इस रहस्य का जवाब मनुष्य की वास्तविकता के भीतर छुपा रहता है. यह बात हकीक़त है की जब मनुष्य को इस दुनिया में इस परीक्षण के लिए भेजा गया, तो मनुष्य इस प्रकार बनाया गया था कि उसमें सही गलत पहचानने की क्षमता हो। एक परीक्षण वास्तव में तब सही होता है जब उसमें मनुष्य को दोनों तरह की क्षमता और शक्ति हो।

इंसान की ज़िंदगी सही और गलत के झगड़े और टकराव के साथ चलती रहती है। प्रत्येक शक्ति चाहती है कि इंसान जो अपने हिसाब से चलाये। एक तरफ भले काम की भावना है या उर दूसरी ओर नफ़्स ए अम्मारा है।

इस ज़बरदस्त झगड़े और टकराव में बुद्धि, इच्छा और विश्वास और ज्ञान जैसी योग्यताएं अपर्याप्त होती हैं। क्योंकि यह चीजें पर्याप्त

होती तो आदम को नबी न बनाया जाता। और बाद में आसमानी किताबें उतार कर मानव के प्रशिक्षण की आवश्यकता न पड़ती। तथा दुनिया और आख़िरत की भलाई प्राप्त करने हेतु आसमानी शिक्षाएं पहुंचाने की कोशिश न की जाती। अल्लाह सदैव मानवता को आसमानी संदेश और नबियों के माध्यम से हमेशा सीधे रास्ते की ओर ले जाते।

क्योंकि बुद्धि एक दो धारी तलवार है। कभी तो यह इंसान को सही रास्ता तलाश करने में मदद करती है और उसे **अहसन ए तक़वीम** तक ले जाती है। किंतु कई बार उसे सीधे मार्ग से हटा क़र गुमराह कर देती है। और जानवरों से भी **नीचा बहुत नीचा** गिरा देती है। अतः आवश्यक हुवा कि बुद्धि और अक्ल को एक व्यवस्था के तहत रखा जाए। और वह व्यवस्था वह्य का निज़ाम है।

जीवन भर ज़ुल्म ढाने वाले लोग अधिकतर बहुत बुद्धिमान थे और उनको उनकी आत्मा ने भी सही रास्ता नही दिखाया। हलाकू खां को ही लीजिए जब बगदाद में घुसा तो दजला नदी में चार लाख बेगुनाह लोग मार कर गिराए गये। मक्के में लोग अपनी बेटियों को ज़िंदा ज़मीन में दफन कर देते थे। किसी को कोई शर्म नहीं आती थी। जब कि सब बड़े अक्लमंद और बुद्धिमान होते थे। उनके नज़दीक इंसानों को काटना और लकड़ी को काटना बराबर है। वे इस चीज़ को अपना बुनियादी हक़ मानते थे।

उनके पास भी बुद्धि और भावना हमारी तरह थी, किंतु वह पहिये की दन्त की तरह थी जो विपरीत दिशा में कार्य करता है, अतः नतीजा प्रतीक्षा के प्रतिकूल ही आएगा।

इन सब तर्कों से यही समझ में आता है कि इंसान को एक खुदाई व्यवस्था की अत्यंत आवश्यकता थी, ताकि वो यहां सुगम ढंग से जीवन व्यतीत कर सके। और यह संभव है केवल वही की रौशनी

में शिक्षा के माध्यम से, और यह मार्गदर्शन और ज्ञानवर्धक, पैगम्बरों से ही हासिल होती है. अन्यथा, जीवित स्वभाव के साथ परस्पर विरोधी दिशा केवल बुराई उत्पन्न करेगी।

अर्थात इंसान में जो भी शक्ति काम करेगी, वो अपने विपरीत बल और शक्ति को समाप्त करना चाहेगी। यदि सत्यता का वर्चस्व होगा तो बुराई समाप्त होगी और बुराई का बोलबाला होगा तो अच्छाई की क्षमता दम तोड़ जाएगी। अतः यह अल्लाह का इंसानियत पर उपकार है कि उस ने नबियों और रसूलों को भेजा और आसमानी किताबें उतारीं। ताकि मानव जीवन को सही डगर और दिशा में बनाये रहने में मदद करें। अतः मानवता ने देखा कि बेटियों को ज़िंदा गाड़ने वाली क़ोम आज इंसानियत के लिए अभिमान बन कर उभरी। यह सब आप के बेमिसाल प्रशिक्षण का नतीजा था।

इसलिए कि जब तक वे पैगम्बर के मार्गदर्शन की रौशनी से बंधे रहे, लोग अल्लाह के सेवक बनते रहे और ऐसे हो गए कि अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वे तारीफ़ के काबिल हुए। यदि ऐसे नहीं हुवे तो वे खुदाई परिक्षण में विफल हुए और बर्बाद हुए, अहंकार और भावना की लड़ाई में नाकाम हुवे, और गढ़े की गहराई में डूब गए। सांसारिक जीवन वास्तव में इसलिये बनाया गया था कि मनुष्य कौन सा पक्ष लेगा। आदमी के अंदर सकारात्मक या नकारात्मक भावना ही उसे किसी एक ओर ले जाती है। अवुर यह लेजाना नफ़्स और आत्मा के मध्य झगड़े के नतीजे में होता है।

एक गुलाब के बगीचे में टहलने से आदमी पर जिस तरह गुलाब अपनी एक खुशबू छोड़ता है; इसी तरह गन्दगी से चलते हुए गन्दगी का धब्बा लग जाता है। बाहरी प्रभाव हमेशा दिख जाते हैं। अतः मानव को सब से अधिक अपने भीतरी कल्याण, सफाई और सुधार की आवश्यकता है।

सार यह है कि इंसान अपने भीतर की बुराइयों से ही गंदगी में गिरता है और उन्हीं से वो बुरा बनता चला जाता है। क्योंकि इंसान के भीतर ही सकारात्मक और नकारात्मक दोनों क्षमताएं हैं।

नतीजतन, आंतरिक दुनियां में उन लोगों का जो प्रशिक्षण के अंदर नहीं आते हैं और जिनका हृदय ठीक से संवारा नहीं जा सका है, उनके व्यवहार बहुत से जानवरों के व्यवहार जैसे हो जाते हैं। कुछ लोमड़ियों जैसे चालक होते हैं, कुछ लकड़बघा की तरह क्रूर होते हैं, और दुसरे सांप की तरह ज़हरीले होते हैं, कुछ दुलार करते समय काटते हैं जबकि दुसरे जोंक की तरह खून चूसते हैं; कुछ और होते हैं जो मुस्कान के पीछे कुछ छिपाते हैं। उनमे से हर एक में पशुओं के कुछ अजीब गंदे गुण हैं।

अध्यात्मिक शिक्षा के माध्यम से मनुष्य अपने अहंकार के हावी होने को असफल नहीं कर सकता है, कि फिर वह अच्छा इंसान बन सके। क्योंकि उसके अंदर हैवानी आदतें और विशेषताएं होती हैं। इसके अलावा, जैसा कि उनका चरित्र बाहर से झलकता है, इससे उनके छुपे हुवे चरित्र को ढूंढने में कष्ट नहीं होता है, जो इसे जानते हैं। उनका आचरण एक दर्पण की तरह है, जो बिना कभी झूठ कहे, उनकी आंतरिक दुनिया दिखाता है।

क्या साम्यवाद, एक व्यवस्था जो बीस लाख निर्दोष लोगों के प्राण की आभुती पर बनाया गया था, एक बर्बरता पूर्ण हृदय का प्रतिबिम्ब नहीं है? क्या मिस्र के पिरामिड के नीचे हजारों बेगुनाहों को एक फ़िरऔन के लिए नहीं मारा गया? क्या हकीक़त में वे ज़ुल्म के भयानक संग्राहलय नहीं हैं? बहुत सारे बददिमाग के लिए, जो अभी तक इसे इतिहासिक श्रेष्ट कीर्ति मानते हैं जो उनके डर को दिखाता है। लेकिन अगर सच्चाई की खिड़की से देखा जाये तो, क्या यह एक अत्यंत बर्बरता का पर्याय नहीं होता?

पुरे विवरण से सत्यापित होता है कि जब मेंढक स्वभाव के लोग और सांप की तबियत के लोग समाज पर राज करते हैं तो समाज में आतंक और अराजकता भड़क जाती है। लेकिन यदि गुलाब जैसे खुशबूदार लोग बादशाहत करते हैं तो चारों ओर खुशबू फैलती है, तब पूरी ज़मीन बगीचे में बदल जाती है, समाज में शांति की स्थापना होती है।

इसलिए, वह्य का प्रशिक्षण होना इंसान के लिए अनिवार्य है| ऐसे प्रशिक्षण से जो परोक्ष रहते हैं वे भले ही क्रूरता के चिन्ह ना दिखा कर सही व्यवहार प्रदर्शित करें परन्तु हमेशा क्रूर बर्ताव की संभावना रखते हैं। और हैवानियत की ओर आगे बढ़ते हैं।

क्योंकि दिव्य प्रशिक्षण के बिना सब अच्छाई खत्म हो जाती है| मुश्किल के समय में जब अहंकारी इच्छाएं विनाशकारी हो जाती हैं तब अप्रशिक्षितों में बुराई की अपरिपक्वता दिन की रौशनी के सामने खुल जाती हैं| एक अप्रशिक्षित अहम् एक चूहे की भूकी बिल्ली की तरह है; एक बिल्ली चूहे की झलक भर से ही उसके सामने रखे उत्तम भोजन का दूसरी बार सोचती तक नहीं और बेझिझक चूहे का पीछा करती है| एक मनुष्य कुछ अलग नहीं है; बिना प्रशिक्षण के जितनी भी सुन्दरता मन को प्रिय हो, एक बार चूहे ने बिल्ली जैसा शिकार भांप लिया तो वह नष्ट होने तक पूरे ह्रदय से उसका पीछा करता है| फ़िरऔन और नमरूद का जीवन चूहे जैसी इच्छाओं से प्रेरित शर्मनाक विनाश का प्रदर्शन है|

दिव्य प्रशिक्षण के तत्व में निर्दोष मनुष्यों की हत्या करना तो दूर, बल्कि यह मोमबत्ती के कम्पन्न जैसी विनम्रता रखने का आदेश देती है, दूसरों के अधिकारों के ज़रा भी उल्लंघन के विरुद्ध है| रसूलुल्लाह एक हरी टहनी को भी नुक्सान पहुचाने से बचे रहते थे| मक्का पर विजय की राह पर उन्होंने अपनी सेना को मार्ग की दूसरी ओर से

जाने को कहा, जिससे अपने बच्चो को दूध पिला रही कुतिया न डरे। चीटियों के घरोंदे को राख के ढेर में देख कर व्याकुल हुए पैगम्बर ने कहा था

"यह चींटियों के बिल को किसने जला दिया है?"

पैगम्बर की रूह में डूबे उनके सौहार्द कि मिट्टी से बने तुर्कों ने वक्फ का निर्माण किया, जो कि आत्मकोश परोपकार संस्था है जो मनुष्य और जानवरों के लिए समानतः करुणा को शीर्ष रखती हैं| यह कम आश्चर्य की बात है कि तुर्क साम्राज्य का निरीक्षण करने वाले यात्रियों के विवरण से यह साबित होता है कि मुस्लिम प्रतिवेश में कुत्ते बिल्लियाँ लोगों के आस पास रहते थे जबकि दुसरे क्षेत्रों में वे मनुष्य की परछाई देखने मात्र से ही छुपने की जगह तलाशते थे।

ये सब परिपक्व प्रशिक्षण के स्तर या उसके अभाव की अभिव्यक्ति हैं| ज़मीन को खून तर कर देने वाला इंसान है; मगर वो भी इंसान ही है जो ज़रूरतमंद के जीवन को बचने के लिए अपना खून देता है।

जीवन में आंतरिक बुद्धिमता से युक्त सकारात्मक और नकारात्मक चरित्र के लोग साथ रहते हैं| उदाहरण के लिए यह एक हिरनी के बच्चे की यातना जैसा है जिसे क्रूर और असंतुष्ट जानवरों के साथ बंद किया जाये| कभी कभी एक उदार व्यक्ति लोभी के साथ रहता है; बहुत बार एक बुद्धिमान एक मूर्ख के साथ होता है; या एक परोपकारी एक अत्याचारी के साथ| एक लोभी में कम दयाभाव होगा; एक डरपोक में प्रतिबद्धता का अभाव होता है| एक उदार, दूसरी ओर, दयालु, विनम्र और प्रतिबद्ध होता है| एक मूर्ख बुद्धिमान को नहीं समझता| अत्याचारी आस पास सब को दबाने के लिए बल का प्रयोग करने को तत्पर रहता है और सोचता है कि वो न्याय कर रहा है| संक्षिप्त में, दिव्य भाव वाले बिज्जुओं के साथ इस दुनिया में

बने रहते हैं; पहले वाले यथार्थ के साथ रहने और उसके दास होने के मार्ग पर चलते हैं, और बाद वाले ऐसा जीवन ग्रहण करने के धोखे में रहते हैं जिसमे निचले जीवों के ख़ुशी की आदतें प्रबल होती हैं, ऐसे जीवन में जो सेवन, हवस और लालसा इत्यादि के नियंत्रण में रहता है|

ऐसी दुनिया में रहना वास्तव में एक कठिन परीक्षा है जहाँ विपरीत चरित्र रहते हों; ऐसी परीक्षा जिसमे जीतने के लिए हम बाध्य हैं| दुनिया के इम्तिहान में सफल होना और दिव्य के साथ पुनर्मिलन मानव अस्तित्व का आवश्यक उद्देश्य है जिसके लिए अवगुण से दूर होना और सराहनीय गुणों को अपनाना और फिर मानव होने के योग्य सम्मान और गरिमा का जीवन जीना ज़रूरी है|

हालांकि आत्मा दिव्य है, परन्तु मानव शरीर मिट्टी का है। इसलिए, जब आत्मा अल्लाह के पास जाती है, शरीर भी मिटटी में वापस जाना चाहिए| शारीरिक रूप से मनुष्य अन्य प्राणियों की विशेषताएं रखता है, यही सटीक कारण है कि अहंकार पर नियंत्रण के लिए अध्यात्मिक प्रशिक्षण अनिवार्य है, आत्मा को परिष्कृत करना, उसका भरण करना जिससे वो एक मज़बूत आत्मा निकले। अन्यथा, कोई शिकार होने से बच नहीं सकता, बाहर से शैतान से और अन्दर से अहंकार के अतिक्रमण से, जो आत्मा को कमज़ोर स्तिथि में रखता है| इसी के बारे में कुरआन की आयतें कहती हैं:

وَنَفْسٍ وَمَا سَوّٰيهَا فَاَلْهَمَهَا فُجُورَهَا وَتَقْوٰيهَا قَدْ اَفْلَحَ
مَنْ زَكّٰيهَا وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰيهَا

"और नफ़्स की क़सम और जिसको उसने बराबर किया। फिर उसमें अच्छे बुरे की क्षमता रखी। जिसने उसे संवारा वो

सफल हो गया। और जिसने उसे व्यर्थ छोड़ा वो नाकाम और विफल हो गया। " (अस-शम्स, 7- 10)

महान **मौलाना रूमी** अंदरूनी दुनिया में बसने वाले सही और गलत को विस्तृत करते हैं आयत के निम्नलिखित सादृश्य द्वारा:

"ओ सच के रास्ते पर प्रयास करने वाले, अगर तुम सच जानना चाहते हो तो जानो कि न मूसा न फ़िरऔन मृत हैं; वे तुम्हारे अन्दर भलीभांति जिंदा हैं, तुम्हारे अस्तित्व में छुपे हुए, तुम्हारे ह्रदय में अपना युद्ध करते हुए| इसलिए तुम्हे इन आपस के दुश्मनों को खुद के अन्दर ही ढूँढना चाहिए!"

मौलाना आगे कहते हैं:

"देह को अधिकता में मत खिलाओ और इसे विकसित मत करो क्योंकि यह धरती के लिए बलिदान है| बल्कि अपने ह्रदय को पोषण दो, क्योंकि यही सम्मान से उन्नत होने के लिए है| जो मीठा और वसायुक्त है वह देह को कम दो| जिन्हें ये अधिकता में आभास होता है वे अंततः अहंकार की वासना के शिकार होते हैं और शर्म में खो जाते हैं| आत्मा को आध्यात्मिक पोषण दो| उसे परिपक्व विचार, उत्कृष्ट समझ जैसा भोजन दो जिससे वह शक्ति के साथ अपने लक्ष्य को जाये|"

एक अप्रशिक्षित आत्मा एक ऐसे पेड़ के सामान है जिसकी जड़ें सड़ गयी हो जिसके संकेत उसकी शाखाओं, पत्तियों और फलों में दिखते हैं| ह्रदय की बीमारी शरीर के कर्मो से सामने आती है और उसका नुक्सान बढ़ाती है| द्वेष, इर्ष्या, दंभ और अहंकार के अन्य रूप इसके लक्षण हैं जो अनिवार्य उपचार की प्रतीक्षा में हैं| इन कमियों को संशोधित करना अल्लाह तआला के बनाये और दिखाए हुए मार्ग पर चल कर मुमकिन है| उदाहरण लेना और अनुकरण करना दो सबसे

बुनियादी प्रवृत्ति हैं जो एक मनुष्य को ऐसा चरित्र निर्माण कराती हैं जो खुदा की ख़ुशी के अनुसार है|

उदाहरण लेने और अनुकरण करने की प्रवृत्तियाँ

जन्म लेने के समय से ही मनुष्य एक उदाहरण की आवश्यकता में होता है। वह सभी विचार, धारणा और गतिविधियां जो एक व्यक्ति के जीवन को आकार देती हैं जैसे भाषा, धर्म, मौलिक आचरण और आदतें कहीं और से नहीं, बल्कि आस पास के उदाहरण और उनके प्रभावों से विकसित होते हैं। कुछ अपवादों को छोड़ कर सामान्यतः यही होता है।

उदहारण के लिए एक बच्चा अपने माता पिता द्वारा बोली जाने वाली भाषा ही सीखता है; दूसरी, तीसरी या चौथी भाषा सीखने के लिए उदाहरण की आवश्यकता होती है। इस अभिप्राय में और लघु कारकों के अलावा, एक व्यक्ति की शिक्षा इस बात में है कि अनुकरण करने की अंदरूनी प्रवर्ति जितनी अनुमति देती है, उतना उस चीज़ का अनुकरण किया जाये जो सिखाई जाती है, चाहे वो गलत हो या सही। इस प्रकार, माता पिता, रिश्तेदार और सामाजिक वातावरण के प्रभाव में आने और अनुकरण करने की क्षमता के अनुसार एक व्यक्ति समाज का अच्छा या बुरा सदस्य बनता है|

तदापि, जितनी आसानी किसी भाषा और अन्य बाहरी कौशल को सीखने में है, किसी के धार्मिक, मौलिक, और आध्यात्मिक संसार को आकार देने में गंभीर अवरोध उत्पन्न होते हैं। इसलिए, जब तक इस क्षेत्र को पैगम्बर और आप के मित्रों द्वारा प्रशिक्षित नहीं किया जाता, एक मनुष्य अज्ञान और विद्रोह के नाले में गिरने से खुद को नहीं रोक पाता। जिससे उसका अनंत आनंद पाने का कार्यक्षम एक दुखद आपदा में परिवर्तित हो जाता है। क्योंकि यहां नफ़्स, शैतान

और इच्छाएं जैसी विभिन्न चुनोतियों से उसे गुज़रना पड़ता है, जिन्हें अल्लाह ने उसके आज़माने हेतु पैदा किया हुवा है।

इसीलिए इंसान को उन प्रसिद्ध व्यक्तियों से आजमाया जाता है, जिन को आदर्श की तरह लेते हैं और उनकी तरह बनना चाहते हैं, क्योंकि वे उनको दुनियावी जीवन में आदर्श मानते हैं। यही कारण है कि इंसान जब तक अपना जीवन नबियों और औलिया के बताए हुवे रास्ते पर नहीं डालता, तो ऐसे लोग कभी अपने जीवन को सीधे रास्ते पर नहीं डाल सकते। इस तरह उनकी स्थायी भलाई हमेशा के नुकसान और घाटे में बदल जाती है।

आज उन लोगों का हाल जिन्होंने बेवकूफ मशहूर लोगों को अपना आदर्श बना रखा है, और अपने आप को नष्ट करके भी उन तक पहुंचना चाहते हैं, यह केवल मानवीय फ़िज़ूल खर्ची और सभ्यता का विनाश है। क्योंकि ऐसे नीच और बेवकूफ लोगों को बैठने हेतु दिल का तख्त प्रस्तुत करना अत्यंत घिनौना और शर्मनाक अमल है।

अहंकार की चाल का ठोस उदहारण देते हुए **मौलाना रूमी** ने अजीब तरीके को दर्शाया है, जिससे आदमी को धोखा दिया जाता है:

"यह कोई आश्चर्य कि बात नहीं है कि एक मेमना भेड़िये से पीछा छुड़ाता है क्योंकि भेड़िया उसका दुश्मन और शिकारी है| परन्तु एक मेमने का भेड़िये से प्रेम करना एक चमत्कार के योग्य है।"

"बहुत सी मछलियां बेफिक्र पानी में तैरते हुए एक कांटे में फंस जाती हैं, अपनी भूख के लालच में शिकार हो जाती हैं।"

इसलिए मानव जाति को हमेशा ऐसे निर्देशकों की आवश्यकता रहती है, जिनके पास ह्रदय की शिष्टता हो और एक शुद्ध आत्मा, हमें अहंकार की चाल समझाने के लिए हो।

पैग़ंबरों का अनुकरणीय चरित्र

जिस प्रकार किसी व्यक्ति के लिए स्नेह, उसके चरित्र को सराहना, अनुकरण करना एक प्राकृतिक स्वभाव है, हर मनुष्य के लिए यह महत्वपूर्ण है कि सबसे सुसज्जित उदाहरण ढूंढें और उनका अनुसरण करें। इस कारण ही अल्लाह ने न सिर्फ मानव जाति को इल्हाम की किताबें बख्शी है बल्कि उन किताबों के जीवित अवतार, पैगम्बरों को भेजा है जिनके पास अनगिनत और सर्वोच्च विशेषताएं हैं। ताकि वे रसूल और नबी उस किताब का जीवित किरदार हों। और उसके आदेशों को मानवता के सामने कर के दिखा सकें।

वे ऐसे परिपूर्ण व्यक्तित्व हैं जिनसे बर्ताव, धर्म, ज्ञान और मौलिकता की सिद्धता टपकती है| इतिहास भर में, हर एक पैगम्बर ने प्रमुख अनुकरणीय आचरण में विशिष्ट होने के कारण मानवजाति की असाधारण सेवा की है| हर नबी इंसानी अखलाक और मानवीय मूल्यों में शिखर पर पहुंचे हुवे थे। हर मामले की सुंदरता में वे सब अद्‌त थे।

जहाँ तक उलमा की बात है, जो पैगम्बरों के वारिस हैं, जो बुद्धिमान, धर्मी और परिपक्व आस्तिक हैं, क्योंकि -

❖ उन्होंने बिना त्रुटि के धर्म के गहन और सामान्य का मिश्रित किया है जो उन्होंने अपने व्यक्तित्व पर सजाया है।

❖ संयम और धर्मनिष्ठा के मार्ग पर अपने ह्रदय से लम्बे फासलों को पार करके अचार की पूर्णता तक पहुचे हैं।

❖ अपनी अनुभूति और समझ को दोनों दुनियाओं के क्षितिज तक फैला कर भावना की गहराई और श्रद्धा का स्वाद पाया है।

❖ और उनका एकमात्र संकल्प मानवजाति को बुरे आचार और अहंकार के अँधेरे गढ़े से बचाना है और उन्हें अच्छे मूल्य और आध्यात्मिक परिपक्कता के आसमान तक उठाना है।

वे व्यवहारिक उत्कृष्टता कि चोटी हैं जिन्हें समय समय पर आये पैगम्बरों ने शिक्षित क्या है, ऊंचे व्यक्तित्व हैं उनके लिए जिन्हें पैगम्बरों को देखने का सौभाग्य नहीं हुआ। करुणा की भाषा में उनकी शिक्षा और सलाह जो दिलों को पुनर्जागृत कर देती है, असल में पैगम्बरी की लिपि से निकलती आध्यात्मिकता की बूँदें हैं।

जब भी कोई एक समाज में न्याय देखता है , चाहे वह पूरे संसार में कहीं भी हो, दिलों को साथ लाने वाली करुणा और सहानुभूति का अनुबंध, या एक ऐसे समाज में जहाँ अमीर गरीब की मदद के लिए जाता है, बलवान निर्बल की रक्षा करता है, स्वस्थ रोगी का हाथ थामता है, खुशहाल अनाथों को खाना खिलाता है, बिना किसी शक की परछाई के यह सब पैगम्बरों और उनकी राह पर चलने वालों ने ही दिए हैं।

मानव जाति का परिवार जो आदम और हव्वा -अलय्हिमस्सलाम- से शुरू हुआ था, उसने आराधना का पहला स्थान वह चुना था, जहां आज मक्के में पवित्र काबा है। तद्पश्चात, प्राकृतिक और सामाजिक ज़रूरतों के कारण दुनियाभर में फैलने वाले आदम के बच्चों ने अपना धार्मिक जीवन जारी रखा, समय समय पर पैगम्बरों द्वारा निर्देशित हो कर। जब जब दिव्य सत्य को अज्ञानियों द्वारा छेड़ा गया, तब खुदा ने पैगम्बरों को भेजा। जिनके माध्यम से उसने धर्म को पुनर्जीवित किया। अल्लाह की निरंतर कृपा और करम से लगातार ईश्वरीय छवि के इतिहास में व्यक्तिगत और सामाजिक उधेड़ बुन चलता रहा, यहां तक कि मानवता अंतिम काल में आखरी नबी के जीवनकाल तक पहुची।

लम्बी प्रतीक्षा के बाद इस काल में आने के बाद, तब "**असर-उस-सआदह**" परमानंद के युग में उसी जगह पर जहाँ धार्मिक जीवन शुरू हुआ था, एक अंतिम दृश्य प्रस्तुत किया; पवित्र मुहम्मद मुस्तफा के रूप में। उनके जैसी सम्पूर्णता का ख्याल भी अकल्पनीय है, उस हद तक कि पैगम्बरों को भेज कर धर्म का नियमित पुनरुद्धार करने का अंत हो गया, जिससे इस्लाम वह धर्म बन गया, जिससे अल्लाह तआला खुश है|

फलतः हम यह कह सकते हैं कि धन्य दूत ने अपने जीवन में अनगिनत सदगुणों को यथार्थ किया है इसलिए वह मनुष्य में अनुकरण करने की प्राकृतिक प्रवृत्ति के लिए एक उत्तम उदाहरण है। उसका अनुकरण करने में सफलता मिलना उसके चरित्र के प्रति लगाव और सम्पूर्ण-हृदय के प्रेम पर निर्भर है।

हम उन्हें कितना प्रेम करते हैं?

दिल और दिमाग का प्रयोग

अल्लाह ने मनुष्य को अहसनुल तक्वीम, जगत का सर्वश्रेष्ट वर्ग बनाया है, जिनकी सेवा में इश्वर ने घोषणा तक कर दी हर उस वस्तु की, जो भी पृथ्वी और आकाश पर है , ज़ाहिर है यह उन्ही के लिए है जो कुछ विचार कर सकते हैं।

इसका मतलब यह है की हमारा सबसे बड़ा कर्त्तव्य यह है कि हम अल्लाह द्वारा दिए गए आशीर्वाद को ध्यान से देखें, और उनके उद्देश्य जिनके लिए वे हमें दिए गए हैं , विशेष रूप में हम आभारी हों कि हम अपने बुद्धि का उचित उपयोग कर रहे हैं।

बुद्धि का सही उपयोग क्या है?

बुद्धि अहंकार का दास नहीं होना चाहिए, बल्कि परमात्मा की वास्तविकताओं के माध्यम से यह परिक्षण की एक दुनिया में होने के बारे में जागरूकता को जन्म दे।

दिल का सही उपयोग क्या है?

दिल सच्चे प्यार की सीमा, परमात्मा को देखने का नज़रिया है। इसलिए यह सब पाप से शुद्ध और ज़िक्र और तौहीद के साथ भरा

हुवा और मुक्त रखा जाना चाहिए। इसी शुद्धता के साथ परमात्मा को लौटाना चाहिए। और वह सही सलामत सुरक्षित हृदय है।

एकमात्र उदहारण धन्य पेगंम्बर

चेतावनी और जागरूकता के इरादे से अल्लाह ने 124,000 पेगंम्बर भेजे, जो उनकी असीम उदारता का एक संकेत है। नबी जिनसे वह सबसे ज्यादा प्यार करते थे, सबसे बेदाग़, सबसे अनूठे आखिर तक थे। हर नबी कुछ लोगों तक उन्हें उनके सामाजिक तौर तरीकों की रह दिखाने के लिए भेजे गए थे, दूसरी ओर अल्लाह के रसूल सभी मानव जाती के लिए सही राह दिखाने हेतु मानव इतिहास के अंत तक के लिए भेजे गए थे।

एक ऐसे समय में जब अविश्वास और अज्ञानता निराशा की गहराई पर था, अल्लाह ने उन्हें मानवता के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में भेजा है, सूरज की तरह उन्हें सबसे शानदार उपहार के रूप में पेश किया।

चमत्कारों में सबसे बड़ा चमत्कार: कुरान करीम

पवित्र कुरान जो अल्लाह का खुद का कलाम है, और उनके पैगम्बर की नबुवत की सच्चाई का पुनर्जीवन के दिन तक जब तक सारे मनुष्य चमत्कार देखेंगे और इससे सबक लेंगे।

अल्लाह के नबी ने कुरान के चमत्कार से ऐसा समाज का निर्माण किया जो **स्वर्गसुख समाज**[56] के नाम से जाना जाता है।

---

56. तुर्क "सौभाग्य का युग" की शब्दावली बरकत के लिए प्रयोग करते थे। इस से वे आप का ज़माना मुराद लेते थे। क्योंकि आप का ज़माना आप के कारण सौभाग्य का था।

इतिहास में दूसरा उदाहरण नहीं मिलता। ना समझ लोगों के बेकार हिस्से से, एक अच्छे समाज का निर्माण पैगम्बर की अध्यात्मिक और प्रेणादायक शिक्षा से, जैसे एहसास, कलक और ज़िम्मेदारी जिससे एक जानवर जैसे लोग जो अपने बेटियों को जिंदा दफ़न कर देते थे, जो यह बर्दाश्त नहीं करते थे कि कमज़ोर मेमना दजला नदी के किनारे भेड़िए द्वारा शिकार कर लिया जाये। इन उदहारण से स्पष्ट होता है कि हुजूर कितने महान थे, जिन्होने ऐसे समाज को एक सभ्य समाज बना दिया।

अंधा सूर्य को बुरा भला कहता है।

दिल यदि अंधे न होते तो ज़रूर पैग़म्बर को अवश्य देखते। अगर नज़र और दृष्टि की किए कमी का शिकार न होते तो दिल में किसी प्रकार की कमज़ोरी न पाते। अर्थात जो हर कमी और बुराई को अल्लाह ही की तरह फेरेगा, वह अपनी कमियों पर सदैव ऐसे बहाने ही करेगा।

इतिहास में देखा जाए तो पेगेंम्बरों पर सभी ख़राब इलज़ाम अपने लोगों द्वारा ही लगाये गए थे। क्योंकि यह पैगंबर दिव्य सत्य से जुड़े थे, अतः वह कुछ लोगों की अहंकारी भावनाओं के साथ ठीक नहीं बैठते थे। और इस दिव्य शक्ति से, वह लोग रहस्योद्घाटन से भी हमेशा घबराते थे।

वह हमेशा इस फ़िराक में थे कि अपनी कमियों और भद्देपन से पेगंम्बरों को बदनाम करें ताकि उनके अहंकारपूर्ण जीवन को असल मंज़ूरी और वैधता मिल सके।

इसी तरह आज पेगंम्बरों के खिलाफ शुरू की गई बदनामी की मुहिम, कुछ और नहीं बल्कि उनके उपेक्षणीयता और दुर्भाग्य को दर्शाती है।

प्राणी सिर्फ उसके स्वभाव के उपयुक्त निवास में जिंदा रह सकता है। और आदमी भी कोई अपवाद नहीं है। ठीक उसी तरह जिस तरह एक मधुमक्खी के लिए अव्यावहारिक है फूल और पराग, जहाँ उसे पोषण और साँस दोनों मिलता है, उस के इलावा कहीं और रहना ,एक चूहे का, जिसकी प्रकृति गंदगी के लिए फिट है, एक गुलाब के बाग में ध्यान केन्द्रित करने की उम्मीद समझ से बाहर है। महान रूह बनती हैं **"मुहम्मदी सत्यता"** की प्रेरणा से, जबकि दुष्कर्मी और गंदी आत्मा गन्दगी से अस्तित्व में आती है।

कभी-कभी अबू बकर पैगंबर के चेहरे को देखते, प्रशंसा से भरा होता है, और टिप्पणी करते '**कितना सुंदर है**!' संक्षेप में, शीशे के माध्यम से वह केवल अपने भीतर की दुनिया में देखते थे। दरअसल, दया के पैगंबर के लिए अपने भावनात्मक उत्तर में जब उन्होंने कहा,

"मुझे किसी एक व्यक्ति की संपत्ति से उतना लाभ नहीं हुवा, जितना अबू बक्र की संपत्ति से हुवा।"

जब उनको पता चला तो रोने लगे और उन्होंने कहा:

"अल्लाह के पैगम्बर, क्या मैं खुद और मेरा माल आपके खातिर नहीं है?" (इब्न माजा, मुक़द्दमा, 11)

इस कथन के माध्यम से अबू बकर ने ज़ाहिर कर दिया कि वह स्वयं और उनका सबकुछ अल्लाह के रसूल को समर्पित है। तथा उन्होंने आप की सेवा में अपने आप को न्योछावर कर दिया है। क्योंकि उनकी अंतरात्मा एक आईना था जो अल्लाह के प्यारे नबी की नैतिकता को दर्शाता था।

दूसरी ओर अबू जहल, जो अल्लाह और उनके पैगंबर का पक्का दुश्मन है, आप के अद्त चेहरे से एक पूरी तरह विपरीत प्रभाव प्राप्त करता हैं, अल्लाह के रसूल की सुंदरता और भव्यता से बेखबर

है। वहां अंतर यह है कि इन दोनों ने अपनी अंतरात्मा को **"मुहम्मदी दर्पण"** में देखा है।

इसलिए कि पैगंबर हर उस व्यक्ति के लिए, जो उनमें अपनी आंतरिक दुनिया को देखता है, वे एक चमकदार दर्पण की तरह होते हैं। दर्पण किसी के लिए झूठ परिणाम नहीं दिखाता।, न तो वह सुंदर के रूप को बदसूरत दिखाता है ,और न ही बदसूरत के रूप में सुंदर प्रदर्शित करता है । उससे केवल उसी का पता चलता है जो कुछ भी उसके सामने नजर आता है।

अल्लाह, रसूल या क़ुरान के विरुद्ध जो भी ज़बान या कलम से अपशब्द कहेगा, अल्लाह उसे देर या सवेर अवश्य बदला लेगा। क्योंकि अल्लाह ने इनकी रक्षा की ज़िम्मेदारी ले ली है।

यह बात मालूम है कि इस्लाम की बुनियादों पर पक्का यक़ीन रखने वाले नबी की, मुहब्बत से अपने दिलों को आबाद रखने वाले और उनको मजबूती से थामने वाले मुसलमानों को इस्लाम विरोधी ज़हरीले क़लमों से तकलीफ और दर्द पहुंचता है। इन लिखने वालों ने कभी अपना मुआयना और पहचान नहीं की। यह क़लम अंधेरों में रहने वाले सांपों में की तरह हैं। जो समय समय पर बदला लेने निकलते हैं।

यह भी अच्छे से ज्ञात होना चाहिए की यह असंभव है की खुदा द्वारा आदमी को दिए गए सच की ओर झुकाव को नष्ट किया जा सके । हालांकि अधर्मता और नास्तिकता बलप्रयोग के माध्यम से बहुत उन्नत हो सकता है, पर यह धार्मिक भावना के उत्कर्ष को रोकने में क़ामयाब नहीं हो सकता है, विवेक की जड़ें आत्मा के भीतर गहरी हैं। क्योंकि बन्दा अल्लाह से क़रीब होने की अपनी जरूरत को नहीं रोक सकता। और यह भी संभव नहीं कि इंसान की प्रकृति में मौजूद

अच्छी और शुभ भावना में कोई बाधा डाले। अल्लाह के करीब आने की इच्छा अल्लाह का अटल कानून है। उसे कोई बदल नहीं सकता।

मौलाना रूमी स्पष्ट रूप से असावधान लोगों के बारे में दुर्लभ विचार प्रकट करते हैं, जिन्होंने वास्तविकता को नहीं देखा और बिना कारण ही कोशिश करते हैं दिव्य रौशनी को बुझाने की:

"जो उस सूर्य को बदनाम करता है, जो दुनिया को रौशन करता है और उसमें कमी ढूंढता है, वह अँधा है। काश! वह खुद पर ही मलामत करता और तमन्ना करता कि काश, मुझे कुछ नज़र आता।"

"जब अल्लाह तआला किसी को रुसवा और अपमानित करना चाहें और उसके भेदों से पर्दा उठाना चाहें तो उसके दिल में यह इच्छा पैदा कर देते हैं कि वह दूसरों के भेद और खामियां तलाश करे"

आदमी को अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने के तरीके के बारे में और नबी के प्रति की जा रही बुराइयों को भलाई में बदलने के बारे में सोचना चाहिए। सच में, वह दिल दिल नहीं है जिसमें आप के अपनी उम्मत के प्रति अपने जन्म से लेकर अपनी अंतिम साँस तक त्याग और बलिदान को देख कर सराहना की भावनाओं को देखकर उसे मानवता के उद्धार के लिए कपकपी नहीं भरी है।

करुणा और दया के मामले में पैगंबर उम्मतियों के लिए निश्चित रूप से अपने बच्चों के लिए माता पिता की तुलना में बहुत आगे थे। आप खुद फरमाते है:

"मुझे अल्लाह के रास्ते में जितना डराया गया, किसी को नहीं डराया गया। और मुझे अल्लाह के रास्ते में जितनी तकलीफ पहुंचायी गयी, उतनी किसी को नहीं पहुंचायी गयी।

तीस दिन हम पर ऐसे गुज़रे कि खाने के लिए मेरे और बिलाल के लिए इतनी चीज़ भी न थी, जिसे कोई इंसान खा सके। बस इतनी थी, जो बिलाल की बगल में भी रह सकती थी।" (तिर्मिज़ी, क़यामत, 34/2472)

पैगंबर इन हालात और विकट परिस्थितियों से कभी नहीं घबराए। आप एक दयालु और विचारशील नबी हैं, आप ने इस दुनिया में हमें माफी और मोक्ष प्राप्त करने की खातिर कड़ी मेहनत की है, यहां तक कि आप हश्र के दिवस पर सिंहासन से पहले अपने पांव पर गिर कर डबडबाई आँखों से अल्लाह से सिफ़ारिश करेंगे अपने उम्मत के लिये, और जब तक अनुदान नहीं मिल जाता, उठेंगे नहीं।[57]

अल्लाह के नबी के आदर में जिन्होंने हमारी माफ़ी के लिए शिफारिश कि और सर्वोच्च प्रयास किया, यहाँ और मरने के बाद के लिए, क्या हम भी सर्वोच्च प्रयास नहीं कर सकते, उनके सच्चे मानने वाले बनने का जैसा वह चाहते थे, उनको अधिक से अधिक बहुमूल्य समझें और उनके प्रेम में खो जायें?

अल्लाह के रसूल का दिल दुनिया और आख़िरत में हमारे लिए सिफारिश करने हेतु हर समय चिंतित रहता था। तो फिर हम में से हर एक अल्लाह के रसूल की पसंद का मोमिन क्यों नहीं बन जाता?! हम सब के लिए नबी से मुहब्बत और इश्क़ करने वाला दिल और ह्रदय क्यों नहीं हो जाता?! और क्यों अल्लाह के रसूल हमारे नज़दीक हमारी जानों से भी प्यारे नहीं हो जाते?!

57. देखिये: अल- अंबिया, 3 - 9, मुस्लिम, अल ईमान, 327, 328, तिर्मिज़ी, क़यामह, 10

एक प्रेमी प्रिय की पैरवी करता है।

"जो जिसे प्यार करता है उसके साथ रहता है" (बुख़ारी, अदब, 96)

अब हम अपने धन्य पैगंबर को कितना प्यार करते हैं?

बेशक, इस तरह का प्यार प्रियतम और प्रिय के बीच के रूप मे समझना चाहिए| एकजुटता वास्तव में भौतिक विज्ञान के समानता के नियमों के आधार पर है, जो हालातों, परिस्थितियों और व्यक्ति के साथ व्यवहार सब में समानता दर्शाता है। व्यक्ति उसके साथ ही है, जिसे वह मूलतत्व मे प्यार करता है, हर कहे हुए शब्द में एक साथ हो, उतना ही बर्ताव में भी, भावनाओं और विचारों में भी और जीने में तथा अहसास में। सदैव एक साथ हो, वह आख़िरत में भी साथ रहेगा।

इस तरह के समानरूपी प्यार के अभाव में, जहाँ प्रेमी अपने प्रिय से अलग रास्ता अपनाता है, तब वह प्रेमी अपने प्रिय के साथ नही रह सकता है, क्योंकि उसे प्यार के असल मायने महसूस ही नही होते। और वे वास्तव में एक दूसरे से प्यार करते ही नहीं हैं।

उस प्रकार से तब हम अपने इकलौते पैगंबर को कितना प्यार करते हैं? हम कितना उनके सुन्नह का पालन करते हैं? किस हद तक उन्हें अपने बच्चों और परिवेश में कैफियत देते हैं? किस तरह की मन की एकजुटता रखते हैं उनकी दो महानतम विरासतों से, क़ुरान और घर वालों से। हमारे घर अह्ल-उल-बैत के घरों से कितने मिलते जुलते हैं, जो सुन्नह की रूह से भरे हुए थे?

उनका पालन करने के लिए हृदय की शिक्षा आवश्यक है|

इस अशांत संसार मे और पुनर्जीवन में परमानंद पाने के लिए, भयानक हश्र के मैदान में, यह एक अनिवार्य आवश्यकता हो जाती

है कि हम पैगंबर की राह पर चलें, और जीवन के हर क्षेत्र में आपके सिद्धांतों को अपनाएं।

चाहे वह सामाजिक जीवन हो, घरेलू जीवन हो या व्यावसायिक जीवन हो, हमें आप को एक आदर्श मानते हुवे जीवन व्यतीत करना चाहिए। सामाजिक पैमाने के निम्नतम और उच्चतम स्तर पर आप ही एक एकलौता उदाहरण हैं। मानवजाति के लिए आदर्श हैं।

हम उनके जैसे कैसे बनें? सिर्फ़ काग़ज़ में से पढ़ कर? नही| बल्कि अपने हृदय को उनकी शिक्षा में डुबो कर|

ऐसी शिक्षा जिसका उल्लेख खुद अल्लाह तआला अपने क़ुरान में करता है-

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللّٰهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِمَنْ كَانَ

يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيراً

"तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में बेहतरीन नमूना है, जो अल्लाह और आख़िरत के दिन में विश्वास रखे। और अल्लाह को खूब याद करे।" (अल अहज़ाब 21)

इसलिए पहली शर्त है अल्लाह पर भरोसा करना उससे पुनर्मिलन के लिए। हमारी अंतरात्मा में अपने कर्मों का जवाब उस दिव्या उपस्थिति को देने का ख़याल हमेशा रहना चाहिए|

दूसरी शर्त यह है की परवर्ती दिवस पर भरोसा किया जाए, जो भविष्य है| हमें मृत्यु का बोध होना चाहिए और उसके बंधन से मुक्त होने का बोध होना चाहिये। मौलाना रूमी ने बहुत खूबसूरती से इस विचार को व्यक्त किया है:

“संसार का जीवन एक सपना ही तो है। वहाँ धनवान होना सपने के ख़ज़ाने पर नाचने जैसा है। एक पीढ़ी से दूसरी तक जाने वाली संपत्ति आख़िर, संसार में ही रहती है।”

इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि हम इम्तिहान की दुनिया में अवगत रहें और अहंकार की लालसा को दरकिनार कर, अपने हृदयों को शाश्वत्ता के नाविक बनाएँ| हमें ऐसा मेल अर्जित करना चाहिए जो यहाँ के बाद हमारे पुनर्मिलन का क्षेत्र बने।

वह मन की इच्छाओं को त्यागते हुवे और अपने से उनको दूर करते हुवे फरिश्तों की दुनिया में घूमे

और और जब हम इस जैसी स्थिति प्राप्त कर लेंगे तो आख़िरत हमारे लिए मुलाक़ात का अवसर बन जाएगी। ऐसी शिक्षा के लिए यह अनिवार्य है कि हम उस्वत-उल-हसनह (महान पैगंबर के सारमय उदाहरण) का एक हिस्सा प्राप्त करें।

सिर्फ़ तब ही खुदा हुमें उसकी जन्नत का वादा करता है और उसकी सुंदरता से हमारा पूनार्मिलन प्रदान करता है|

जहाँ तक तीसरी शर्त की बात है, वो निरंतर अल्लाह को याद करने की बात है, हृदय को लगातार खुदा के साथ होना चाहिए। कितनी बार?

जवाब इस आयत में है:

"जो लोग खड़े, बेठे और लेटे हुवे अल्लाह को याद करते हैं, तथा आसमानों और ज़मीनों को पैदा करने में गहन विचार करते हैं, (वे कहते हैं) ऐ हमारे रब, तू ने यह बेकार नहीं पैदा किया। तू पाक है। हमें आग के अज़ाब से बचा।" (आले इमरान, 191)

अतः हमें दिव्य निगरानी में होने की एक निरंतर जागरूकता होनी चाहिए। सच है, हमारा खुदा हमारी गले की नस से भी ज़्यादा पास है, पर हम उसके कितने पास हैं? इसी निकटता को गठित करने के लिए हमें मुबारक़ पैगंबर का उदाहरण लेना चाहिए।

अल्लाह के पैगंबर के मूल्य और हम

अल्लाह की तरफ की दूरी तय करने का, मुबारक़ पैगंबर के मूल्यों और प्रतिष्ठा को समझने के अलावा और कोई मार्ग नही है| अल्लाह खुद उस मूल्य पर विशिष्ट उच्चारण रखता है जिससे वह पैगंबर को देखता है:

''अल्लाह और उसके फरिश्ते पैगंबर पर सलाम भेजते हैं। ऐ ईमान वालो, अपनी शुभकामनाएँ उसको भेजो और इज़्ज़त से उसे सलाम करो।'' (अल-अहज़ाब, 56)

खुदा भी मुबारक़ पैगंबर को अपनी शुभकामनाएँ भेजता है जो उसकी रचनाओं में सबसे महान है, और फरिश्ते भी। वो क्या हो सकता है उसके वास्तविक स्वभाव को समझना हमारे हृदय और समझ के लिए नामुमकिन है। कैसे अल्लाह अपने बनाए हुए जीव को अपना आशीर्वाद भेजता है?

इस बात पर कुछ स्पष्टीकरण होने के बाद भी, वास्तविकता में यह एक **''दिव्य पहेली''** है, पर एक बात तो सुनिश्चित है कि खुदा मुबारक़ पैगंबर के लिए असाधारण प्रेम और परवाह रखता है, इस बात से वो हमें अवगत करना चाहता है, निर्देश देते हुए:

''ऐ ईमान वालो! अपनी शुभकामनाएँ उसको भेजो और इज़्ज़त से उसे सलाम करो|'' (अल-अहज़ाब, 56)

लेकिन ये शुभकामनाएं और सलामी मात्र कहने के लिए नहीं होनी चाहिए। बल्कि हमारा सम्पूर्ण अस्तित्व उस पर फलप्रद शुभकामना हो। चाहे कामकाज के क्षेत्र में हो या घर पर, सब सामाजिक बर्ताव में हमारा व्यवहार अनुग्रह के पैगम्बर के लिए एक सलामी के योग्य होना चाहिए|

हमें आत्म आलोचक के तौर पर सोचना चाहिए, उदहारण के लिए, कि मुबारक पैगम्बर हमारे पारिवारिक, व्यापारिक या दूसरे व्यक्तिओं के प्रति हमारे वव्हार को किस हद तक स्वीकृति देंगे उसे देख कर कितना खुश होंगे। या फिर जिस तरीके से कोई अपने बच्चो को पालता है। या किसी के इबादत करने के तरीके से आप कितना आश्वस्त होंगे।

यह सब सवाल यदि हम आज खुद से नहीं करेंगे, और अपना खुद का हम खुद ही विश्लेषण नहीं करेंगे, तो कल क़यामत के दिन हश्र के मैदान में होने वाला हिसाब बहुत सख्त और भयानक होगा।

प्रलय के दिन निःसंदेह हमारे हिसाब का शीर्षक यह होगा:

اِقْرَأْ كِتَابَكَ كَفٰى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيباً

अपने कर्मों की पत्रिका पढ़, आज यह तेरे लिए हिसाब का पर्याप्त सबूत है। (अल-इस्रा: 14)

हमारे कर्म की किताब उसकी सरलता में यह उजागर करेगी कि हम असल में कौन है, जहाँ कोई भी रहस्य छुपा नहीं रहेगा। हम अपने जीवन का चलचित्र देखेंगे, जिसमे हमारे सलत, व्रत और सबकी व्यर्थ वास्तविकता दिखेगी| तब हम देखेंगे कि क्या हम नाम मात्र के लिए सेवक रहे या हम वाकई सफल रहे। अपना ह्रदय और आत्मा अपने कर्त्तव्य में लगाने में? हम देखेंगे की हमने खुदा के अनगिनत

आशीर्वाद को सराहने में जीवन में क्या किया, इसका निरीक्षण करेंगे कि कितनी आत्मा, तर्क, बुद्धि और स्वास्थ्य हम दूसरों में रख पाए और कितनी हमने व्यर्थ जाने दी| हम पहले अनुभव पर यह जानेंगे कि हम अल्लाह और उसके रसूल को कितना प्यार कर पाए और कितना उनके चरित्र में डूबने का कार्य कर पाए।

यह सब हमे निकट भविष्य में हमारे कर्मों की किताब में दिखाया जायेगा, यहाँ से बाद के चित्रपट पर| और तब:

حَتّٰٓى اِذَا مَا جَٓاؤُهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ
وَاَبْصَارُهُمْ وَجُلُودُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ

यहां तक कि जब वे वहां आएंगे तो उनके आंख कान और खाल उनके कर्मों पर गवाही देंगे। (फुस्सिलत, 20)

इसलिए हमे खुद को लगातार जिरह करना चाहिए।

हमारी आँखें क्या देखती हैं?

हमारे कान कितना परमात्मा के बयान और पैगम्बरी सलाह को सुनते हैं?

किस हद तक हम अपने शरीर और अवसरों को यथार्थ के मार्ग पर उपयोग करते हैं?

ज्यादा ज़रूरी है कि हम खुद का आंकलन करें और जहाँ तक अवसर हो हमारी परिस्थितियों को और हालातों को थीक करने हेतु ज़रूरी एहतियात बरतें।

प्रेम का परीक्षण और अदब

मनुष्य इम्तिहान की दुनिया में है। निश्चित तौर पर, दुनिया एक दिव्य परीक्षा का विद्यालय है, जिसके एक महत्वपूर्ण चरण में मुबारक पैगंबर को प्यार करना, मान करना, और उचित आचार कायम रखना या अदब करना शामिल है। इसी प्रकार से विधाता घोषणा करता है:

'ऐ ईमान वालो, अल्लाह और उसके रसूल की पैरवी करो। और अपने कर्मों को व्यर्थ न करो।" (मुहम्मद: 33)

يَآ اَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوا لَا تَرْفَعُوٓا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ
النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوا لَهُ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ
تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُونَ اِنَّ الَّذِينَ يَغُضُّونَ
اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُولِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ الَّذِينَ امْتَحَنَ اللّٰهُ
قُلُوبَهُمْ لِلتَّقْوٰى لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَاَجْرٌ عَظِيمٌ اِنَّ الَّذِينَ
يُنَادُونَكَ مِنْ وَرَآءِ الْحُجُرَاتِ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ

"ऐ ईमान वालो, अपनी आवाज़ अल्लाह के रसूल की आवाज़ से बुलंद मत करो। और न ज़्यादा ऊंची आवाज से उनके सामने बात करो। कहीं ऐसा न हो कि आप के कर्म व्यर्थ हो जाएं और तुमको खबर न हो। जो लोग अल्लाह के रसूल के सामने अपनी आवाज़ धीमी रखते हैं, यह वो लोग हैं, जिनके दिलों को अल्लाह ने आज़मा किया है तक़वे के लिए। इनके लिए माफी और बड़ा सवाब है। आप को कमरों के पीछे से बुलाने वाले अधिकांश नासमझ हैं।" (अल-हुजुरात, 2-4)

यह निष्कर्ष निकलता है की अल्लाह के दूत के लिए हमारी विनम्रता, उसे जानने और उसके सुन्नह का पालन करना हमारे ह्रदय के सील होने की परीक्षा है, और अल्लाह के करीब होने का एक जरिया है।

यह भी निष्कर्ष निकलता है की केवल बुद्धिहीन लोग ही मुबारक पैगम्बर के प्रति असभ्य हो सकते हैं और दूर से उन पर चिल्ला सकते हैं| उनके साथ अशिष्ट और अभद्र व्यवहार कर सकते हैं।

एक और नतीजा हम यह निकाल सकते हैं कि किस तरह अल्लाह के दूत को एक उदाहरण के रूप में देखा जाये और किस तरीके से हम अपने जीवन को उनके जीवन के सामने तौल सकते हैं। कुरान का स्पष्ट आदेश इस सन्दर्भ में यह है:

مَنْ يُطِعِ الرَّسُولَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ
وَمَنْ تَوَلّٰى فَمَا اَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظاً

"जो आप की बात मानेगा, तो उसने अल्लाह की बात मानी। और जो मुंह मोड़ेगा तो अल्लाह ने आप को उन पर रक्षक नहीं बनाया है।" (अन-निसा, 80)

रसूलुल्लाह को चाहने का मापदंड

अब्दुल्लाह इब्ने हिशाम के द्वारा कहा गया एक वाकया दर्शाता है कि किस शिद्दत से हमें महान रसूल को प्रेम करना चाहिए:

"हम एक दफा अल्लाह के दूत के साथ थे। वह उमर का हाथ पकड़ कर बैठे थे। जब अचानक उमर ने अपना प्रेम दर्शाने के लिए

कहा: ओ अल्लाह के दूत, तुम मुझे सबसे ज्यादा प्रिय हो, सिवाय मेरे। अल्लाह के दूत ने जवाब दिया:

नहीं, अल्लाह के मुताबिक़, जिसकी शक्ति और इच्छा का मैं पालन करता हूँ, तुम तब तक विश्वास नहीं कर सकते जब तक मैं तुम्हे खुद से भी प्रिय हो जाऊं| उमर ने तुरंत कहा "तो अब, मुझे आप खुद से भी प्रिय हो|" तब अल्लाह के दूत ने सुनिश्चित किया"

"अब, उमर, ऐसा होना चाहिए|" (बुखारी, इमान, 3)

यही उस प्रेम और सौहार्द का माप है जिससे हमें मुबारक पैगम्बर का अनुसरण करना चाहिए, उसे अपने ह्रदय के सिंहासन पर विराजमान करना चाहिए, उसे अपने जीवन का मार्गदर्शक होने देना चाहिए| उसे प्रेम करना अनिवार्य है|[58]

अल्लाह तआला क़ुरआन में इस ज़रूरत को बयान करता है कि अल्लाह और उसके लिए लोगों के लिए उनकी जानों और मालों से ज़्यादा प्यारे और क़रीब हों:

اَلنَّبِيُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ

"नबी मुसलमानों को खुद उनकी जानों से भी प्यारा है।" (अल-अहज़ाब, 6)

वो हमारे हमसे ज्यादा करीब है और हमे हमसे ज्यादा प्रिय है| इसलिए, मुबारक पैगम्बर को प्रेम करना सच्चे विश्वास की शर्त दर्शायी गयी है:

"अल्लाह के मुताबिक़, जिसकी शक्ति और इच्छा का मैं पालन करता हूं, कोई सच में आस्तिक और ईमान वाला तब तक

58. देखिये: तौबह, 24

नहीं है जब तक मैं उसे उसके माँ, बाप, बच्चे, और हर किसी से ज्यादा प्रिय न हो जाऊं|" (बुखारी, इमान, 8)

इस प्रकार से, सब साथी अल्लाह के दूत की छोटी सी ख्वाहिश भी पूरी करने की दौड़ में रहेंगे, अपना प्रेम हर मौके पर सिद्ध करने के लिए, जब हर कोई कहेगा:

"ओ अल्लाह के दूत, मेरे माँ, बाप, जो भी मेरे पास है वो सब तेरे मार्ग पर कुर्बान|"

इस प्रेम से निरपेक्ष रहना या उसके लिए अभद्र प्रतिक्रिया करना, अज्ञान का प्रतीक है| उसे पकड़ कर रखना, दूसरी ओर, अनंत उपचार सिद्ध होगा|

उसे प्रेम करने की पहचान

कोई किसी को प्रेम करता है तो लगातार उसकी बात करता है, हर मौके पर उसे अपने आस पास सबको बताता है।

एक काम में फसा व्यापारी हर वक़्त अपने व्यापार और सौदे की बात करता है, उसने कितना खोया या पाया, कहाँ पर पैसा कमाया या गवाया जा सकता है, इत्यादि| कुछ लोग अपने बच्चों को बहुत चाहते हैं, हर कहीं और हर बार उनकी बात करते हैं|

परन्तु, प्रतिष्ठित और सच्चे साथी महान विस्मय के साथ हमेशा मुबारक पैगम्बर की बात करते हैं, जिससे उनका बेपनाह लगाव था और जिसके लिए उनको सदैव सताया जाता रहा। इस बात में अकथनीय आनंद लेते हैं।

वहां पैगम्बर के लिए प्रेम है, उसे जानने और अनुकरण करने और यहाँ के बाद उसके साथ होने का उत्साह रिसा हुआ है| अल्लाह हमें भी उसे जानने और प्रेम करने के उत्साह से नवाज़े| आमीन|

प्रेम का अन्य रहस्य, हमारे होने का कारण इस बात में निहित है कि प्रेमी प्रिय के हल अंदरूनी अवस्था को अपना ले| जो भी क्षमता और शक्ति में कमी प्रेमी को किसी परिणाम पर पहुचने से रोकती है, वह प्रिय की योग्यता द्वारा होगी।

रसूलुल्लाह की सही व्याख्या में कठिनाई

एक छोटी सी फ़ौज का निर्देशन करते हुए, खालिद इब्न वलीद एक मुस्लिम कबीले के पास रुके। कबीले के प्रमुख ने उन से कहा:

"हमारे सामने मुहम्मद के व्यक्तित्व का व्याख्यान कीजिये।" तो खालिद ने जवाब दिया:

"यह मेरी शक्ति से परे है कि मैं अल्लाह के दूत की खूबसूरती विस्तृत रूप से बयान कर पाऊं।"

प्रमुख ने खालिद को प्रोत्साहित करते हुए कहा "जितना तुम व्यक्त कर सकते हो उतना कहो, संक्षिप्त और केंद्र-बिन्द तक ही|"

खालिद ने जवाब दिया:

"**जो भी भेजा गया है वह भेजने वाले के अनुसार है**"[59]

क्योंकि भेजने वाला दुनिया का स्वामी है, ब्रह्माण्ड का निर्माता है, तो तुम उसके मान का अनुमान लगा सकते हो, जो भेजा गया है!

59. मनावी, फतहुल क़दीर, 5, 92/6478, कुस्तुलानी, तर्जमतुल मवाहिबिल लदुन्नियह, इस्तांबुल, 1984, 417

अल्लाह हमारे दिल को मुबारक पैगम्बर के प्रति प्रेम रखने वाले साथियों के प्रेम में हमारा श्रेय दे| पैगम्बर के प्रति प्रेम से वह हमारे जीवन में खूबसूरती लाये|

आमीन|

समापन

अल्लाह के दूत की हिमायत के काबिल होने के लिए हमें यह पुनर्विचार करना चाहिए कि हम उसका पालन करने में कहाँ खड़े हैं, और अपने जीवन को पैगम्बर द्वारा निर्धारित किये हुए आदर्शों को मानने में तौलना चाहिए|

एक गहन चिंतन द्रीनता और धीरज अपनाएँ| उसके उम्मह के अनुकूल जीवन व्यतीत करने का उत्साह लायें| उसकी अनोखी भव्यता अपने इबादत, बर्ताव, भावनाओं और विचारों में दर्शाने की कोशिश करनी चाहिए; हमारे वर्त्तमान और भविष्य में, हमारी दुनिया और इसके बाद में| कोई अपने लगाव की सीमा तक अपने प्रिय का अनुकरण करता है| इसलिए, अस्तित्व के प्रकाश का अनुसरण और अनुकरण करने के लिए यह ज़रूरी है कि हम वास्तविकता में उससे परचित हों और उसके निर्देशात्मक चरित्र का आंकलन करने का प्रयत्न करें|

कोई ज़मीन खेती के चाहे कितनी ही योग्य हो, वह तब तक पैदावार नहीं देगी जब तक उस पर बारिश के बादल, सूरज और बसंत की हवा नहीं होगी। ज़मीन के उपजाऊ पट्टी की तरह, ह्रदय को उपजाऊ होने के लिए यह अनिवार्य है कि उसे उसकी बौछार मिले जो मानवजाति के लिए तत्वमय उदाहरण है|

मुबारक पैगम्बर अपने से पहले और बाद में आने वाले, सब से श्रेष्ठ हैं| असीम सदाचार के स्त्रोत, धरती पर सब आशीर्वाद और अनुकम्पा उन्ही के कारण है| उन्ही के ही वजह से पवित्र कुरान, अनंत सत्य से परिपूर्ण, प्रत्यक्ष हुई और वहां से विश्वास के दायरे में आई|

इस सब से अंतिम निष्कर्ष यह निकला जा सकता है कि मुबारक पैगम्बर और उनकी याद दिलाने वाली किसी वस्तु का कितना भी सम्मान काफी नहीं है| अंततः, मुबारक पैगम्बर को अल्लाह का प्रिय होने का दर्जा दिया गया है, जो किसी भी कल्पना और उपलब्धि के परे उत्कृष्ट है| इसलिए, उस महान पैगम्बर के महत्त्व और प्रवीणता के नज़दीक भी आना, जिसे ब्रह्माण्ड-निर्माता अपने आशीर्वाद और सलामी भेजता है, शब्दों की सीमित संभावनाओं से उसे समझना, अकल्पनीय है|

वास्तव में, उसके भव्य स्वभाव को विस्तृत करने के बजाय एक अनंत मौन में जाने के आलावा कोई रास्ता नहीं है| जबकि भाषाएं उसका वर्णन करने में अपनी अपर्याप्तता स्वीकार करती हैं, हमारी जुबां से छलकते शब्द समूचे सागर की एक बूँद की अभिव्यक्ति हो सकते हैं, जो हमारी समझ में आये हैं|

उन आस्तिकों को हर्ष मिले जो अपना ह्रदय अल्लाह के दूत के अलावा किसी को नहीं देते हैं और झूठे बाग़ के नकली फूलों से धोखा नहीं खाते हैं|

चलो उसकी आध्यात्मिकता को हर साँस में अनुग्रहित करके अपने खुदा की ओर मुड़ें!

पैगम्बर के प्रति प्रेम को गवाही रखते हुए, अपने खुदा से निवेदन करें:

मुहम्मद मुस्तफा को , जो दोनों जहाँ का सरदार हैं, सलाम हों

मुहम्मद मुस्तफा को, जो आदमी और जिन्न के पैगम्बर है, सलाम हो।

मुहम्मद मुस्तफा को, जो पवित्र भूमि का रहनुमा हैं, सलाम हो।

मुहम्मद मुस्तफा को, जो हसन और हुसेन का पितामह हैं, सलाम हो।

अल्लाह, उसे पर्यत महिमा, हमें अपने मुबारक पैगम्बर के अनुकरणीय चरित्र का उचित हिस्सा पाने दे, जो हमारा परमानंद का धन्य मार्गदर्शक है और हमारे अब और अब से बाद को उसके सुन्दर आचरण के प्रतिबिम्ब गौरवान्वित करे|

हमें इस बात की तौफ़ीक़ दे कि हम दुनिया और आख़िरत में आप की ही जात से गौरवांवित हों।

अपनी अगाध आध्यात्मिकता से प्रेरणा की बूँदें हमारे ह्रदय पर छलकने दे|

हमारे ह्रदय अल्लाह और उसके दूत के प्रति प्रेम के अनंत आधार हों|

अल्लाह हम सबको अपने दूत की भव्य हिमायत से नवाज़े|

आमीन!

कितने बड़े गौरव की बात होगी कि हम आप की उम्मत हों!

सौंदर्य समग्र रूप में, जहां कहीं हो, आप के व्यक्तित्व की परछाई है। इस संसार में कोई गुलाब खिलेगा, तो उसने अवश्य ही आप के नूर से प्रकाश लिया है!

हम केवल आप के अस्तित्व और पैदा होने के कारण अस्तित्व में हैं।

अतः आप एक ऐसा खिला हुवा गुलाब हैं, जो दिन दिन और अधिक निखर ही रहा है। मुरझाया नहीं है। आप सिर से पर तक नूर ही नूर है।

मुहम्मद की हक़ीक़त के निकट इश्क़ और मुहब्बत के माध्यम से बुद्धि और अक्ल की तुलना में अधिक जाया जा सकता है। यह हार्दिक और समर्पण की प्रक्रिया है। मुहम्मद की सम्पूर्ण हक़ीक़त को पाना ऐसा ही है, जैसे बच्चों का प्रकृति से आगे के सत्यों को पा लेना।

अतः अल्लाह ने अपने पसंदीदा "संपूर्ण मानव" का नमूना आप के रूप में बताया है। आप को एक ऐसा इंसान बनाया, जिसका उदाहरण और मिसाल पूरी इंसानियत में कहीं नहीं मिलती।

क्योंकि वह एक मात्र इंसान जिसका जीवन बेहद बारीकी और विस्तार से इतिहास में सुरक्षित किया गया, आप की शख्सियत है। इस्लामी संस्कृति और साहित्य में लिखी गयी समस्त पुस्तकें एक व्यक्ति और एक पुस्तक की व्याख्या में किये गए प्रयासों का फल है।

निःसंदेह कायनात के अभिमान (आप सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) का जीवन हमें रंग बिरंगी हरियाली और उसकी भांत भांत की खुशबु वाले फूलों की याद दिलाता है। अतः किसी को गुलाब की ज़रूरत हो तो वह इस बगीचे में सब से अच्छे फूल मिल जाएंगे।

रसूलुल्लाह ने फरमाया:

"आकाश और धरती के मध्य कोई वस्तु ऐसी नहीं है, जो यह जानती न हो कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ। सिवाय इंसान और जिन्न के अवज्ञा करने वाले।" (अहमद - 3/310)

ओहद का पहाड़, खजूर का तना आदि ने आप को पहचानते हैं। और आप के प्रति हार्दिक भाव प्रकट करते हैं। जानवरों में आप को अपना ठिकाना बना लिया। और अपने दुख सुख का साथी बनाया।........किंतु अबू जहल और उस जैसे लोग न कल आप को पहचान सके और न आज।

निःसंदेह हमारे नबी की ज़िंदगी और जीवनशैली एक साफ सुथरा आइना है। आदमी उस में अपनी आध्यात्मिक स्थिति, नैतिक गुणों, कर्म, कथन, आचरण आदि को देख सकता है। उसी से उसका वजन और मूल्य तय होगा।

जो लोग खुदा की ओर से आने वाली वह्य (संदेश) और रसूलुल्लाह की जीवनशैली का विरोध कर रहे हैं, तथा जो मुसलमानों पर अत्याचार कर रहे हैं, शीघ्र ही वे ऐसा अज़ाब झेलेंगे, जिसको सहन करना उनके बस से बाहर की चीज़ है। यही खुदा का क़ानून है जिसे बदला या फेरा नहीं जा सकता।

अतः उस दया और कृपा का इकलौता मूलस्रोत जो बन्दे को अल्लाह के रसूल की मुहब्बत के सागर की ओर ले जाता है, वह अल्लाह के रसूल की मुहब्बत है।

क्योंकि मुहब्बत का बीज केवल रादूलुल्लाह की मुहब्बत की मिट्टी में ही फटता और हरा होता है। मुसलमान के दिल और उसकी रूह के लिए यही असल विधाता है। क्योंकि रसूलुल्लाह से मुहब्बत की मिट्टी कितने ही पत्थर और सख्त दिलों को जौहर और हीरे की सफाई और रौनक प्रदान करती है

हमें चाहिए कि हम समूची इंसानियत को आप द्वारा एक ऐसे समय स्थायी कामयाबी और छुटकारे की दावत पहुंचाने हेतु किये गए अनंत प्रयासों को कभी न भूलें, जब पूरी दुनिया अज्ञानता के अंधेरों में हिचकोले खा रही थी। अतः हम अपने रहन सहन और जीवनशैली को आप के तरीके के अनुरूप करें और विचार करें कि हम आज कहां हैं और तब कहां थे।

वे लोग कितने भाग्यशाली और गौरवशाली हैं जिन्होंने रसूलुल्लाह और आप के सहाबा की मुहब्बत में से हिस्सा पाया। जिन्होंने अपने ईमान को इश्क़ से, अपने दिलों को क़ुरान की ज़िंदा संदेश, आत्मिक शक्ति से, अपनी आत्माओं को कार्य और सेवा के सौभाग्य से तथा अपने व्यक्तित्व को नैतिकता और चरित्र के सौंदर्य से सजाया है। जो निरंतर सौभग्य के अंदर अपना जीवन व्यतीत करते हैं।

ऐ अल्लाह, हम को नबी के आशिक़ों और मुहब्बत करने वालों में से बना, जो इस्लाम को इस तरह जीते हैं कि क़ुरान को अपने जीवन का आदर्श बनाते हैं। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उसी के अनुसार चलते हैं।

ऐ अल्लाह, तू अपनी और तेरी रसूल की मुहब्बत सौभाग्य और गौरव के लिए हमारी पूंजी बना दे।

आमीन!

अनुकरम

पहला भाग / 15

द्वितीय भाग / 47

तीसरा भाग / 115

चौथा भाग / 173